अंगरेजीफूलक चिट्ठी



श्रीरामदेवझा

● हय, नैहरक मान-दान तँ चरिदीना होइत छैक । जहाँ बेटी चारियो मास रहल कि सभकेँ बलाय लागऽ लगैत छैक ।

● हय, बड़ सुन्दर तँ बुढ़ियाकाकी एकटा कहबी कहैत छथिन– देखैत-सुनैत महकारी आ तऽरमे बीया कारी, तँ सैह अछि ई पटना । उपरसँ देखैत बड़ दीब, बड़ सोहनगर, मुदा भीतरमे अगबे फूसि-फटक आ छल-प्रपंच भरल.... ।

● हय, एक चुटकी सिनुरक बदलामे जकरा हम अपन सभ किछु दऽ देलिऐक, अपन मानि लेलिऐक, तकरा लेखेँ हम एक गमारसँ बेसी आर किछु नहि छी ।

● हय, सिनेह-प्रेम की कोनो चाउर-दालि आ कि टका-पैसा छैक जे ककरो खोँइछ-खूटमे बलजोरी बान्हि देल जाइक ? सिनेह तँ मोनक भाव थिकैक किने हय ! सिनेहे ने सिनेहकेँ जगबैत छैक ।

● हय, पुरुखकेँ चीन्हब बड़ कठिन काज छैक... मौगी दिन-राति गोँहरि करौक, अपन देह दौक... मुदा तैयो पुरुखकेँ मौगी पर विश्वास नहि ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी

श्रीरामदेवझा

मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा - 846001

ANGAREJEE PHOOLAKA CHITTHEE - BY Ramdeo Jha

प्रकाशक- शंकरदेवझा
मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

संस्करण- 2002 इ.

मूल्य- 150/- (डेढ़ सय टाका)

आवरण- कविता कुमारी

मुद्रक- श्री सिद्धनाथ प्रेस
नया टोला पटना- 800004
दूरभाष : 2686463

सत्यस्यापिहितं मुखम्

अंगरेजीफूलक चिट्ठी मैथिलीमे पहिल बेर पत्रक माध्यमसँ लिखल गेल कथाकृति थिक । एकर साहित्यिक मूल्य की, से तँ आलोचक ओ सहृदय पाठके निर्णय करताह । परन्तु जहिया मिथिला मिहिरमे ई धारावाहिक रूपमे प्रकाशित होइत छल तहिया पाठक, विशेषतः महिला-पाठककेँ अधिक रुचैत छलनि । बादमे सेहो, ई आलोचक ओ इतिहास-लेखक द्वारा चर्चित होइत रहल । **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** हम कोना लिखलहुँ, लिखैत रहलहुँ आ ओहि अन्तरालमे की-की घटना सब घटित भेल, ताहिसँ मैथिली- संसार सर्वथा अपरिचित रहल अछि । अतः **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**– लेखनक पृष्ठभूमि ओ अद्यापि ओकर झाँपल-दाबल अन्तःकथाकेँ प्रकाशमे आनब आवश्यक अछि ।

मैथिलीक सबसँ दीर्घजीवी साप्ताहिक पत्र मिथिला मिहिर लगभग छेयालिस वर्ष चलि 1954इ.मे बन्द भऽ गेल । पुनः 1960इ.सँ नव रूपमे पटनासँ प्रकाशित होबऽ लगल । मिथिला मिहिरक पुनर्जन्मक एकटा इतिहास अछि । 1959क नवम्बर मासमे अजमेरमे आयोजित मैथिल महासभाक अधिवेशनमे महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह प्रवासी मैथिल बन्धुकेँ अपन सनेसक रूपमे मिथिला मिहिरक पुनःप्रकाशनक आश्वासन देलथिन जकर प्रत्यक्षदर्शीमेसँ हमहूँ एकटा व्यक्ति छलहुँ । एहिसँ प्रवासीये मैथिल बन्धु लोकनि उत्साहित नहि भेलाह, अपितु सकल मैथिली लेखकगण ओ मैथिली प्रेमी लोकनिमे एकटा नव उत्साहक संचार भेल । लोक उत्सुकतासँ मिथिला मिहिरक पुनःप्रकाशनक प्रतीक्षा करऽ लागल छल । मिथिला मिहिरक पुनःप्रकाशनक सम्बन्धमे महाराज द्वारा विभिन्न स्तर पर विचार-विमर्शक पश्चात् निश्चय कयल गेल जे मिथिला मिहिर पूर्वहि जकाँ साप्ताहिक परन्तु पूर्णतः मैथिलीमे पटनासँ इंडियननेशन-आर्यावर्तक आनुषंगिक प्रकाशनक रूपमे प्रकाशित कयल जाय । मिथिला मिहिरक समस्त नीति-निर्धारण, निदेशन-संचालनक गुरुत्वपूर्ण उत्तरदायित्व महाराज आर्यावर्तक स्वनामधन्य सम्पादक श्रीकान्तठाकुरविद्यालंकार पर देलथिन । अन्य वातक अतिरिक्त हुनक पहिल काज छलनि मिथिला मिहिरक सम्पादकक पद पर एक गोट सुयोग्य व्यक्तिक नियुक्तिक हेतु चयन ।

दरभंगामे सुमनजी, अमरजी ओ रमेन्द्रनारायणचौधरीक प्रयास भेलनि जे ओहि

समयमे सर्वथा जीविका-विहीन लेखक सुधांशुशेखरचौधरीकेँ कोनहुना एहि पद पर नियुक्ति भऽ जाइन ।

मिथिला मिहिरक बीस वर्ष धरि सम्पादक रहल आचार्यसुरेन्द्रझासुमनक सी. एम्. कालेजमे मैथिलीमे व्याख्याता-पदपर नियुक्तिक पश्चात् 1954मे मिथिला मिहिरक सम्पादकक पदक हेतु विज्ञापन बहरायल छलैक जाहि हेतु श्रीचन्द्रनाथमिश्रअमर आवेदन कयने छलाह । किन्तु मिथिला मिहिरक प्रकाशन बन्द भऽ गेलासँ ओकर फाइलो बन्द भऽ गेल । मिथिला मिहिरक पुनःप्रकाशनक प्रक्रिया आरम्भ भेल तँ ओकर पुरना फाइल फेरसँ फूजल । अमरजीक आवेदन पर विचार आरम्भ भेल । परन्तु अमरजी पहिने राजपण्डितबलदेवमिश्रकेँ तथा पश्चात् सुमनजीक संग प.गिरीन्दमोहनमिश्रकेँ जाय निवदेन कयलथिन जे सम्प्रति हम एम्.एल्.एकेडमीमे जीविकापन्न छी तेँ हमर आवेदन पर विचार नहि कऽ सम्पादकक रूपमे शेखरजीक नियुक्ति भऽ जाइनि । अन्तिम निर्णय श्रीकान्तठाकुरविद्यालंकारकेँ करबाक छलनि । मिहिरक सम्बन्धमे ठाकुरजीकेँ महाराजक बजाहटि भेल छलनि । ठाकुरजी श्रीरमेन्द्रनारायणचौधरीक सम्बन्धेँ बहिनोइ होइतथिन, से ओ दरभंगा अयलाह तँ चौधरीएजीक ओतऽ टिकलथिन । श्रीरमेन्द्रनारायणचौधरी सेहो शेखरजीक आर्थिक विपन्नतासँ चिन्तित रहैत छलाह । ओ ठाकुरजीक सान्निध्य ओ सम्बन्धक उपयोग करैत शेखरजीक नियुक्तिक हेतु हार्दिक आग्रह कयलथिन । ठाकुरजीकेँ सुमनोजी समाने आग्रह कयलथिन । दुनू गोटेक आग्रह प्रभावी सिद्ध भेलनि । 1960क अप्रैल माससँ मिहिरक पुनःप्रकाशन-प्रक्रियामे गति अयलैक । शेखरजी पटना जाय गुप्त रूपेँ अपन मित्र विश्वनाथमिश्रक डेरामे रहऽ लगलाह । विश्वनाथजीक डेरा श्रीकान्तठाकुरक आवासक सटले छलनि ।

ओहि समयमे इंडियननेशन-आर्यावर्तमे पत्रकारिताक दीर्घ अनुभव रखनिहार बाबूलक्ष्मीपतिसिंह, परमानन्दनझाशास्त्री, हीरानन्दशास्त्री, कुलानन्ददासनन्दन, उपेन्द्रठाकुरमोहन इत्यादि अनेको व्यक्ति कार्यरत छलाह जे मिथिला मिहिरक सम्पादक भऽ सकैत छलाह । हिनका सभक तुलनामे शेखरजीक पत्रकारिताक अनुभव अत्यन्त अल्प छलनि । तथापि ओ लोकनि मिथिला मिहिरक सम्पादकक पदक हेतु इच्छुक वा प्रयत्नशील छलाह वा नहि से जानल नहि छल । परन्तु ओहि समयमे पटना- रेडियोक चौपाल प्रोग्राममे मैथिली-कम्पीयरक रूपमे कार्यरत आ पटनाक प्रबुद्ध समाजमे,साहित्य--क्षेत्रमे अत्यन्त लोकप्रिय श्रीमायानन्दमिश्र मिथिला मिहिरक सम्पादकक पदक हेतु अत्यन्त गम्भीर प्रयत्न कऽ रहल छलाह, से तँ नीक जकाँ निकटसँ बूझल छल । दरभंगा-लॉबीक सशक्त समर्थन-सहयोग आ पटनामे नेपथ्यमे चलनिहार अनेक प्रयत्न एवं क्रिया-कलापसँ शेखरजी मिथिला मिहिरक सम्पादक-पदपर नियुक्ति पयबामे सफल भेलाह ।

ओहि समयमे एम्. ए. (मैथिली)क छात्रक रूपमे पटनामे हमर प्रवासक एक वर्ष पूरि रहल छल । हम पटनाक मैथिलक साहित्यिक, सांस्कृतिक ओ सामाजिक परिवेशमे नीक जकाँ चिन्हार भऽ गेल छलहुँ । आर्यावर्तमे प्रकाशित कविता-लेख सभक कारणे हिन्दीयोक क्षेत्रमे हमर नाम चिह्नित भऽ गेल छल । किछु व्यक्तिकेँ हमरा प्रसंग हीन धारणा छनि जे तखन हम पटनामे साहित्य क्षेत्रमे डेगाडेगी देनिहार नव-सिखुआ छात्र-लेखक छलहुँ जे नवके मिथिला मिहिरसँ लेखन-क्षेत्रमे प्रवेश कयलहुँ । ओहि कालावधिमे हमर जे साहित्यिक क्रिया-कलाप ओ मैथिली भाषाक हेतु हमर जे संघर्षशीलता रहल तकर विस्तृत विवरण देब आत्मश्लाघा मानल जायत, तथापि किछु विनम्र सूचना भ्रम-निवारणार्थ दऽ देब आवश्यक प्रतीत होइत अछि । हमर प्रथम दुइ गोट कथा दरभंगासँ प्रकाशित पुरना मिथिला मिहिरक 1953इ.क जुलाइ ओ अगस्त अंकमे प्रकाशित भेल छल जकर सम्पादक छलाह आचार्यसुरेन्द्रझासुमन। नवका मिथिला मिहिरक प्रकाशनारम्भ (सितम्बर, 1960)सँ पूर्व हमर कथा, कविता ओ आलोचना सब **वैदेही, निर्माण** (साप्ताहिक), **मिथिला दर्शन, मिथिला-सेवक,** (साप्ताहिक) **आर्यावर्त** (हिन्दी दैनिक, पटना), **मिथिलादूत, पल्लव, संजीवनी, इजोत, दरभंगा-समाचार** (साप्ताहिक), **विदेह** (सी.एम्.कालेज- मैगजिन) इत्यादि पत्र-पत्रिकामे निरन्तर प्रकाशित होइत रहल छल । **निर्माण** साप्ताहिकमे **सपूत** उपनामसँ हमर एक गोट स्तम्भो कतोक समय धरि चलैत रहल छल । अनेक विशिष्ट कविसम्मेलनमे अपन काव्य-पाठक लेल आमन्त्रित भेल छलहुँ, जेना- अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन (दरभंगा, 1956) अ.भा. मैथिली साहित्य-परिषद्-अधिवेशन (बहेड़ा, 1957, मधुबनी, 1959), मैथिल महासभा अधिवेशन (देवघर, 1958, अजमेर, 1959), मैथिल संघ अधिवेशन (कलकत्ता, 1958), आकाशवाणी पटना (1958सँ निरन्तर)। अ.भा. मैथिली साहित्य परिषद्क संयुक्त मन्त्रीक रूपमे 1957सँ 1959 धरि कार्य करैत रहलहुँ । पश्चात् काल ओकर कार्यकारिणी समितिक सदस्य रहैत रहलहुँ । हाइस्कूलसँ एम्.ए. धरि मैथिली साहित्यक छात्र रहलहुँ । मैथिली आन्दोलनमे निरन्तर संलग्नता ओ विभिन्न स्तर पर मैथिलीक हेतु संघर्षशीलताक कारणे एकटा मैथिली एक्टिविस्टक रूपमे हमर परिचिति स्थापित भऽ गेल छल आ ओहि समयमे मैथिलीक बड़ कम नव वा पुरान लेखक बाँचल होयताह जनिकासँ सम्पर्क-सान्निध्य नहि भेल होअय । अभिनव मिथिला मिहिरक पहिल अंकमे हमर **पिपासा** एकांकी प्रकाशित भेल छल से एकटा स्थापित युवा लेखकक कृतिक रूपमे । ओही रूपमे पटना-प्रवासक उत्तरकालीन एक वर्षक अवधिमे शेखरजीकेँ मिहिरमे सब प्रकारेँ सहयोग करैत रहियनि आ समय-समय पर विभिन्न समस्या पर दुनू गोटे संग-संग विचार-विमर्श कयल करी।

शेखरजी मिथिला मिहिरक सम्पादक तँ भऽ गेलाह किन्तु इंडियननेशन-आर्यावर्तक

पुरान सहकर्मी लोकनिमे हुनका प्रति स्वागतक भावक अभाव छल । हुनका सबसँ जे थोड़-बहुत लेखादिक सहयोग भेटैत छलनि से श्रीकान्तठाकुरविद्यालंकारक आग्रहक रोचेँ । श्रीमायानन्दमिश्रकेँ मिथिला मिहिरक सम्पादकक पद नहि भेटि सकलनि । अत: हुनक असहयोग अत्यन्त मुखर छलनि । हुनकहु प्रभाव-परिधिमे बहुतो नव-पुरान मैथिली-लेखक सब छलथिन जनिक सहयोग मिहिरक हेतु अपेक्षित छल । पटना आ पटनासँ बाहर एकटा और विशेष वर्ग छल जकरा एहि बातक अभिरोष जे श्रीमान् सरकार द्वारा पुन: प्रकाशित मिथिला मिहिरक सम्पादक आन वर्गक भऽ गेल, तेँ असहयोगक रुखि । किछु-किछु आनो प्रकारक एहन- एहन झूठ-साँच बात सब पसरैत रहल जाहि कारणेँ शेखरजीकेँ रचनाक अभाव रहैत छलनि ।

अप्रैल 1960मे जे शेखरजी पटना पहुँचल रहथि तँ हमरा तकैत-तकैत दरभंगा-हाउस पहुँचल रहथि । हुनका सुधाकरबाबूसँ हुनक ऑफिसमे भेट करौलियनि। जखन शेखरजी आफिससँ बहरयलाह तँ हम सुधाकरबाबूकेँ कहलियनि जे पटना कालेज मैथिली साहित्य परिषद्क जे आयोजन भऽ रहल अछि तकर कविसम्मेलनमे हिनकहु आमन्त्रित कऽ देल जैतनि । सुधाकरबाबू सहमति देलनि । तखन जे छात्र सीढ़ीसँ उतरैत काल शेखरजीकेँ पुन: बजा कऽ अनने रहनि, से हमही रही । तकरा बादसँ शेखरजी हमर आवास कंचन-भवन होटलमे आबि हमरा संग कऽ विभिन्न गोटेसँ भेटक हेतु जाथि । जूनमे जखन शेखरजीक विधिवत् नियुक्ति भऽ गेलनि आ ओ कार्य करऽ लगलाह तखनसँ हमरा दुहू गोटेक सम्पर्क ओ विचार-विमर्श बढ़ि गेल । समस्या रहैत छल विविध विषयक रचनाक आपूर्त्तिक । शेखरजीक दरभंगाक शुभचिन्तकगण हुनक समस्यासँ अवगत भऽ गेल छलाह । ओ लोकनि अपना स्तरसँ सहयोग-सामग्रीक चिन्ता रखिते छलाह, संगहि हमरहु तकर परामर्श दैत छलाह । श्रद्धेय सुमनजी, श्रीअमरजी ओ श्रीरमेन्द्रनारायणचौधरीक पत्र हमरा भेटैत रहैत छल जे शेखरजीकेँ सहयोग दियनि आ दियबियनि ।

हम श्रीमायानन्दजीक अत्यन्त निकट रही । मिथिला मिहिरक हेतु हुनक प्रयत्न, विफलता आ शेखर-मिथिला मिहिरक प्रति हुनक विरोधी वा असहयोगी रुखिसँ हम पूर्णत: परिचित रही, परन्तु रचनाक सहयोगक बिन्दु पर हमर मत नहि मिलैत छल । मिथिला मिहिरकेँ अर्थक ओ मुद्रण- उपकरणक अभाव नहि, सौंसे बिहार आ बिहारसँ बाहरो वितरणक सुव्यवस्थित इन्फ्रास्ट्रक्चर विद्यमान, तखन रचनाक अभावमे ओ बन्द भऽ जाय से हमरा स्वीकार्य नहि । अत: हमरा साध्यसँ जे भऽ सकत से सहयोग हम अवश्य करब से हमर संकल्प छल । संगहि मनक कोनो कोनमे इहो भाव छल जे एम.ए. कयलाक बाद मिथिला मिहिरमे कोनहु रूपमे नियोजन भेटि जाय । से तखने सम्भव जँ मिथिला मिहिर चलैत रहय ।

मिथिला मिहिरक प्रसंग हमर उत्साहक आधार छल । मइ 1960क उत्तरार्द्धमे गर्मी-छुट्टीमे एक-डेढ़ सप्ताहक लेल गाम आयल रही । गाम पर शेखरजीक 29.5.60 क लिखल पोस्टकार्ड भेटल जाहिमे लिखने छलाह– **प्रिय रामदेवजी, सस्नेह ! अगिला सप्ताहसँ हम कार्यारम्भ कै देब सब वस्तुक ठेकान लागि गेल अछि। मैटरक कार्य आरभ कै देलहुँ अछि । एहि बीचमे एक महाशय हमरा पाछाँ पड़ल छलाह-हमरा चित्तंग करबाक लेल, मुदा असफल रहलाह । नाम मुखोत्तरे कहब । आब प्रायः दरभंगा अयबाक मौका नहि भेटत । एकटा बात। हमर इच्छा अछि जे सहायक रूपमे अहाँ आबी । सहायकके चुनबाक भार सम्पादकजी हमरहि देलनि अछि -ई कहैत जे जकरा पर अहाँक पूर्ण विश्वास हो एवं तिकड़मबाज नहि हो । स्केल अन्दाजन 125)-150) हेतैक । पत्र पबैत अमरजीसँ भेट करियन्हि आ राय-विचार कै आपसी डाकसँ हमरा लिखी। हम सम्पादकजीकेँ अहाँक सम्बन्धमे संकेत कै देने छियन्हि । यदि कारणवशात् अहाँकेँ स्वयं स्वीकार्य नहि हो त दूनू गोटे विचारि विश्वासी व्यक्तिक नाम दी ।** (मूल पोस्टकार्डक फोटो द्रष्टव्य पृ. 124 पर)

एही चिट्ठीमे ओ मिथिला मिहिरक बन्द होयबाक वर्षक एकहु गोट अंक,विभिन्न लेखकसँ लेखादि सामग्रीक संकलन एवं दरभंगामे अन्यान्य कतोक काज करबाक भार देने छलाह जकरा हम हुनक निर्देशानुसार पूरा कऽ पटना लेने गेलहुँ ।

मिथिला मिहिरमे अपन नोकरीक सम्बन्धमे कहलियनि जे एम्.ए.क पढ़ाइ छोड़ि मिहिरमे नोकरी करब सम्भव नहि अछि । परीक्षोपरान्त मिहिरमे सहायकक पद पर काज करबाक अवसर भेटत तँ से हमरा स्वीकार्य होयत । ओही स्वार्थवश हम अपन दिससँ कोनो आन व्यक्तिक नाम नहि सुझौलियनि ।

मिथिला मिहिरक प्रकाशनारम्भक समयमे हमर पटना प्रवासक एक वर्ष बीति चुकल छल । जखन हम पहिल बेर पटना क्लास करऽ गेल रही तँ श्रद्धेय सुमनजी आर्यावर्तक सम्पादक आदरणीय श्रीकान्तठाकुरसँ भेट करबाक निर्देश दैत हुनका नामे एक गोट पत्र देने छलाह जाहिमे हमर प्रशंसात्मक परिचय दैत कृपाभाव रखबाक आग्रह कयने छलथिन । ओहि पत्रक माध्यमे हमरा ठाकुरजी चिन्हलनि, परिचित भेलहुँ । हुनक सहज स्नेह भेटल । हुनक कृपा ओ आदरणीय श्रीहीरानन्दशास्त्रीक स्नेहभावसँ हमर रचना– कविता ओ लेख सब आर्यावर्तमे छपऽ लागल । हम समय-समय पर ठाकुरजीक दर्शन कहियो कार्यालयमे आ कहियो काल हुनक बोरिंग रोड आवास पर कयल करियनि । से मिहिरक किछु अंक प्रकाशित भेला पर एक दिन विशेष प्रसंगमे हुनक आफिसमे दर्शन करऽ गेल छलहुँ ।

ओ हमरा बैसबाक संकेत दैत मिथिला मिहिरक प्रसंग चर्चा करऽ लगलाह ।

मिथिला मिहिरक सुसंचालनक समग्र उत्तरदायित्व हुनकहि पर छलनि सें हमरा नीक जकाँ बूझल छल । हुनका एहि बातक अभिज्ञान छलनि जे मिथिला मिहिरकें मैथिली लेखक समुदायसँ रचनाक अपेक्षित सहयोग नहि भेंटि रहल छैक । ओ मिथिला मिहिरक भविष्य पर अपन विचार व्यक्त करऽ लगलाह जे-मैथिलीमे तँ एखन किछु कथा आ बेसी कविते रचल जाइत अछि । खाली कवितेसँ तँ मिथिला मिहिर नहि चलत। मिहिरक अठाइस पेजक पेटकें सप्ताहे- सप्ताहे भरब बड़ कठिन काज छैक। विभिन्न विषय पर लेखादि जयबाक चाही, से लीखू आ लोक सबसँ लिखबाउ। मिहिरकें सभक सहयोग चाही । अहाँ सब सहयोग दियौक । मिहिर रचना पर पारिश्रमिक देबाक व्यवस्था कयलक अछि । परन्तु पारिश्रमिकेक बलपर मिहिर नहि चलत । एहि लय, अपन भाषाक उन्नति लय सेवा-भाव चाही, पारिश्रमिकक अपेक्षा नहि । एखन शेखरजीक संग मोहनजी(उपेन्द्रठाकुरमोहन)कें दऽ देल गेलनि अछि किन्तु दुइ व्यक्तिमात्रसँ काज सम्हरऽवला नहि । एकटा और सचढ़ लोक चाही। अहाँ तँ एखन एम्. ए. कऽ रहल छी । ओ पूरा कऽ लियऽ, तखन विचार हेतैक । एखन मुदा पूरा सहयोग दियौक ।'

शेखरजीकें तँ पूर्वहिसँ सहयोग करितहि छलियनि, ठाकुरजीक परामर्शक पश्चात् उत्साह और बढ़ि गेल । मिथिला मिहिरक रूप-रेखाक निर्धारण-प्रक्रिया (मइ, 1960)सँ लऽ कऽ प्रकाशनक वर्षपूर्त्ति (अगस्त, 1961) धरि हम पटनामे रहलहुँ । एहि अवधिमे अपन भविष्यकें ध्यानमे राखि एकटा अवैतनिक सहायक जकाँ एकाग्रता आ निष्ठापूर्वक मिथिला मिहिरक निमित्त कार्य करैत रहलहुँ । उत्साहक अतिरेक छल । लिखैत रहबामे आसकति नहि होअय । अन्यान्य नव-पुरान लेखकसँ रचना-संकलनक अतिरिक्त स्वयं अनामक ओ गुमनाम-यथापेक्ष सामग्री तैयार कऽ कऽ मिथिला मिहिरकें देल करिऐक जे ओकरा सामग्रीक अभाव नहि होइक । ओहिमे बेगर्तित भेला पर प्रायशः मिथिला-मैथिली क्षेत्रक समाचार संकलन, सामयिक प्रसंगक समीक्षा, संसद-विधानमंडलक सार-संक्षेप सेहो यदा-कदा लिखल करी ।

मिथिला मिहिरक प्रथम वर्षमे शेखरजीक कहलापर मुनेश्वरमंडल, ज्ञानदेवपथिक, गेनालालयादव, इत्यादि छद्मनामसँ प्रकाशित कतोक लोकसाहित्य-सम्बन्धी निबन्धक प्रारूप एवं पुरान पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित विभिन्न विषयक कतेको सूचनाप्रद लेख सभक मैथिली अनुवादक प्रारूप हुनका देलियनि जकरा सांझ-साझ कऽ ओ मिहिरमे उपयोग कयलनि । शेखरजी अपन अप्रकाशित हिन्दी उपन्यास **दो पाटन के बीच**क मैथिली रूपान्तर कऽ मिहिरमे धारावाहिक रूपमे प्रकाशित कराबऽ चाहैत छलाह । ओ कय बेर एकर चर्चा कयलनि-हमरा फुरसतियें नहि भेंटैत अछि जे अपनेसँ एकर मैथिली करब ।' एक दिन चर्चामे कहलनि- अहाँ थोड़े सहयोग कर दीजिये तँ आगाँ हम सम्हारि लेंगे ।' हुनका कहलापर हम ओकर आरम्भिक अंशक मैथिली अनुवादक

प्रारूप तैयार कऽकऽ देलियनि जकरा ओ अपना रीतिसँ संशोधित कऽ 29 मइ, 1961सँ मिहिरमे शेफालिकादेवीक नामे धारावाहिक प्रकाशित कराबऽ लगलाह ।

मिथिला मिहिरक नीति निर्धारित भेल जे एहिमे विविध कोटिक रोचक रचना-सामग्री देबाक संगहि इहो प्रयत्न कयल जाय जे ई महिला वर्गमे विशेष लोकप्रिय भऽ सकय । एहि दृष्टिएँ एकटा विशेष स्तम्भ राखल गेल **स्त्रीगण-समाज**। परन्तु आरम्भमे एहि स्तम्भमे-**नेनाकेँ कोरामे कोना ली/ भनसीया केहन हो/ भानस हेतु आसन-बासन** इत्यादि सन विषय पर लेखादि रहैत छल जे रोचक किएक होइत ? महिला लेखिकाक तँ सर्वथा अभावे छल । महिला द्वारा महिला वर्गक हेतु लिखित सामग्री जुटायब कठिने नहि, असम्भव छल । पुरुषे लेखककेँ स्त्री-लेखनक भार-वहन करबाक विवशता वा अनिवार्यता भऽ गेल छलनि । एहि बिन्दु पर शेखरजी ओ हमरा मध्य खूब तर्क-वितर्क एवं विचार-मंथन भेल जे **स्त्रीगण-समाजसँ** फराके एकटा कल्पित स्त्रीक द्वारा लिखित पत्रक नियमित रोचक स्तम्भ चलाओल जाय । असली लेखकक नाम गुमनामे रहय जाहिसँ पाठक वर्गमे विश्वास उत्पन्न होइक जे स्तम्भ-लेखन महिले द्वारा होइछ । फेर संशोधन भेल जे एके स्त्रीक पत्र लिखने एकरसता आबि सकैछ तेँ दुइ गोट स्त्रीगणसँ पारस्परिक पत्राचार कराओल जाय ।

एहि दुनूक नाम की राखल जाय, ताहू पर विचार भेल । पत्र-लेखिका दुनू सखी रहत आ सामान्य शिक्षिता रहत । ओहि समयमे हम बंगलाक प्रसिद्ध कवि **काजीनजरूलइसलाम**क साहित्य-समालोचन पढ़ने छलहुँ जाहिमे **बांधनहारा** उपन्यासक विवरण देल गेल छल । ओहिमे नायक नूरुलसँ प्रेम कयनिहारि दुइ गोट किशोरी सोफिया एवं महबूबा सखी रूपमे परस्पर पत्राचार करैत अछि । सोफिया महबूबाकेँ पत्र लिखैत छैक तँ ओकरा **कलमीलता** (करमीक लत्ती) कहि कऽ सम्बोधन करैत छैक आ पत्रक अन्तमे अपना लेल **सोजेनफूल** (सोहिजनफूल)क प्रयोग करैत अछि। अपनहुँ ओहि ठामक स्त्रीगण समाजमे दूटा किशोरी अपनामे बहिनपा जोड़ैत अछि तँ ओहि सम्बन्धकेँ एकटा नाम दैत अछि-पान, सुपारी, लओङ, गुलाब इत्यादि आ एहि नामसँ एक-दोसराकेँ आजीवन सम्बोधनो करैत अछि । मन पड़ल, अपन देहातमे नव फैशन दिस प्रवृत्ति रखनिहारि दूटा किशोरीकेँ परस्पर **अंगरेजी** कहैत सुनने रहिऐक । हम शेखरजीकेँ कहलियनि-दुनू सखीक पारस्परिक सम्बोधनमे **अंगरेजीफूल** केहन लागत ?' हुनको ई नाम नीक लगलनि ।

अन्ततः निश्चय भेल जे शेखरजी आ हम दुनू गोटे एक-एक गोट सखीक पत्र लिखी । एक सखी पटनामे रहैत अछि जकर पत्र लिखबाक भार शेखरजी लेलनि । दोसर सखी गाममे रहैत अछि, तकर पत्र लिखबाक भार हम लेलहुँ । शेखरजी पहिने गामवाली सखीक पत्र हमरा लिखऽ कहलनि । हम गामक सखीक पत्र लीखि कऽ

देलयनि तँ ओ पत्र पढ़ि कऽ कहलनि जे एकर पटनासँ उत्तरो लिखू जे कथानकक विकासक एकटा रूप-रेखा बनि जयतैक, तखन आगाँ हम लीखि देल करब । हम पटनाक सखीक उत्तरक संग पुन: गामक सखीक प्रत्युत्तर अर्थात् तेसर पत्र सेहो लीखि कऽ देलियनि । 30 अक्टूबर, 1960क विद्यापति विशेषांकसँ **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** स्तम्भ छपब आरम्भ भेल । पाठक ओहिमे रुचि लेबऽ लागल । पटनाक सखी दिससँ चारिम पत्र शेखरजीकेँ लिखबाक छलनि परन्तु अगिला उत्तर लिखबासँ शेखरजी एकदम मूड़ी छीपि लेलनि । कहलनि-हमको बहुत लिखना पड़ता है ! आपे दुन्नू तरफ का चिट्ठी लिखिये । मौगियाही बात सब नीक लिखते हैं ।'

महिलाक मनोवृत्ति ओ भाषाकेँ ठीक- ठीक व्यक्त करब कठिन काज छल। स्त्रैण भाषा ओ ओकर अर्थव्यंजनाक निरन्तर निर्वाहमे सतत सतर्क रहब आवश्यक छल । किन्तु तीन गोट पत्र लिखलासँ एकटा आत्मविश्वास बनि गेल छल, कथानकक एकटा सिरखार सेहो बनऽ लागल छल । हम **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** स्तम्भ लिखऽ लगलहुँ । एहि स्तम्भक हेतु पैंतालिस गोट चिट्ठी लिखलहुँ जाहिमे एकतालिस गोट चिट्ठी प्रकाशित भेल । शेष चारि गोट चिट्ठी सम्पादकक फाइलमे बन्द रहि गेल ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी खूब लोकप्रिय भेल । पाठक एकरा वास्तविक पत्राचार बूझि लेखिका द्वयक सम्बन्धमे भाँति-भाँतिक अनुमान लगबैत रहल । हम आ शेखरजी अपन-अपन मुँह बन्द कयने रहलहुँ । परन्तु किछु गोटेकेँ अवश्ये बूझल भऽ गेल छलनि जे **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** रामदेवझा लिखैत छथि । ओहिमे उपेन्द्रठाकुर मोहन मिहिरक सहायक सम्पादक छलाह, तेँ ओ सब किछु जनैत छलाह । एकर अतिरिक्त पटनामे श्रीमायानन्दमिश्र, हमर सहपाठी ओ मित्र श्रीअमरनाथचौधरी, श्रीरूपनारायणचौधरी ओ श्रीभाग्यनारायणझाकेँ ई बात जानल भऽ गेल छलनि । दरभंगामे श्रद्धेय सुमनजी, पंडितजी (श्रीचन्द्रनाथमिश्रअमर), शैलेन्द्रबाबू, रमानाथमिश्रमिहिर एवं हमर परिवारक सदस्यकेँ ज्ञात छलनि जे **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** स्तम्भ हम लिखैत छी ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठीक लेखन हेतु पारिश्रमिकक सम्बन्धमे शेखरजीसँ जखन कखनो गप्प भेल तँ यैह कहैत रहलाह जे एहि हेतु कोनो पारिश्रमिक नहि भेटत। नामसँ जे रचना छपैत छैक ताहीपर पारिश्रमिक देल जाइत छैक, से तँ छपिते रहैत अछि । हमरा श्रद्धेय श्रीकान्तठाकुरजीक कथन स्मरण छल तेँ पारिश्रमिकक हेतु बेसी जोर नहि देलियनि । परन्तु **अंगेरजीफूलक चिट्ठी** स्तम्भक हमरा द्वारा लेखनक विषयसँ अभिज्ञ एवं शेखरजी ओ हमर समान रूपसँ हितचिन्तकजनकेँ ई बात न्यायसंगत नहि बूझि पड़ैत छलनि ।

1961कें मइ मासक तेसर सप्ताहमे एम्.ए. परीक्षाक फीस-फार्म जमा करबाक व्यस्तता रहल । 20 मइ, शनि दिन ओहि सबसँ निश्चिंत भेल रही । साधारणत: शनि दिन कऽ इंडियननेशन-आर्यावर्त-रेडियोस्टेशन दिस गेल करैत रही । किन्तु ओहि दिन मन थाकल छल, तँ नहि जा सकलहुँ । सन्ध्याकाल हमरा ओतऽ (मंडल लॉज, भिखना पहाड़ी, पटना) उपेन्द्रठाकुरमोहनक संग शेखरजी पहुँचलाह । परीक्षा-फार्म भरबाक सम्बन्धमे पूछा-आछी कयलाक बाद पुछलनि जे- अंगरेजीफूलक चिट्ठी दऽ ककरो कहने छलिऐक ? मैनेजमेंटमे ककरो कोनो सिफारिस कयने छलिऐक ?' हमर नकारात्मक उत्तर सूनि कऽ शेखरजी बजलाह- सैह तँ, हमरा विश्वास छल जे अहाँ ई सब नहि कयने होयब । केओ अछि जे मिसअंडरस्टैंडिंग आनऽ चाहैत अछि ।'

केओ शब्दक आशय छलनि **मायानन्दजी** दिस, किन्तु से नाम नहि बजैत कहलनि-**काल्हि तीन बजेमे ठाकुरजी(श्रीकान्तठाकुर) बजा कऽ पुछलनि जे रामदेवसँ कोनो चीज लिखबैत छियनि ? हम कहलियनि 'नहि', तँ पुछलनि जे अंगरेजीफूलक चिट्ठी के सुरू कयलक ? ताहि पर कहलियनि जे 'हम' । ठाकुरजी पुछलनि जे रामदेव नहि लिखैत छथि ? तँ हम सोचल जे सम्भव छैक ठाकुरजीकेँ कोनो सोर्ससँ पता लागल होनि, से नकारब ठीक नहि, से उत्तर देलियनि- हँ किछु चिट्ठी ओहो लिखलनि ।' ठाकुरजी पुछलनि- कते ? हम कहलियनि- हमरा ठेकान नहि अछि ।' ठाकुरजी कहलनि- जँ ओ पाइक माङ करथि तखन?' हम कहलियनि-हुनका बूझल छनि जे एहि स्तम्भमे पाइ नहि भेटैत छैक ।'**

श्रीकान्तठाकुरसँ भेल वार्त्तालापक विवरण देलाक बाद शेखरजी कहलनि-एहि सब बातक प्रभाव भविष्यमे हमर नोकरीयो पर पड़ि जायत । जँ अहाँ मांग करबैक तँ तकर फल होयत डिश्चार्ज । अहाँ एकटा पत्र लीखि दियऽ जे शेखरजी ! हमरा बूझल अछि जे अंगरेजीफूलक चिट्ठी पर पाइ नहि भेटैत छैक । हम अहाँक सहायतार्थ ओ लीखि देल तेँ कोनो विवादक सबाल नहि ।'

हम ओहि प्रकारक किछु लीखि कऽ देबाक बात तत्काल टारि देलियनि । ओ हमरा ओहि ठामसँ चलऽ लगलाह तँ बजलाह जे-दू-तीन सप्ताहसँ हम कहि रहल छिऐक जे हमरा बुतेँ काज नहि सम्हरैत अछि । अत: जँ एहि मासमे पाइ बचल होयत तँ तीन सप्ताहक अंगरेजीफूल अहाँक नामपर चढ़ा तीस टाकाक गऽर धरा देब । दुनू बात होयत, अहूँकेँ बेर पर भेटि जायत, ठाकुरजी लग जे स्वीकार कयल तकरो मार्जन भऽ जेतैक ।' चलैत-चलैत ओ पचास टाका राखि गेलाह । पहिने ओहिना दैत रहथि जे 'ई राखि लियऽ' । हम अस्वीकार कऽ देलियनि तँ' पैंच दैत छी' से कहि कऽ राखि गेलाह । (हम शेखरजीक देल ओ पचास टाका 24 जून, 1961केँ आर्यावर्त-कार्यालयेमे आपस कऽ देलियनि) ।

शेखरजी आ मोहनजीक गेलाक बाद मोन अशान्त भऽ उठल । शेखरजीक प्रति अत्यन्त आक्रोश ओ जुगुप्सा उत्पन्न भऽ गेल जे गोपनीयताक नाम पर मैनेजमेंट आ ठाकुरजीसँ अंगरेजीफूलक चिट्ठीक लेखकक रूपमे हमर नाम शेखरजी एतेक दिन धरि किएक नुकौने रहलाह ? किएक ने सूचित कयलथिन ? ठाकुरजी लग झूठ किएक बजलाह जे ओ चिट्ठी वैह लिखैत छथि ? फेर ई किएक गछलथिन जे थोड़ेक रामदेवो लिखलनि ? किएक एतेक दिन धरि कहैत रहलाह जे एहि स्तम्भ पर पाइ नहि भेटैत छैक आ आइ आब कोना तीन सप्ताहक पारिश्रमिक देब सकारलनि ? तिनियें सप्ताहक किएक देताह, पछिला सब अंकक किएक ने देताह ? अंगरेजीफूलक चिट्ठी पर पाइ नहि भेटबाक बात हमरा बूझल अछि– से पत्र मैनेजमेंटकेँ किएक ने दिऐक जे हिनका दियनि ? बिन माङल पचास टाका किएक देलनि ? अकारण अयाचित पचास टाका दऽ कऽ हमर स्वाभिमानकेँ आहत किएक कयलनि ? चुप रहबाक घूस थिक की ? यैह प्रश्न सब मोनमे उमड़ैत–घुमड़ैत रहल। आक्रोश, अशान्ति, व्यग्रताक कारण रातुक स्टडी बाधित भऽ गेल । सूति रहितहुँ, से निन्नो नहि भेल । दोसर दिन सबेरे आर्यावर्तक कर्मचारी श्रीइन्द्रकान्तझा आबि समाद कहलनि जे काल्हि (सोमदिन)सम्पादकजी (श्रीकान्तठाकुर)सँ भेट कऽ लेबनि ।

22 मइ 1961, सोमदिन बेरुक पहर आर्यावर्त गेलहुँ । शेखरजी हमरा देखलनि परन्तु हम आन दिन जकाँ हुनका लग नहि बैसि सोझे ठाकुरजीक आफिसमे जा कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ । ओ किछु पढ़ैत छलाह । हमरा बैसबाक संकेत दैत आ कागत एक कात रखैत हमरा पूछि देलनि–अंगरेजीफूलक चिट्ठी के लिखैत अछि ?' हमरा माथमे शेखरजीक डिश्चार्ज होबऽवला बात घूमि गेल । हम सहमल जकाँ सोझे 'जी !' कहि कऽ चुप रहि गेलहुँ । ओ गम्भीर होइत बजलाह–बात गम्भीर छैक । एहि सम्बधमे हमरा जे बुझबाक छल से बूझि लेने छी परन्तु हम अहाँक मुँहसँ सूनऽ चाहैत छी ।' हम, अंगरेजीफूलक चिट्ठीक कोना योजना बनल, कोना आरम्भ भेल आ कोना निरन्तर लिखैत रहलहुँ–से वृत्तान्त सुना देलियनि । किन्तु शनि दिन शेखरजीक संग जे वार्त्तालाप भेल,से नहि कहलियनि । सम्भव छल जे ओ सब कहलापर बात आरो बिगड़ि जैतनि । ओ फेर पुछलनि– पारिश्रमिक ?' हम कहलियनि– शेखरजी हमरा कहलनि जे एहि स्तम्भ पर पारिश्रमिक देबाक नियम नहि छैक ।' ठाकुरजी रोषक स्वरमे बजलाह– मिथिला मिहिर जे कोनो लेखकक गद्य–रचना छपैत अछि ताहि सब पर पारिश्रमिक दैत छैक । अप्रैल मास धरिक पारिश्रमिक देब आब सम्भव नहि अछि किन्तु मइ माससँ अंगरेजीफूलक चिट्ठीक पारिश्रमिक भेटत । ई स्तम्भ पाठक रुचिसँ पढ़ैत अछि तेँ चलैत रहक चाही ।'

ठाकुरजीक आफिससँ बहरयलहुँ तँ आर्यावर्तक सम्पादन विभागमे कार्यरत एकटा वरिष्ठ पत्रकार, जनिका हमरासँ विशेष अपेक्षा भाव रहैत छलनि से हमरा रोकि

कऽ नेपथ्यमे घटित घटनाक सारांश कहलनि जे– सम्पादकजी (ठाकुरजी)कें डाकसँ कोनो विशिष्ट व्यक्तिक पत्र भेटल छलनि जाहिमे लिखल गेल छलनि जे **रामदेवझा अंगरेजीफूलक चिट्ठी रूपमे मिहिरक मौन सेवा करैत आबि रहल छथि। हुनका पारिश्रमिक रूपमे पुरस्कार भेटबाक चाहियनि।** सम्पादकजी पत्रकें गम्भीरतासँ लैत मिहिरक कम्पोजिंग सेक्सनक प्रभारीकें बजाय अंगरेजीफूलक चिट्ठीक विषयमे पूछ–ताछ कऽ ओकर ओरिजिनल प्रेसकापी सब आनि कऽ देबऽ कहलथिन। प्रभारीकें जतेक ओरिजिनल प्रेसकापी सब तत्काल भेटि सकलैक से आनि कऽ देलकनि। तखन ओ शेखरजीकें बजबाय पुछलथिन जे-अंगरेजीफूलक चिट्ठी के लिखैत अछि! शेखरजी कहलथिन– हम। सम्पादकजी तखन अंगरेजीफूलक चिट्ठीक ओरिजिनल प्रेस कापी सब हुनका सोझाँमे राखि पुछलथिन-ई अक्षर अहाँक थीक की रामदेवक? कम्पोजिंग सेक्सनसँ ज्ञात भेल अछि जे आरम्भेसँ एही हैंडराइटिंगमे अंगरेजीफूलक चिट्ठी अबैत रहल अछि।' शेखरजी से सूनि गुम्म रहिं गेलाह। तामससँ सम्पादकजी कहलथिन जे जँ रामदेव पूर्व प्रकाशित चिट्ठी सभक पारिश्रमिक माङथि तँ अहाँ डिश्चार्जो भऽ सकैत छी।'

ठाकुरजीक आफिससँ हमर बहरयबासँ पहिनहि शेखरजी कार्यालयसँ जा चुकल छलाह। दुमहला परसँ नीचाँ उतरलहुँ तँ देखल,शेखरजी इंडियननेशनक गेट पर ठाढ़ छलाह, जेना हमरहि प्रतीक्षा करैत होथि। हमरा पुछलनि-कोमहर जायब?' हमर 'रेडियो स्टेशन' कहला पर कहलनि-डाकबंगला चौराहा धरि तँ संग- संग चलिये सकैत छी।' परन्तु रेडियो स्टेशनक गेट धरि अरियातने अयलाह। बाटमे पुछलनि- सम्पादजीसँ की सब गप्प भेल?' ठाकुरजीसँ जे गप्प भेल छल से हम आद्यन्त सुना देलयिनि। ओ फेर पुछलनि-आरो कोनो गप्प कहलियनि?

हम उत्तर देलियनि जे आन गप्पक कोनो प्रसंग नहि छल तँ किएक आन किछु कहितियनि?' शेखरजीकें आशंका छलनि जे हम ठाकुरजीकें छद्मनामसँ प्रकाशित लेख वा **तऽर पट्टा उप्पर पट्टा**क हमरा द्वारा देल मैथिली अनुवादक प्रारूप आ छद्मनामे प्रकाशनक योजनाक सम्बन्धमे ने कहि देने होइयनि। कारण ओ भेद फुजलापर हुनक नोकरी संकटापन्न भऽ जैतनि। शेखरजी कहलनि- ई बात सब अपने धरि राखब। सुमनजीकें तँ नहिएँ, अमरोजीकें नहि कहबनि।' शेखरजीक ओहि आग्रहक निर्वाह हम करैत रहलहुँ। शेखरोजी जावत नोकरीमे रहलाह तावत किछु नहि बजलाह।

उपर्युक्त घटनासँ जे रोष उत्पन्न भेल छल से क्रमशः कम भऽ गेल आ हमरा दुहू गोटेक सम्बन्ध पूर्वहि जकाँ सामान्य बनल रहल आ हुनका आग्रहें पश्चातो क्रमशः **बहिनाक विरोग** आ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** स्तम्भ लिखैत रहलहुँ।

1961क अगस्तक अन्तमे एम्.ए.क रिजल्ट निकलल आ नवम्बरमे एस.पी.

कालेजमे मैथिली-व्याख्याता-पदपर हमर नियुक्ति भऽ गेल । 1963मे पटना विश्वविद्यालय एवं बिहार विश्वविद्यालयमे मैथिली-व्याख्याता-पद हेतु बिहार पब्लिक सर्विस कमीशनसँ विज्ञापन बहरयलैक । हम बिहार पब्लिक सर्विस कमीशनमे आवेदन कयने छलहुँ । ओहिमे अपन प्रकाशित रचनाक सूची देबाक छल । रचना सबमे तीन गोट स्तम्भ **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**, **बहिनाक विरोग** ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** बेनामी छपल छल । अत: ओकर प्रमाण आवश्यक छल । से की तँ मिथिला मिहिरक मैनेजमेंट दऽ सकैत छल अथवा ओकर सम्पादक । हम 30 जुलाइ 1963कें पटनामे श्रीकान्तठाकुरविद्यालंकारकें जा कऽ अपन प्रयोजन बुझबैत पुछलियनि जे एहि हेतु ककरा नामे आवेदन दियऽ पड़त ? हुनका **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** विस्मृत नहि भेल छलनि । ओ कहलनि जे एहि लय आवेदन देबाक प्रयोजन नहि । मिथिला मिहिरक सम्पादक एकटा टेस्टीमोनियल दऽ देताह जाहिमे ई तीनू स्तम्भ अहाँक द्वारा मिथिला मिहिरमे नियमित रूपें लीखल जाइत रहल, तकर उल्लेख कऽ देताह । हम कहि दैत छियनि ।'

ठाकुरजी शेखरजीकें ई बात कहलथिन । शेखरजी हुनकहि आफिसमे बैसि गेलाह । मिथिला मिहिरक पैड मङबौलनि । टेस्टीमोनियल लिखलनि आ ठाकुरजीक हाथमे दऽ देलथिन । ठाकुरजी ओकरा पढ़ि हमरा हाथमे दऽ देलनि-भऽ गेल ने !'

टेस्टीमोनियल द्रष्टव्य अछि- (मूल हस्तलेखक फोटो पृ० 26 पर)

श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी मजहरुलहक पथ, पटना-1
सम्पादक, मिथिला मिहिर तिथि 30.7.1963

प्रोफेसर श्रीरामदेवझाकें हम हुनक छात्र-जीवनसँ नीक जकाँ जनैत छियनि । ओ ज्ञान-पिपासु रहबाक कारणें आरम्भेसँ अपन प्रतिभाकें मँजैत-चमकबैत अयलाह अछि । मातृभाषा मैथिलीक प्रति हुनक सहज स्नेह हुनक कार्य-क्षेत्रकें विशाल बना देने छनि । निबन्ध, नाटक, कविता ओ कथाक क्षेत्रमे तँ हुनक प्रतिभा नीक जकाँ प्रतिभासित भेले अछि, संगहि अनुसंधानक क्षेत्रमे सेहो हुनक दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म रहलनि अछि । वस्तुत: एतेक अल्प वयसमे अपन प्रतिभा ओ अध्यवसायक बलें मैथिली-जगतक विद्वत्-समाजमे ओ अपन नीक स्थान बना लेने छथि ।

मिथिला मिहिरक तँ ओ लेखक रहबे कयलाह अछि, विशेषतया हुनक लिखल मिथिला मिहिरक स्थायी स्तम्भ 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी', 'बहिनाक विरोग' ओ 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' आदि समाजमे विशेष आदर पौलकनि अछि ।

हमर दृढ़ धारणा अछि, हिनक सदृश दृढ़ चरित्र, बहुमुख प्रतिभा सम्पन्न ओ अध्यवसायी व्यक्तित्व बड़ विरल देखल जाइत अछि । हम विश्वासक संग कहि सकैत छी, ई जाहि संस्थामे जयताह, रहताह से अवश्यमेव चमकि उठत। हम हिनक सुन्दर भविष्यक आकांक्षी छी ।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी
30.7.63

पटना-प्रवाससँ गाम अयलाक पश्चात् विभिन्न प्रयोजनसँ पटनाक यातायात होइत रहैत छल तँ शेखरजीसँ भेंट आ मैथिली साहित्य ओ भाषा-आन्दोलन विषयक वैचारिक आदान-प्रदान होइत छल । 1961क नवम्बरसँ हम दुमकामे रहऽ लगलहुँ । दिसम्बर 1962मे सी.एम. कालेज ज्वाइन कयलहुँ । मइ 1963मे पुन: एस्.पी. कालेजक अपन पद पर चल गेलहुँ । अन्तत: बिहार लोकसेवा आयोगक अनुसंशाक आधार पर दिसम्बर 1963मे सी.एम्.कालेजमे स्थायी रूपेँ आबि गेलहुँ । एहि अवधिमे शेखरजीक संग निरन्तर पत्राचार चलैत रहल । दुमकामे रही तँ एस्.पी. कालेजक पतासँ आ सी.एम्. कालेजमे रही तँ गामक पतासँ पत्र लिखैत रहलाह । ओहि पत्र सबमेसँ किछु पत्र देल जा रहल अछि जाहिमे ठाम-ठाम **बहिनाक विरोग** ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** स्तम्भक सेहो प्रसंग आयल अछि–

प्रिय रामदेवजी, सस्नेह ! 30.1.62

सामग्रीक संग पत्र पहुँचि गेल छल । पुन: कोशी-योजनाक संग दोसरो खेप। भविष्यमे द्वितीय रचना जयबे करतैक । विलंबसँ लिखि रहल छी तकर कारण मानसिक चंचलता ओ शारीरिक अस्वस्थता । **विरोग** छपि रहल अछि । देखिते होयब। अहाँक पता, अहाँक आवेदन अयबासँ पूर्व रजिस्टरमे हम अपने हाथेँ बदलि चढ़ा आयल छलिऐक तेँ एकर प्रयोजन नहि । अतिरिक्त अंकक हेतु हमर विवशता अछि तेँ अन्यथा नहि मानब । 10फरवरीकेँ आबि रहल छी ने ? तखन हमर पद्यक टुकड़ी लऽ लेब । कोनो क्षति नहि ने ? **विरोग** छोट जा रहल अछि । कमसँ कम एक पन्ना भरि जयबाक चाही, संगहि क्रम नहि टुटैक तेँ शीघ्र आगाँक हेतु पठाबी। अमरजीक किछु बूझि नहि रहल छियनि । चिट्ठीक जबाबो नहि अबैत अछि ।

मोन किएक नहि लगैत अछि ? लागत जँ कलम धयने रही । जे फुरय से लिखने चल जाइ । एकान्तक मित्र लेखन बेस सहायक होइत छैक । ई अनुभव अपन अछि । शेष कुशल, अपन लिखी । स्नेहाधीन- शेखर

पटना
14.4.62

प्रियरामदेवजी, सस्नेह,

अहाँक ४ अप्रैलक पत्रक जबाब दऽ रहल छी बिना अर्थक । अहाँक पठाओल **विरोग**क 13-14 किश्त पहुँचल तँ प्रसन्नता भेल जे ओही दिन मैटर देबाक छल । कने पूर्वे गेने निश्चिन्त रहैत छी । अस्तु, आर्यावर्तमे अपन चन्दाझा देखनहि होयब । कथा हीरानन्दजीक पेंटमे पड़ल अछि ।

मैथिली कार्यमे लग्न रहने कार्य भेटबे करत । लागल रहब हमरो लोकनिक कर्त्तव्य । प्रो.विद्यापतिठाकुरक लेख भेटल अछि । छपतनि । हम चिन्तामे छी जे मैथिलीकेँ की साहित्यिके लेखटा अभिप्रेत छैक ? की जीवनक विभिन्न समस्या पर मौलिक चिन्तन प्रस्तुत करऽवला क्यो नहि ?

प्रेरणा गुरुजनसँ अवश्य भेंटैत छैक, मुदा आत्मनिर्भर भऽ कार्य करब ओहिसँ पैघ बात । चिन्तन प्रगाढ़ होयबामे आत्मनिर्भर व्यक्ति विशेष सफल होइत अछि, एहि दृष्टिसँ सोचि कार्य करैत रही । उत्साहक अभाव होयब नीक बात नहि ।

संभव जे अप्रैलक दरमाहा पर धिया-पूता ग्रामाभिमुख होअय । तकर बाद किछु मास हमहूँ एकसरे रहब । सत्य कहैत छी रामदेवजी, कार्यक अधिकता ओ स्वास्थ्यक अभावसँ उत्पीड़ित रहैत छी । बड़ बिसरैत छी । चारि दिनसँ सोचैत-सोचैत आनक कार्ड पर आइ उत्तर लिखि रहल छी, पोस्टआफिससँ कार्ड किनबाक गप्प रहैत तँ आइयो किछु लिखि सकितहुँ ताहिमे सन्देह । अस्तु, प्रसन्न रही, श्रमी बनल रही । भगवती छथिन। अहींक– शेखर

प्रिय रामदेवजी, स्नेह ! 31.1.63

अहाँ द्वारा लिखल प्रतीक्षणीय पत्रक अवधि हमरा एखन धरि ज्ञात नहि भऽ सकल अछि । हम जे सुमनजीक लिफाफमे अहाँकेँ पत्र पठौने रही से भेटल से हम कोना बुझी । कथाक प्रसंग पत्र सुमनजीकेँ लिखने रहियनि । समय तँ एहिना बितैत चल जयतैक । 26 जनवरी 2 बजे रात्रिमे हृदयक धड़धड़ीसँ बीनामाय जाय लगलीह। अकस्माते ई घटना । एखन ततेक दुर्बल छथि जे उठनाइ बैसनाइ कठिन छनि । दवाइ चलि रहल छनि । हमर मानसिक स्थितिक कल्पना कऽ सकैत छी । कन्यादानक प्रसंग नजरि दिऐक एतबे अनुरोध । एहू स्थितिमे बीना-मायक यैह रटनी छनि ।

पाँखिपर- सबेर पठाओल करी । पहिने शुक्रकेँ छपि कऽ तैयार होइत छलैक। आब बुधे भऽ गेलैक अछि । अपनो मन ठीक नहि रहैत अछि । कुशल-लिखब । स्नेहाधीन– शेखर

प्रिय रामदेवजी, सस्नेह । 29.5.63

अमरजीक द्वारा अहाँक समाचारसँ अवगत भेल छलहुँ । जीवन एहने छैक । अहाँक चुप्पीक कारण यैह कि आन कोनो ? हम यदि नहि लिखि सकी तकर अर्थ ई तँ

ने, जे अहूँ चुप्प रही । अस्तु, मिहिरमे तीन कथा,नीक स्तरक प्रत्येक अंकमे देबाक योजना अछि । **रामजोड़ी**कें विदा कयलियनि । आगाँक अंकसँ **सोनदाइक सोहाग** आबि रहल अछि । तँ आब प्रत्येक मासमे अनिवार्य रूपसँ दू कथा अवश्य पठाबी ।

यदि तैयार हो तँ एक्के खेपमे जे पठायब से पठा दी । हमर कन्यादानक समस्या पड़ले अछि । आब नहि किछु तँ सभाक गप्प सोचि रहल छी । देखी । पत्र लिखब, मोन लागल अछि । अहाँक– शेखर

सुधांशुशेखरचौधरी, सम्पादक, मिथिला मिहिरक अपना हाथक लिखल आ हस्ताक्षरित टेस्टीमोनियलक फोटो संगहि देल जा रहल अछि जे देखि हुनक उत्तराधिकारी आ मानसपुत्र लोकनिक भ्रम टूटि जयबाक चाहियनि । टेस्टीमोनियल **एस्.पी. कालेजक प्रो.रामदेवझा**कें देल गेल छलनि तँ भ्रम इहो टूटि जयबाक चाहियनि जे टेस्टीमोनियल लिखबा काल रामदेवझा शिक्षित बेरोजगारक रूपमे कोनो नोकरी लय बौआयल फिरैत छलाह आ शेखरजीक टेस्टीमोनियल पर फट् दऽ नोकरी भेटि जैतनि । से जँ भेटितैक तँ शेखरजीकें भेटि गेल रहितनि । से जँ भेटितैक तँ हमरा लगमे हुनकोसँ पैघ व्यक्तित्ववला विद्वान् म.म.उमेशमिश्र, प्रो.हरिमोहनझा, डा. सुधाकरझाशास्त्री, सुरेन्द्रझासुमन, जे.कुमर इत्यादिक टेस्टीमोनियल विद्यमान छल जे एखनो सुरक्षित अछि । जँ नोकरी दिअयबाक शुभेच्छासँ शेखरजी अपन कृतिकें हमरा नाम पर चढ़ा देबाक उदारता देखौने रहितथि तँ **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** स्तम्भसँ अधिक ओजनगर होइत जँ अपन **तऽर पट्टा उप्पर पट्टा** उपन्यासो हमरा नाम पर चढ़ा दितथि । ओहो तँ छद्मनामेसँ बहरायल छल । ओकर आंशिक मैथिली अनुवादो हमही कयने छलियनि ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठीक वास्तविक लेखकक प्रसंग श्रीकान्तठाकुर द्वारा कयल गेल स्पष्टीकरणक पश्चात् तथ्य गुप्त नहि रहि सकल आ यत्र-तत्र चर्चामे आबि गेल । एकर एकटा झलक श्रीगोपालजीझागोपेश लिखित **ओझाजीक डायरी** (मिथिला मिहिर, 6.1.1962)मे देखल जा सकैत अछि । ओहि डायरीमे लेखक पटनावाली अंगरेजीफूलकें ओझाजीक सारि बना देने छथिन । हमर **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**मे अंगरेजीफूलक अस्पतालमे भर्ती होयबाक तथा बादमे अस्पतालसँ मुक्त भऽ अपन डेरा पर पहुँचलाक बादक वर्णन तँ भेल मुदा अस्पतालमे भर्ती रहबाक अवधिक वर्णन नहि भेल । गोपेशजी ओही अवधिक वर्णन ओझाजीक डायरीमे 19 जून 1961क घटनाक रूपमे पल्लवित कयने छथि । ओहिमे गोपेशजी अंगरेजीफूलक द्वारा कहबैत छथि- **की कहब ओझा, अहाँक साढ़ू बमभोला छथि । ने छौ बुझैत छथि ने पाँच । काल्हि साँझ खन गेट पर दरबान रोकि देलकनि जे भीतर जाइये ने देब, उप्परसँ जखन हम कहलिऐक जे आबऽ दहुन, तखन आबऽ देलकनि । आफिसोमे कतोक दिन गेट पर सिपाही टोकि दैत**

छनि । हम कहैत छियनि जे एक बोझ जे टीक रखने छी से एके लट राखू आ धोती-कुर्त्ताक बदलामे कहियो पैंटो-वुशसर्ट पहिरल करू । आइ-काल्हि भेखे भीख भेटैत छैक ।

ओहि समयक हमर बगय-बानिमेँ (एखनो एहिमे कोनो परिवर्त्तन नहि भेल अछि) जे परिचित रहल छथि तनिका वुझवामे कनेको भाङठ नहि होयतनि जे **एक बोझ टीक** कटा कऽ एकटा लट रखबाक ओ **धोती कुर्त्ताक** स्थान पर **पैंट-वुशसर्ट** पहिरबाक विचार दऽ कऽ ककरा पर कटाक्ष कयल गेल छल ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी एकटा साहित्य-विधाक रूपमे आलोचना ओ इतिहास ग्रन्थमे चर्चित होइत रहल आ ओहि सबमे निस्सन्दिग्ध रूपमे रामदेवझाक कृतिक रूपमे एकर उल्लेख कयल जाइत रहल । 1972मे प्रकाशित श्रीभूपेन्द्रकुमारचौधरीक पुस्तक **मैथिली उपन्यास ओ उपन्यासकार** (ग्रन्थालय प्रकाशन, टावर चौक दरभंगा)मे **अंगरेजीफूलक चिट्ठीकेँ** पत्रात्मक उपन्यास मानैत कहल गेल अछि जे- **पत्रात्मक उपन्यास....... डा.रामदेवझाक मिथिला मिहिरमे धारावाहिक क्रमसँ छपल 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' आ श्रीउपेन्द्रनाथझा 'व्यास'क भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादेमी-पुरस्कार प्राप्त 'दुइ पत्र'क नाम लेल जा सकैछ' (पृ०10) ।**

ओहि पुस्तकमे पुनः दोसर ठाम कहल गेल अछि– **श्रीउपेन्द्रनाथझाव्यासक दुइ पत्र (1969) उपन्यास प्रकाशित भेल जे पत्रात्मक शिल्पविधानमे प्रस्तुत कयल गेल छल ।,.... ओना एहिसँ पूर्वमे प्रो.रामदेवझाक 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' आदि अनेकानेक पत्रात्मक शैलीमे लिखल उपन्यास सभ प्रकाशित भऽ चुकल छल । (पृ० 42) ।**

एहि ठाम ज्ञातव्य जे प्रो.डा.भूपेन्द्रकुमारचौधरी (अध्यापक, मैथिली विभाग, सी.एम्. कालेज, दरभंगा) ओहि श्रीरमेन्द्रनारायणचौधरीक आत्मज थिकथिन जे अपन प्रसिद्ध संस्था **ग्रन्थालयक** माध्यमसँ शेखरजीकेँ निरन्तर आर्थिक सहयोग करैत रहल छलथिन आ जे अपन बहिनोइ श्रीकान्तठाकुर लग मिथिला मिहिरमे शेखरजीकेँ नोकरी दिअयबा लय जोरदार पैरवी कयलथिन आ ओहि दिशामे मूल्यवान् मार्गदर्शनो कयलथिन आ जनिका मिथिला मिहिरक प्रकाशनक दू-तीन वर्ष धरि ओकर प्रत्येक गतिविधिक प्रामाणिक सूचना रहैत छलनि । भूपेन्द्रकुमारचौधरीक ई पुस्तक मिथिला मिहिरमे पुस्तक- समीक्षा हेतु पठाओल गेल छल होयत ।

मैथिली साहित्यक इतिहास-ग्रन्थ ओ आलोचनामे भेल गलती सभपर तीक्ष्ण दृष्टि रखनिहार राजमोहनझाक ओ कुलानन्दमिश्र द्वारा सम्पादित **फराक** पत्रिका (नवम्बर 1976, पृ. 13)मे तथा पुनः अपन पोथी **गलतीनामा** (1983, पृ. 50)मे

भूपेन्द्रकुमारचौधरीक कथनपर कहैत छथि– **श्रीचतुराननक पत्रात्मक निबन्धक संग्रह 'विकास' आ डा.रामदेवझाक धारावाहिक स्तम्भ 'अंग्रेजीफूलक चिट्ठी'कें सेहो उपन्यास बना देल जाइत अछि (मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकार-श्रीभूपेन्द्रकुमारचौधरी, पृ. क्रमशः 31 तथा 41)** । पटनाक निवासी, मिथिला मिहिर, सुधांशुशेखरचौधरी आ पटनाक मैथिली साहित्यक गतिविधिसँ निकटतम सम्पर्क रखनिहार राजमोहनजीकें अंग्रेजी (अंगरेजी)फूलक चिट्ठीक लेखक रामदेवझा छथि ताहि विषयमे कोनो शंका वा आपत्ति नहि छनि । आपत्ति छनि एकरा उपन्यास मानबापर । **विकास** पत्रात्मक निबन्ध थिक, उपन्यास नहि, से उचिते । परन्तु **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**कें साहित्यक कोन विधाक वस्तु कहल जाय, ताहि विषयमे मौनें रहि गेलाह ।

मैथिलीक प्रसिद्ध आलोचक ओ इतिहासकार डा.(स्व.)बालगोविन्दझाव्यथित 1984-85मे प्रकाशित अपन पुस्तक **मैथिली भाषा ओ साहित्य** (किरण प्रकाशन, पटना)मे लिखने छथि- **एहि समयमे व्यासजीक दोसर उपन्यास' दुइपत्र' प्रकाशित भेल। ई पत्रात्मक शैलीमे लिखल उपन्यास थिक.... डा.रामदेवझाक 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी सेहो एही शैलीमे लिखल गेल उपन्यास अछि ।' (पृ. 276)।**

डा.बालगोविन्दझाव्यथित अपन ग्रन्थ **मैथिली साहित्यक इतिहास**क 1988मे प्रकाशित दोसर संस्कारणमे लिखैत छथि- **मैथिलीमे उपेन्द्रनाथझाव्यासक दुइ पत्र पत्रात्मक शैलीमे लिखल उपन्यास थिक.... डा.रामदेवझाक अंगरेजीफूलक चिट्ठी सेहो पत्रात्मक शैलीक उपन्यास थिक (212-13) ।**

एमहर शेखरजीक आत्मसंस्मरण, साक्षात्कार आ संस्मरण सभ प्रकाशित होइत रहल अछि ताहिमे (किछु तँ सब सखी झुम्मरि खेलय, लुल्ही कहय हमहूँ-तेहनेसन) हुनक छविकें अभूतपूर्व देखबैत आन-आन साहित्यकार ओ वरिष्ठ विद्वान्क छविकें धूमिल करबाक, हुनक व्यक्तित्वकें तुच्छ सिद्ध करबाक सुविचारित प्रयत्न कयल गेल अछि । शेखरजीक कलमसँ वा हुनक मुँहसँ मतिभ्रम सूचक, अनटोटल कथा सब कहबाओल गेल अछि ।

मैथिली साहित्यक इतिहासकें भगीरथ प्रयत्न कऽ नितान्त सुव्यवस्थित रूप देनिहार डा.जयकान्तमिश्रक व्यक्तित्व ओ कार्यकें हीन देखयबाक हेतु शेखरजीक मुँहसँ कहबाओल गेल अछि- **जयकान्तबाबू इतिहास-लेखनक क्रममे वैदेही कार्यालयमे आयल छलाह आ वैदेहीक टिप्पणी, अनेको विषय पर लेखकीय टिप्पणीयेकें आधार मानि इतिहास लेखनक तैयारी कयने फिरैत छलाह । (आरंभ- 5/पृ. 42) ।**

एहिमे जयकान्तबाबूक कार्यक जे उपहास सन्निहित अछि से व्याख्याक अपेक्षा नहि रखैछ । मैथिली साहित्यक इतिहाससँ अनभिज्ञ व्यक्तिक लेल ई 'बाबा वा काका वाक्यं प्रमाणम्' भने रहओ किन्तु तथ्य की अछि ? तथ्य ई अछि जे डा.जयकान्तमिश्रक प्रसिद्ध ग्रन्थ **ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर**क प्रथम भाग (प्राचीनकाल) 1949मे तथा ओकर दोसर भाग (आधुनिक काल) 1950क पूर्वार्द्धमे प्रकाशित भेल । तहिया तँ वैदेहीक जन्मो ने भेल छलैक । वैदेही पाक्षिक रूपमे 26 जनवरी 1950सँ सीतामढ़ीसँ बहरायब आरम्भ भेल छल । यैह कारण अछि जे डा.जयकान्तमिश्रक इतिहास केर दोसर भागमे हुनक अनुज कृष्णकान्तमिश्र द्वारा प्रकाशित वैदेहीक कोनो चर्चामात्र नहि अछि । तखन जयकान्तमिश्र इतिहास-लेखन हेतु कोन वैदेही कार्यालयमे गेल छलाह ? ज्ञातव्य इहो जे शेखरजी स्वयं 1955मे वैदेहीसँ सम्बद्ध भेल छलाह । ई थिक इतिहास-प्रदूषणक घृणित व्यापार ।

अपन आत्मकथाक दोसर किश्त **दुरात्माक चालि** शीर्षकमे शेखरजी मिथिला मिहिरक आरम्भिक वर्षक वर्णन कयने छथि जाहिमे विषवमन मात्र अछि । शेखरजी ओहिमे प्रो.रमानाथझाक मृत्युक दस-बारह वर्षक बाद हुनका **दुरात्मा** विशेषणसँ विभूषित कऽ मनक क्वाथ बाहर कयलनि अछि । (देसकोस, जुलाइ-नवम्बर, 94) । कारण, मिथिला मिहिरक मैनेजमेंटकेँ प्रो.रमानाथझा एकटा पत्र लिखने छलथिन जे- **आब जखन लेखक हेतु मिहिर टाका दैत छैक तखन कतोक नवीन लेखककेँ भाषाक शुद्धि लक्ष्ये ने रहैत छैन्हि । कतेक बेरि एके व्यक्ति कए नामसँ लिखैत छथि, कए गोटाक नामसँ लिखैत छथि** । (आरंभ-5/पृ. 4) । एहि कथनक निहितार्थ छल जे एके व्यक्ति भिन्न-भिन्न नामसँ पारिश्रमिक पबैत छथि । प्रो. रमानाथझाकेँ जाहि कोनो स्रोतसँ सूचना भेटल छल होइन परन्तु सूचना सर्वथा अलीक नहि छल । प्रो.रमानाथझा सन विशिष्ट प्रतिष्ठित व्यक्तिक जीवनकालमे किंवा मिहिरक सम्पादकक पदपर नोकरीक अवधिमे दुरात्मा कहि कऽ अपन बात सार्वजनिक रूपसँ लिखबाक साहस शेखरजीकेँ किएक नहि भेलनि ?

ओहि आत्मकथामे दुरात्माक कोटिमे जाहि दोसर व्यक्तिकेँ शेखरजी रखलनि अछि से थिकाह पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्रअमर । सम्पादकक पद पर रहैत अपन बाजल बात ओ कटूक्ति सबकेँ नकारैत आ सर्वथा कल्पित, घृणित ओ दुष्टतापूर्ण आरोप-आक्षेप करैत लिखैत छथि- **पत्र द्वारा जेना-तेना अमरजी लग ई समाद पहुँचैत छनि ओ अपना हाथमे नेतृत्व लैत छथि आ जी-जानसँ चेष्टा करैत छथि जे मिथिला मिहिरकेँ छपबा योग्य किछु प्राप्त नहि होइक । किसुनजी, प्रो.राधाकृष्णचौधरी सदृश लेखक पर हुनक जादू नहि चलैत छनि** । (देसकोस, जून 94/ पृ.19) ।

एहि तरहक विचार व्यक्त करबाकाल की शेखरजीक मानसिक स्थिति सन्तुलित छलनि ? ई प्रश्न ककरहु मोनमे उठि सकैछ । कारण, तथ्य सब ठीक एकरा विपरीत अछि । एकटा साक्षात्कारमे स्वयं शेखरजी स्वीकार करैत कहैत छथि जे- **हमर अनन्य मित्र रहलाह अछि अमरजी** । (आरंभ-5/पृ. 23) । ओहि अनन्य मित्रताक दर्पण अछि ओ पत्र सब जे शेखरजी 1956सँ अमरजीकेँ लिखैत रहलथिन, जखन-जखन ओ प्रवासमे रहैत छलाह । ओहिमेसँ बहुतो बीछल-बाछल पत्र श्रीशंकरदेवझा द्वारा लिखित पुस्तक **अमरजीक परिचय-संसार ओ पत्राचारमे** अविकल रूपमे आयल अछि । (पृ. 74-88)

मिथिला मिहिरक आरम्भिक वर्षमे शेखरजी अपन अनन्य मित्र श्रीअमरजीकेँ धुरझार सौहृद्यपूर्ण, आत्मीयताक अधिकारसँ भरल विस्तृत पत्र सब लिखैत रहलथिन जकर मुख्य विषय मिथिला मिहिर रहैत छलनि । ओहिमे मिथिला मिहिरक हेतु उपयुक्त प्रकाशन-सामग्रीक संकलन कऽ कऽ अविलम्ब पठयबाक आग्रह, प्रथम अंकसँ आरम्भ कऽ आगामी प्रत्येक अंकक प्रकाश्य सामग्रीक विवरण, ककर कोन रचना छपल व छपत, नहि छपबाक कारण आदिक विवरण विस्तारसँ दैत रहैत छलथिन । अपन अनन्य मित्र श्रीचन्द्रनाथमिश्रअमरकेँ 8 सितम्बर 1960 (मिहिरक प्रथम अंक-प्रकाशनक तिथि 11 सितम्बरसँ चारि दिन पहिने)सँ 2 नवम्बर, 1961 (अर्थात् शेखरजीक नोकरीक प्रोबेशन पीरियड) धरिक अवधिमे शेखरजी द्वारा लिखित पत्रसब चिचिया-चिचिया कऽ कहि रहल अछि जे मिहिरमे प्रकाशनार्थ रचनाक हेतु अहुछिया-अहुड़िया कटैत शेखरजीकेँ कोन रूपमे ओ निरन्तर सहयोग करैत छलथिन ।

ओहि समयमे अवश्ये मिहिरकेँ लेखादिक चिन्ताजनक असहयोगक स्थिति छल । शेखरजीक अनन्य मित्र अमरजीक लेल ई घोर चिन्ताक विषय छलनि जे उपयुक्त, छपबा योग्य प्रचुर लेख, कथा- कविता आदि उपलब्ध नहि भेलासँ शेखरजी फेल ने कऽ जाथि, समाजमे हुनकर थू-थू ने होइनि आ एतेक कठिनतासँ प्राप्त नोकरी छूटि ने जाइनि,ओ फेर जीविका-विहीन ने भऽ जाथि । तेँ जी-जान उपछि कऽ विभिन्न पुरान-प्रतिष्ठित कवि-लेखकक रचनाक संगहि नव लोक सबसँ रचना लिखबाय मुट्ठा बना-बना कऽ डाकसँ अथवा पटना गेनिहार व्यक्तिक माध्यमसँ पठाबऽ लागल छलथिन । हम जखन पटना जाय लागी तँ संकलित रचना सभक मुठड़ा हमहूँ लेने जैयनि आ शेखजीकेँ देल करियनि । ई दोसर बात जे बादमे शेखरजीक घरमे राखल कतोक रचनाकेँ मूस कतरि देल करैत छलनि !

अमरजीपर नामोल्लेख पूर्वक गम्भीर आ निकृष्ट दोषारोपण करबा काल शेखरजी बिसरि गेलाह जे मिथिला मिहिरक आरम्भिक दुइ वर्षमे स्वयं अमरजी अपन नामसँ आ बतहू मिसरक नामसँ कतेको रचना दैत रहल छलथिन, बादमे 3जनवरी

1965सँ 11जुलाइ 1970 धरि **धर्मधकेलानन्दजीक बलधिङरो** स्तम्भक रूपमे 255 किश्त नियमित रूपें लीखि कऽ सहयोग करैत रहल छलथिन । दुरात्माक पंक्तिमे अपन अनन्यमित्रकें बैसाबऽकाल शेखरजी बिसरि गेलाह मिथिला मिहिरक प्रसंग हुनका संग कयल गेल अपन पत्राचार आ हुनका द्वारा कयल गेल अमूल्य सहयोग ! बिसरि गेलाह मिथिला मिहिरक नोकरीसँ पूर्वक दुर्दिनक अवधिमे अनन्य मित्र द्वारा तन-मन-धनसँ कयल गेल अगणित उपकार !

अनेकमेसँ एक घटना जकरा शेखरजी आ शेखरजीक परिवारक ओ सदस्य जे ओहि समयमे बोधगर छल होयताह सेहो बिसरि गेल होयताह परन्तु हमरा आ हमर पत्नीकें ओहिना स्मरण अछि । जून 1959मे शेखरजी टायफायडमे कय सप्ताहसँ पड़ल रहथि । केओ ताक-छेम कयनिहार नहि रहनि, तँ वैह **अनन्यमित्र दुरात्मा अमरजी** हुनक चिकित्सा हेतु ठाढ़ भेल रहथिन । हुनक ओहि अनन्य मित्रक नवविवाहिता कन्या आ जमाय साँझ कऽ चुमाओन पर बैसल रहथिन- दूर्वाक्षतक प्रतीक्षामे-गितगाइन सब गीत गबैत-गबैत थाकि कऽ चुप भऽ जाइत छलथिन आ कन्याक पिता, अर्थात् हुनक अनन्य मित्र अपन आङनमे पानि गरम करा गयाबाबू कम्पाउंडरकें संग लऽ जाय शेखरजीकें इंजेक्शन दियाबऽमे तेना व्यस्त रहैत छलथिन जे ओ बिसरि जाइत छलथिन जे हुनक बेटी-जमाय चुमाओनक पीढ़ी पर प्रतीक्षामे बैसल छथिन आ हुनका अपना हाथें दूर्वाक्षतो देबाक छनि ।

वास्तवमे शेखरजीक तथाकथित आत्मकथा तथा सांक्षात्कार-संस्मरणमे एही प्रकारक अविश्वसनीय, मिथ्या, असंगत-विसंगत कथा सब कहल गेल अछि । **अंगरेजीफूलक चिट्ठीक** नेपथ्यक सत्य पूर्वहि देखल गेल अछि । **सहजो पीसीक चरखा** स्तम्भक सम्बन्धमे सेहो दाबा कयल गेल अछि जे ओहो स्तम्भ मिहिरक सम्पादके लिखैत छलाह । हमर जानकारीक अनुसार **सहजोपीसीक चरखा** बाबूलक्ष्मीपतिसिंह आरम्भ कयने छलाह । ओकर पहिल किश्त छपल रहैक 14 मइ 1961क अंकमे । मिथिला मिहिरक प्रकाशन-दिन रहैत छलैक रवि परन्तु छपि कऽ तैयार भऽ जाइत छलैक शुक्रहि दिन आ शनिकें भोरे सर्कुलेशनमे आबि जाइत छलैक। 13 मइकें शनि रहैक । बेरुक पहर पूर्वहि जकाँ इंडियननेशन-आर्यावर्त कार्यालय गेलहुँ । उपरका महल पर जाइसँ पहिनहि बाबूलक्ष्मीपतिसिंहक कार्यालय छलनि । ओतऽ साधारणतः पहिने हुनकहि दर्शन कयल करी । ओहि दिन जाइते ओ हलसि कऽ 'आउ-आउ' कहैत पुछलनि-- मिहिर पढ़लहुँ ? हमर 'जी हँ' कहला पर पुछलनि- किछु नऽव भेटल ?' हम कहलियनि- जी, सम्पादकीय पृष्ठ पर 14 मइक बदलामे 15 मइ छपल छैक ।' ओ खौंझायल स्वरमे बजलाह- अओ, ई सब तँ मिहिरमे होइते रहैत छैक । आन कोनो नऽव ?' हम उत्तर देलियनि- जी, सहजोपीसीक चरखा ।' ओ जिज्ञासा कयलनि-केहन लागल ?' हुनका पाठकक रूपमे हमर प्रतिक्रिया जनबाक उत्सुकता छलनि । हम कहलियनि- श्रीमान् ! अन्तःपुरक

रोचक वर्णनक संगहि रोचक भाषा-प्रयोग भेलैक अछि । सहजोपीसी एकटा विलक्षण टाइप कैरेक्टर छथि । किन्तु कातिक मासक देव-उठाओनक वर्णन जेठक अमावास्यामे होयब असामयिक सन लगैत छैक । एखन तँ बटसावित्रीक वर्णन सामयिक प्रसंग होइतैक । ओहि पर फराकसँ एकटा लेखो आयल छैक ।' बाबूसाहेब खिन्न होइत बजलाह-कातिक मासमे देल सामग्रीक जेठमे छपलासँ ओ असामयिक भऽ जयतैक से के बुझाबओ सम्पादककेँ ?' हम फेर सहज रूपमे जिज्ञासा कयलियनि- सरकार ! एकादशीमे पार्वण होइत छैक की पारण ? सहजोपीसीक चरखामे पार्वणक चर्चा छैक । पार्वण तँ पितृकर्ममे होइत छैक ?' एहि पर ओ रोषसँ बजलाह- की कहै छी ? ई लोकनि तँ जैह गूआमाला सैह उतरी बुझैत छथिन । अपना मोने किछुकेँ किछु कऽ दैत छथिन । पारण आ पार्वणमे की भेद से बुझियो तँ लितथि ।'

बीसम शताब्दीक सातम-आठम दशकमे कामदेव(प्रसाद)श्रीवास्तवक एकटा ऊर्जस्वल युवा लेखकक रूपमे अभ्युदय भेल छल । हिनक कथा आ विशेषत: वैज्ञानिक विषयक लेखसब किछु वैदेहीमे आ विशेषत: मिथिला मिहिर छपैत छलनि।

अनाम, छद्मनाम ओ अपरिचित नामक लेखकक रचनासबकेँ शेखरजीक नामपर समेटैत जयबाक फरेबमे कामदेवश्रीवास्तवोक रचनाकेँ शेखरजीक रचना बना देल गेल, कोन प्रामाणिक स्रोत अथवा आप्तवचनक आधार पर डा.मेघनप्रसाद अपन **मैथिली कथाकोष** (पृ. 264 आ 65, 84 सेहो)मे सुधांशुशेखरचौधरीक रचना घोषित कऽ देलनि से वैह जानथि । यदि मिथिला मिहिरमे प्रकाशित कथा-**दुर्गारक्षिणी** (1.1.67) **भकइजोत** (29.1.67) **ज्वालाक मध्य** (7.5.67), वैज्ञानिक निबन्ध-**विशालतम ग्रह बृहस्पति** इत्यादि इत्यादि अपना आखिएँ देखि लेने रहितथि तँ हुनका कामदेवश्रीवास्तवक ई छपल पता भेटि जैतनि-**द्वारा-जयदेवप्रसाद, एडवोकेट, इमामबाड़ी, लहेरियासराय** । कामदेव(प्रसाद)श्रीवास्तव हमर एकटा सहपाठी जयदेवप्रसादक अनुज, विज्ञान-स्नातक । ओ हमर आ शिवाकान्तपाठकक प्रेरणासँ मैथिलीमे लिखऽ लगलाह । लेखनमे नाममे 'प्रसाद' छोड़ि श्रीवास्तव जोड़लनि सोमदेवजीक प्रेरणासँ । हम हिनक कथा आ किछु लेखक भाषा-संशोधन कऽ प्रकाशनार्थ पठयबाक लेल प्रेरित कयने छलियनि । हिनक अन्य भ्राता सब सेहो लेखक छथिन। सत्यदेवप्रसाद असमी-हिन्दीमे अनेक ग्रन्थक अनुवाद कऽ चुकल छथि । एकटा अनुज सहदेवप्रसाद (वकील) सेहो मिहिरक नियमित लेखक रहि चुकल छथि । कामदेव(प्रसाद)श्रीवास्तव पूर्वांचलक केन्द्रीय विद्यालयमे अध्यापक भेलाक बाद मैथिली साहित्यक मुख्य धारासँ दूर असम्पृक्त भऽ गेलाह । आब सर्वथा अपरिचित भऽ गेल मैथिली लेखक कामदेव(प्रसाद)श्रीवास्तवकेँ शेखरजीक छद्मनामक रूपमे प्रचारित कयल जा रहल अछि । आब ओ अपन नाम ओ कृतिक अपहरण पर कपार पीटैत रहथु ।

मिथिला मिहिरक मुख्य सम्पादक होयबाक कारण सम्पादकीय लिखब शेखरजीक मुख्य कर्त्तव्य छलनि । परन्तु समय-समय पर परिस्थितिवश सहायक सम्पादक ओ उपसम्पादक उपेन्द्रठाकुरमोहन, श्रीहंसराज, श्रीभीमनाथझा सेहो सम्पादकीय लिखैत रहलाह । परन्तु आब एहि बातकेँ बिकछाओत के ? भविष्यमे दावा कयल जायत जे समग्र सम्पादकीय शेखरेजी द्वारा लिखल गेल आ सभकेँ वर्तुलीकृत रूपमे कोनो ग्रन्थ प्रकाशित भऽ जायत । **गोनूझाक चटिसार** नामक बेनामी हास्य-स्तमभ लिखनिहार छलाह प.परमानन्दशास्त्री, प.हीरानन्दशास्त्री, मार्कण्डेयप्रवासी इत्यादि । परन्तु एकरा के सत्यापित करत ? अन्ततः शेखरेजीक सम्पत्ति घोषित कऽ देल जायत। अन्यान्य गुमनाम ओ छद्मनामसँ लिखल लघुजीवी-दीर्घजीवी स्तम्भ सभक अपहरणक चेष्टा **अंगरेजीफूलक चिट्ठीये** जकाँ कयल जाइत रहत । मिथिला मिहिरमे छद्मनामसँ लिखनिहार अग्निशर, इन्दीवर, उदयन, काश्यप, कौटिल्य, झामलाल, द. न.म., धर्मधकेलानन्दजी, घुसकुनझा, प्रजापति, बतहूमिसर, बुन्नीलाल, मण्डूकानन्द, मदनानन्द, माढव्य, वामनशास्त्री, सपूत, आ एहन-एहन गंडा-गाही नामधारी लेखक के छलाह, से कहत के ?

पत्र-पत्रिकामे परिस्थितिवश वा कार्यनीतिवश बहुतो बेनाम स्तम्भ आ छद्मनामसँ प्रकाशित रचनाक प्रकृत लेखकक नाम गोपनीय राखल जाइत छैक । शेखरजी एहि नीतिक अनुसरण कयलनि । परन्तु सेवा-निवृत्त भेलाक बाद हुनक कर्त्तव्य छलनि जे ओ सकल गोपनकेँ सार्वजनिक कऽ दितथि । मिथिला मिहिरक विभिन्न पक्षपर अनुसन्धानकर्त्ता लोकनि शेखरजीक सर्किलपर निर्भरता ओ दरबारितासँ विभोर नहि भऽ कऽ पूर्वाग्रहसँ मुक्त भऽ इमन्दारीसँ अन्यहु स्रोत दिस बढ़बाक प्रयास करितथि तँ बहुत रास अनभिज्ञात तथ्यक उद्घाटन कऽ सकितथि । वास्तवमे ई खूब विचारि कऽ कयल गेल अछि जाहिसँ शेखरजीक उत्तराधिकारी एवं मानसपुत्र लोकनि भविष्यमे एहि गुमनाम स्तम्भ ओ छद्मनामसँ मिथिला मिहिरमे प्रकाशित रचना सबकेँ शेखरजीक रचना प्रचारित कऽ अपन धन्धा चला सकथि ।

शेखरजीक प्रति पूर्ण आदर-सम्मानक अछैतो हमरा ई कहबामे क्लेश भऽ रहल अछि जे ओ मिथिला मिहिरक मुख्य सम्पादकक रूपमे अंगरेजीफूलक चिट्ठीक प्रकृत लेखककेँ (हमर नाम) गोपनीय रखबाक नीतिक अऽढ़मे घोर अनियमितता, अनैतिकता आ क्षुद्रताक आचरण कयने छलाह । रहस्य फुजलापर हुनकर नोकरी खतरामे पड़ि गेलनि जकरा श्रीकान्तठाकुरविद्यालंकार अपन शालीन बुद्धिमत्तासँ सम्हारि देलथिन । सम्पादकक पदपर शेखरजीक चयन हुनकहि द्वारा भेल छल, तेँ अन्यथा भेला पर हुनकहु प्रतिष्ठा पर पड़ितनि । शेखरजीसँ चिरकालिक आत्मीयताक कारण हुनक आग्रह **ई बात सब अपने धरि राखब**केँ सम्मान दैत हम अपन मुँह बन्द रखने रहलहुँ । परन्तु जखन सेवा-निवृत्त भऽ गेलाह, नोकरी पर खतराक कोनो

आशंक नहि रहि गेलनि वा मानसिक असन्तुलन भऽ गेलनि तँ अनेक बहकल, असंगत, अनर्गल, असत्यकथा सब बाजऽ लगलाह जाहिमे हमरहु कृतिकेँ आत्मसात करबा दिस प्रवृत्ति छलनि । परन्तु ओ बिसरि गेलाह जे ओ अपनहि हाथसँ लिखने छथि जे **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग, रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** स्तम्भ रामदेवझाक लिखल छनि । लिखितं केर आगाँ वक्तं की ! शेखरजीक स्वहस्ताक्षरित अभिलेखे झाँपल सत्यकेँ देखार कऽ दैछ ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग एवं **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** स्तम्भक हेतु जे चिट्ठी सब लिखैत छलहुँ तकरा फेयर कऽ कऽ मिथिला मिहिरकेँ दैत छलिऐक आ ओकर रफ कापी हमरा लगमे रहि जाइत छल । ओहिमे ओहनो चिट्ठी सभक रफ कापी अछि जे मिथिला मिहिरमे छपि नहि सकल । **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**क अन्तिम चारि गोट किश्त जे छपि नहि सकल छल सेहो संयोगसँ भेटि गेल। ओहि रफ कापी सभक आधार पर साम्प्रतिक प्रेसकापी तैयार कयल गेल अछि । एकर प्रेस कापी तैयार करबामे श्रीअमलेन्दुशेखरपाठक, हमर माझिल बालक श्रीशंकरदेवझा तथा छोट कन्या सुश्रीकल्पनाकुमारीविद्या बड़ परिश्रम कयलनि । एहि हेतु हृदयसँ हुनका लोकनिकेँ आशीर्वाद दैत छियनि ।

मिथिला सांस्कृतिक परिषद् कलकत्ताक अध्यक्ष, विद्यापति विद्यामन्दिर, कलकत्ताक प्रधानाचार्य सहृदय सुहृद् डा.कालीकान्तझाजी **अंगरेजीफूलक चिट्ठी**केँ परिषद् दिससँ प्रकाशित करयबाक हेतु 1989 इ.मे औत्सुक्य देखौने छलाह । एकर कापी कतोक वर्ष धरि हुनका लगमे रहलनि । परन्तु परिषद्क आर्थिक विवशताक कारणे प्रकाशित नहि करा सकलाह । अन्ततः गत जनवरी मासमे खेदक संग पाण्डुलिपि आपस कऽ देलनि । हमरा अत्यन्त प्रसन्नता भऽ रहल अछि जे **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** समग्र रूपमे पाठकक समक्ष आबि रहल अछि ।

15 अगस्त 2002
भारतीय स्वतन्त्रता दिवस
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा - 846001

श्रीरामदेवझा
सदस्य, साहित्य अकादेमी
नई दिल्ली

श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी
सम्पादक, मिथिला मिहिर

मजहरुलहक पथ, पटना—१
तिथि 30/6/१९९३

प्रोफेसर श्री रामदेव झाकेँ हम हुनक छात्र-जीवनसँ नीक जकाँ जनैत छियनि। ओ ज्ञान-पिपासु रहबाक कारणेँ आरंभेसँ अपन प्रतिभाकेँ माँजैत-चमकबैत अयलाह अछि। मातृभाषा मैथिलीक प्रति हुनक सहज स्नेह हुनक कार्य-क्षेत्रकेँ विशाल बना देने छनि। निबन्ध, नाटक, कविता ओ कथाक क्षेत्रमे तँ हुनक प्रतिभा नीक जकाँ प्रतिभासित भेल अछि, संगहि अनुसंधानक क्षेत्रमे सेहो हुनक दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म रहलनि अछि। वस्तुतः एतेक अल्प वयसमे अपन प्रतिभा ओ अध्यवसायक बलेँ मैथिली-जगतक विद्वत्-समाजमे ओ अपन नीक स्थान बना लेने छथि।

मिथिला मिहिरक तँ ओ लेखक रहबे कयलाह अछि, विशेषतया हुनक लिखल मिथिला मिहिरक स्थायी स्तंभ 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी', 'बहिनाक विरोग' ओ 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' आदि समाजमे विशेष आदर पौलकनि अछि।

हमर दृढ़ धारणा अछि, हिनक सदृश दृढ़ चरित्र, बहुमुख प्रतिभासम्पन्न ओ अध्यवसायी व्यक्तित्व बड़ विरल देखल जाइत अछि। हम विश्वासक संग कहि सकैत छी, ई जाहि संस्थामे जयताह, रहताह से अवश्यमेव चमकि उठत। हम हिनक सुन्दर भविष्यक आकांक्षी छी।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी
30/6/93

अंगरेजीफूलक चिट्ठी

हय अंगरेजीफूल, 1 (गामसँ)

हमरा तों एकदमसँ बिसरि गेलह । तीन मास भेलह तोरा गेला, मुदा दुइयो पाँती कहियो लिखि पठबितह से नहि पार लगलह । तों दोष देबह हमरे, जे पहिने तोँही किएक नहि लिखलह । की तों नहि जनैत छह अपना गामक हाल ? गाममे लिफाफ-पोस्टकार्ड भेंटैत छैक ? डाकघर डेढ़ कोस पर छैक आ ओतऽसँ आनि देबक लेल केओ गछिते नहि रहैत छैक । कतेक बेर मोन औनायल जे तोरा दू आखर लिखियह, अपन मोनक बात कहियह, कयटा छौंड़ाकँ खेखनिओ कयलिऐक, मुदा केओ सोझे नहि भेल । मोनक बात मोनेमे अहुछिया कटैत रहल ।

आइ कतेक दिन पर एकटा लिफाफ परि लागि गेल अछि । मझिला भायकेँ देखलियनि मारते रास लिफाफ-पोस्टकार्ड । हुनकेसँ माङि लेलहुँ । तखन तोरा लिखि रहल छियह, मुदा ततेक रास बात मोनमे जमा अछि जे की लिखियह आ की नहि लिखियह तकर अटकरे नहि पाबि रहल छी । तों सोचैत होयबह जे तोहर अंगरेजीफूल नैहरमे अछि तेँ से हमरे मोन जनैत अछि । बेटी जा सासुरमे रहैत अछि ता नैहरे पर मोन लगल रहैत छैक । होइत रहैत छैक, कोन बाट भेंटय जे नैहर कऽ पड़ाइ; मुदा नैहरक मान-दान तँ चरिदीना होइत छैक । जहाँ बेटी चारियो मास रहल कि सभकेँ बलाय लागऽ लगैत छैक । मुदा तोहर बात तँ दोसर छह । तों भेलीह कमौआक लोकवेद । सासुरोमे पाहुने बनल रहैत छह आ नैहरोमे पाहुने । तोहर मान-दान किएक ने होयतह ! हमर से भाग्य कहाँ जे कमाइक मुँह देखब ? तीन वर्ष भेलनि बी.ए. कयला-गामे बैसल छथि । घरक लोक सभ खोभाटैत रहैत छनि जे कने चरफर बनह, शहरमे जा कऽ दुइयो मास रहह गऽ तखन नोकरी भेंटतह । लोककेँ लगिते की छैक? लगैत अछि उपदेश झाड़ऽ । हम जखन ओतऽ रही, कतेक बेर हमर गहना बन्हक धऽ कऽ छिछिया अयलाह । कतेक ठामसँ चिट्ठी अबनि आ पिठियाठोक विदो होथि मुदा नोकरी तँ आइ-कालिह अनन्त भगवान भऽ गेल छैक किने ?

की कहियह अंगरेजीफूल, अपन मोनक हाल ? खाली तोरे टा कहैत छियह, तोरासँ गप्प करक लेल हमर मोन औनाइत रहैत अछि । जा तों छलह, कोना दुनू बहीनि बूली-घूमी, कोना मोनक बात बतिआइ ? आब के अछि गाममे जकरा मोनक बात कहिऐक ? के सुनत हमर ? कहबैक ककरा ?

तोँ तँ ओझाक संग खूब घुमैत होयबह, खूब सिनेमा देखैत होयबह, खूब चीज-वस्तु किनैत होयबह। हमरा सदिखन मोनमे होइत अछि जे हमरा भगवान पाँखि दऽ दितथि आ ऊड़ि कऽ हम तोरा लग आबि जइतहुँ । देखितियह तोरा दुनू गोटेंक सुख । कोना दुनू गोटे हँसैत बजैत छह, कोना दुनू गोटे दुनियाँक सुख लुटैत छह ।

तोरा हमरे सप्पत छह अंगरेजीफूल ! पटना केहन छैक से जरूरे लिखिहह । अपना जिनगीमे तँ नहियेँ देखबैक मुदा तोहर चिट्ठीसँ तँ बुझबैक जे केहन छैक पटना? दरिभंगा – मधुबनिये एतेकटा छैक आ कि ताहूसँ ओ पैघ छैक ? सब बात फड़िछा कऽ लिखिहह जे कोना की करैत छह । तोहर सब बात बूझऽ लेल मोन लागल अछि । ओझा पहिनहिँ जकाँ मानैत छथुन की नहि सेहो लिखिहह । ईहो लिखिहह जे ओझाकेँ हम कहियो मोन पड़ैत छियनि की नहि ! अंगरेजीफूल ! ई सेहन्ता मोनमे लगले रहि गेल जे ओझे जकाँ हुनको नोकरी भऽ जइतनि । ओहो हुनके जकाँ पटनामे कमाइत रहितथि । इह ! तखन केहन मौज रहैत दुनू गोटेकेँ ! गामे जकाँ दुनू गोटे संगहि सभ काज करितहुँ, संगहि रहितहुँ । से दिन भगवान कथी लय हमरा देखौताह । हय अंगरेजीफूल, तोरा हमरे सप्पत छह, हमर कहल सुनल माफ करिहह आ जल्दी उतारा दीहह । तोँ तँ जखने चाहबह लिफाफ भेटि जयतह । हे, गोड़ लगैत छियह अंगरेजीफूल, चिट्ठी जरूरे लिखिहह । तोरे अभागलि– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **2 (पटनासँ)**

बड़े विलम्बसँ चिट्ठीक उतारा दैत छियह तेँ माफ करिहह । तोरे सप्पत कहैत छियह, एहि देरीमे हमर एक्को रत्ती दोष नहि अछि । कहैत-कहैत मुँह दुखाइत रहल, मुदा लिफाफ आनिएँ नहि दैत छलाह। आ हुनको हम की दोख देबनि, सब दिन हम मोन पाड़ि दैत छलियनि मुदा ओ बिसरि जाइत छलाह । तोँ कहबह अंगरेजीफूल, जे तोहर ओझा कतेक बिसरभोर छथुन, मुदा से बात नहि छैक । काजे ततेक बोझल रहैत छनि जे झूर-झमान देह लेने आध पहर राति बितल अबैत छथि आ अबिते ओछाओन पर पड़ि रहैत छथि । ठेहियायल मोन आ सुखायल ठोर देखि किछु कहबाक हिम्मतियो नहि होइत अछि ।

तोँ बुझैत होयबह अंगरेजीफूल, जे दुनू प्राणी संगे रहैत अछि तँ खूब मौज करैत होयत । मुदा हम केहन मौज कऽ रहल छी से तँ हमही जनैत छी । जा पहिला डेरामे रहैत रहथि ता आन आन किरायादारिन सबसँ चीन्हो-परिचय छल । आ जा ई ऑफिस रहैत छलाह, ओकरा सभसँ गप्प कऽ कऽ मोन बहटारि लैत रही । मुदा ई नवका डेरा तँ बूझि लैह जे हमरा लेल पिजरे भऽ गेल अछि । कथीलय चिड़ैयो-चुनमुन्नीक दर्शन होयत । भिनसरसँ भानसे-भातमे जोतायल रहैत छी, साँझोमे

सैह । सोचैत छी जे राति तँ लोकक अपन होइत छैक-रातिमे खूब बतियायब; मुदा ओ जहाँ खा कऽ पड़ैत छथि कि ठरड़ देबऽ लगैत छथि । कथीकं गप्प-सप्प आ कथीक हँसब-बाजब ! सबटा सेहन्ते भऽ गेल ।

हय अंगरेजीफूल, तोँ कथीलय अभागलि रहबह, अभागलि तँ छी हम जे संगो रहि कऽ अपन मोनक किछु नहि कऽ पबैत छी । कहबीयो तँ छैक जे पराधीन सुख सपनेहुँ नाहि । भरि दिन पिपहिया जकाँ हुनकर बाट तकैत रहैत छी जे आब औताह तँ आब औताह आ ज़खन आबि जाइत छथि तँ तेहन बगय-बानि रहैत छनि जे मोन पर अस्सी मोन पानि पड़ि जाइत अछि । तीन मास भेल हमरा अयला आ एखन धरि एकेटा सिनेमा देखि पौलहुँ अछि, सेहो की तँ झरकले सन । हँ, ओतेक काल धरि ओ हमर संगमे रहथि, जागल रहथि, ततबे टा सन्तोख भेल । तोरे सप्पत कहैत छियह अंगरेजीफूल, कोनो चीज एखन धरि अपना लय नहि किनलहुँ अछि । सावा सय दरमाहा छनि, ताहिमेसँ तीस किरायेमे चलि जाइत छनि । जे बचैत छनि ताहिसँ डेरोक खर्च नहि पुरैत रहैत छनि । एहनमे की कीनब आ की मौज करब ? तखन वस्तुमे एकटा नाइलोनक साड़ी किनलहुँ अछि । नीक साया नहि अछि तँ ओहो पड़ले अछि-पहिरब कोना ?

हय अंगरेजीफूल, पटना कतबो पैघ शहर किएक ने रहौक, मुदा देहात आखिर देहाते छैक । जखन जतऽ मोन हो, दौड़ि कऽ चलि जाउ । आ एहि ठाम तँ गर्दमिसान होइत रहैत छैक, लोकक मिस पड़ैत रहैत छैक । सड़क पर चलनाइ हमरा-तोरा लेल हँसी-ठट्ठा नहि । एमहर मोटर पोँ-पोँ कऽ कऽ सर्र दऽ निकलि गेल तँ ओमहर हेँजक-हेँज रिक्शा टनटनाइत रहल । कोमहरसँ कोन छन की आबि जयतैक से कहब कठिन । आ ताहूमे एहि ठामक मौगी सब सराक-सराक चलैत रहैत छैक । कथीलय एकोरत्ती धखायति ! हय, आर तँ आर, एहि ठामक तँ मौगीयो सब साइकिल हँकैत छैक, मोटरो चलबैत छैक । हमरा तँ देखि-देखि परभाच्छय लगैत अछि । हय, ई पटना कतेकटा छैक से की हमरा थाह भेटल अछि जे तोरा लिखियह ? सुनैत छिऐक जे एहि ठाम मारते रास देखबा जोगर वस्तु छैक-से खाली सुनिते टा छिऐक, देखबैक तखन ने ?

अंगरेजीफूल, तोँहूँ जँ एहि ठाम आबि जैतह तँ हमरो मोन हरियर भऽ जाइत; मुदा जाहि हालतमे हम छी, होइत अछि गामे चल आबी, तोरे लग रही, तोरे सङ हँसी-बाजी । हय, गामक परतर की कऽ पाओत ई पटना ? गाम गामे अछि ।

तोँ उदास किएक छह ? की भेलह अछि तोरा से लिखबे ने कयलह । तोरा हमरे सप्पत छह, सब बात फड़िछा कऽ लिखिहह । लिफाफ पठा रहल छियह । आब मोनक बात कहऽमे देरी नहि होयतह । ततेक टा ढड्ढर लिखिहह जे किछु छूटय नहि । तोरा हमरे सप्पत । बुढ़ियाकाकी आ कनियाँकाकीक समाचार लिखिहह । हमरो मायकेँ कहि दिहक जे हमरा लोकनि कुशल छी अपन कुशल लिखैत तोरे- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल,

3 (गामसँ)

तोहर चिट्ठी पाबि कऽ आइ हमरा कतेक खुशी भेल अछि से हमहीं जनैत छी कि भगवाने जनैत छथि । हय, लिफाफ पठा कऽ तों हमर तेहन उपकार कयलह अछि जे ई गुन हम कहियो नहि बिसरबह । ई हमरा जिनगीमे पहिले पहिल भेल अछि जे आइए चिट्ठी आ आइए तकर उतारो लिखी । लिफाफक दाम तँ ततेक बेसी नहिएँ छैक, कतबो निखिद्ध जीवन बितबैत छी, तैयो लिफाफ जोगर पैसा-कौड़ी नहि रहैत अछि से बात नहि । ओ नहियो कमाथु, मुदा हमर थोड़ो-बहुत सौख तँ वैह पुरबैत छथि । मुदा हम लिफाफ अनाबी तँ ककरासँ अनाबी । हय अंगरेजीफूल, हमर लिफाफ मंगायब की कोनो छोट बात छैक एहि घरक लेखेँ ? सभकेँ होइत रहैत छैक जे हम तरे-तऽर तोहर मिसर लेल लिफाफ मङाबऽ चाहैत छी । हय, तोरा सांझेमे ओहि बेर केहन उत्फाल उठल रहैक, से मोन नहि छह ? बिनु दुरागमने ओ हमरा चिट्ठी लिखलनि आ हम चोरा कऽ जे उतारा देलियनि ताहि बातकेँ लऽ कऽ कतेक की भेलैक से बिसरि गेलह ? हम तँ तहिएसँ सप्पत खा लेलहुँ जे मरितो रहब तैयो हुनका चिट्ठी नहि लिखबनि । दू-तीन बेर ओहि ठामसँ भइयो आयल छी । कतेक अर-दर कहैत छथि, मुदा हम गुमसुम सभ किछु सूनि लैत छियनि । पुरनाइयो गेल छी, तैयो आइ धरि चिट्ठी नहि लिखैत छियनि । एहि बातकेँ लऽ कऽ ओ कतेक तमसाइत छथि । किछु कहैत छियनि नहि । मुदा ओहो तेहने अकट्ठी छथि जे हम नहियों उतारा देबनि तैयो ओ चिट्ठी पर चिट्ठी देने जयताह । एतबे भरोस अछि अंगरेजीफूल, गहना-गुड़िया कि पैसा-कौड़ी लेखेँ हम कतबो अभागलि रही, मुदा हुनकर आवेश देखि कऽ करेज जुड़ा जाइत अछि । हमरा सन अभागलिकेँ आर की–चाही ? दू चुटकी सिन्नुर आ स्वामीक सिनेह भेंटैत रहय । भगवानकेँ सभ दिन एतबे कहैत छियनि जे जा जीबी ता ई दुनूटा कायम रहय ।

तों लिखैत छह अंगरेजीफूल जे हम उदास किएक छी, की भेल अछि हमरा ? होयत की ! जे बिनकमौआक बऽहुकेँ होइत रहैत छैक सैह कि ! आइ जँ ओहो डाँड़ गरमौने आबऽ लागथु आ सार सभक संगे औज-मौजमे पैसा लुटाबऽ लागथु तँ हमरो मोजर भेटऽ लागत । मुदा से दिन भगवान हमरा किएक देखौताह ! हय, बूढ़-पुरान लोक कहैत छैक जे कुपुत्र होअय मुदा कुमाता नहि भऽ सकैत अछि । से एक बेर ओ मायकेँ नमस्कार नहि देलथिन तँ मायकेँ तीमन-तरकारी बनबऽमे मोन नहि लगैत देखलिऐक । मुदा जाय देह ई गप्प-सप्प । असली बात यैह जे हम भौजीक लेखेँ काँट बनल छियनि । हुनका सदिखन मोन होइत रहैत छनि जे कहिया मीसर दिन मनाबऽ औताह आ कहिया फूलदाइ सासुरक मुँह देखतीह । हय, ननदिकेँ लोक कहबे करैत छैक जे भाउजक जड़ि लागल रहैत छैक । अंगरेजीफूल, तों हमरा नीक जकाँ जनैत छह, तोंही कहह, हमर सोभाव कि ककरो जड़ि लागऽबला अछि ?

बातमे बात भेलैक यैह जे एकटा फेरीबला आयल रहैक । बड़ सिनेहगर साड़ी आ खतक कपड़ा रहैक ओकरा लगमे । हरल ने फूरल , हम ओकरा बजा लेलिऐक । हमरा तँ ढेउआ-कौड़ी रहय नहि; भेल जे लेब तँ नहि , कमसँ कम आँखियोटा तँ जुड़ा ली, से अनेरे मोल-जोल करैत रहिऐक कि भौजी सिरकीसँ बहार भऽ गेलथिन आ जाहि साड़ीकेँ हम उनटा-पुनटा कऽ देखैत रहिऐक से लऽ लेलथिन आ कहलथिन जे 'ई साड़ी हम लेब ।' हम कहलियनि– अय भौजी, बड़ अतत्तह कयलहुँ, लेबैक छल तँ हमरा कहितहुँ; हम साड़ी सभ लऽ जा कऽ अहाँसँ पसिन्न करा लितहुँ । पुतोह भऽकऽ बहरी आबि गेलहुँ । एतेक अकरहर नहि करी ।'

एतबा कहब छल कि भौजी साड़ी पटकि विदा भऽ गेलीह । बस, ओहि दिनसँ हम जरनियाहि, कलिजुगाहि आ की की ने बनि गेलहुँ । हय अंगरेजीफूल, हम कतेक जरनियाहि छी से तँ भगवाने जनैत छथि । लालभाइ मास्टरी करैत छथि तँ भौजीकेँ सब छजैत छनि । हमरा कथी पर छजत ? एकटा यैह बात भेल रहितैक तँ बातो । कतेक की घमर्थनि भेलैक आ होइत रहैत छैक से की लिखियह ?

तोँ कहबह अंगरेजीफूल, जे सभ अपने बात ढकने जाइत अछि । जाय देह। हम जाहि हालतिमे छी, रहऽ देह । मुदा तोँ जे अपन हाल लिखलह से जानि बड़ दुख भेल । लालभाइ कहैत रहथिन जे ओझा जतऽ काज करैत छथि ततऽ लोक दससँ पाँचे बजे धरि काज करैत छैक । पाँचक घंटी बजैत देरी लोक औफिससँ बहार भऽ जाइत छैक । तखन ओझा एना किएक करैत छथि ? हय, सुनैत छिऐक जे पटना तेहन शहर छैक जे लोकक ठेकान नहि रहैत छैक । तोँ, कने नीक जकाँ ओझा पर नजरि रखिहह । कहीं ओ संगी-साथीक फेरमे ने पड़ल रहैत होथुन ।

अंगरेजीफूल, तोँ हमरा दिससँ ओझाकेँ कहि दियऽहुन-हमरा ओ बिसरैत नहि छथि । कहियऽहुन जे ओ हमर अंगरेजीफूलकेँ साग-भाँटा कि गाय-महींस नहि बूझथि । तोरा हमरे सप्पत अंगरेजीफूल, तोँ हमर ई चिट्ठी ओझाकेँ देखा दियऽहुन। ओ औफिससँ सोझे डेरा आबथु-ओ सदिखन ई मोन राखथु जे डेरा पर हुनकर केओ बाट तकैत होयतनि । तोरा सप्पत छह हय, हमर ई पाँती ओझाकेँ अवस्से पढ़ा दियऽहुन । बुढ़ियाकाकी आ माय नीके अछि । तोहर माय कुशलसँ छथुन । चिट्ठी पबैत देरी उतारा दिहह । ओझाक हाल-समाचार लिखिहह, पटनाक आरो-आरो गप्प सब लिखिहह । तोरा हमरे सप्पत । चिट्ठी लिखिहह । तोहर– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **4 (पटनासँ)**

बड़ विलम्बसँ उतारा दऽ रहल छियह । माफ करिहह । तोहर सब बात बूझि कऽ बड़ दुख भेल । तोरामे जरिनियाहिक रेखो कथीलेल रहतह ! तोँ भौजीकेँ कतेक मानैत रहलहुन अछि से हम कोना बिसरब ? ओहिना मोन अछि, हमर मीसर तोरा

लेल एही ठामसँ नव काटक चूड़ी लऽ गेल रहथुन । मने ओ एहि ठाम नोकरीक कोनो पैरवीमे आयल रहथि । हम ता गामे रही । भौजीकेँ ओ चूड़ी देखि, रहल नहि गेलनि । कहलथुन-फूलदाइ ! मीसर बड़ स्वार्थी छथि, खाली अपने लोकवेदलय नीक वस्तु अनैत छथि ।' आ तोँ एतबा सूनि ओ चूड़ी हुनके दऽ देलहुन । हम कतबो इसारा कयलियह, कतबो मना कयलियह, कतबो चोर जकाँ बुझा कऽ कहलियह जे मीसरकेँ ततेक पैसा-कौड़ी नहि रहैत छनि जे बेर-बेर एहन वस्तु अनथुन; मुदा तोँ मानलह नहि । भौजी उपरका मोने नहि-नहि कहिते रहलथुन, मुदा तोँ जबर्दस्ती हुनका पहिराइये देलहुन । हमरा ओहिना मोन अछि, प्रात भेने खाइत काल मीसर उपराग देने रहथि । कहने रहथि-अहाँक अंगरेजीफूल सोझे अलबौक छथि । लोकक सिनेहकेँ किछु नहि बुझैत छथिन । हम कतेक आवेशसँ चूड़ी लेने रही जे हुनका हाथमे एहन लगतनि तँ ओहन लगतनि-देखबैक जे बाहरमे ई चूड़ी केहन लगैत छैक आ हुनका हाथमे पड़ि कऽ केहन लगतैक, से देखबाक सेहन्ते रहि गेल ।' मीसर ई कहि उदास भऽ गेल रहथि आ फेर बाजल रहथि-मानिक पड़ल कुबानिक हाथ।

हय, हम तखने बुझलिऐक जे अपन पुरुखक आनल वस्तु ककरो अनका नहि दिऐक । मीसरक ओ उदास मुँह हमरा एखनो नहि बिसरैत अछि । चूड़ी तँ कोनो तेहन वस्तु नहि भेलैक मुदा मीसर जाहि अभिलाषासँ लेने रहथि से पूर नहि भेलनि । ई छोट बात नहि कोनो माउगिक लेल । ओकरा जे फुरौ से करौक, मुदा स्वामीक सिनेहकेँ सदिखन बुझैत रहौ । आ से तोँ अपन स्वामीक आवेशकेँ तऽह दऽ कऽ भौजीक मोन रखलहुन आ आब वैह भौजी तोरा जरनियाहि कहैत छथुन !

की करबहक अंगरेजीफूल, दुनियाँ एकरे कहैत छैक । तोरा कि जिनगी भरि ओही ठाम रहबाक छह ? मीसर कतबो नहि कमाथु मुदा एक्के बेर तेहन बात नहि छनि जे ओ अपना लोकवेदकेँ पोसियाँ लगौने रहथि । नीक दिन अयला पर विदागरी करयबे करथुन । तोँ कोनो दुख नहि करह । जखन नल राजाकेँ सेहो दिन घुरलनि, तँ तोँ किं सब दिन एहिना रहबह ? हम हिनका कहलयिनि अछि जे मीसरकेँ चिट्ठी लिखि कऽ बजा लियनु । गाम परसँ नोकरी-चाकरीक की पता लगतनि । एहि ठाम आबि किछु दिन रहताह तँ पता लगौताह, पैरवी लगौताह-भगवान किछु ने किछु करबे करथिन । तोरा हमरे सप्पत छह । अंगरेजीफूल, तोँ कथुक दुख नहि करह । भगवान सभकेँ देखैत छथिन । उजड़ल घर बसबैत छथिन ।

अपन हाल हम की लिखियह ! हम तोहर चिट्ठी पढ़ा देलियनि । भभा-भभा कऽ हँसऽ लगलाह । बजलाह-अहाँक अंगरेजीफूल मामूली माउगि नहि छथि । ओ छथि रानीविक्टोरिया ! विवाहक बादसँ हम हुनके राजमे बसैत आयल छी । वियाहोक बेरमे हमरा पर हुनकर खूब हुकूमति चलैत छलनि, बादोमे चलिते रहलनि, एखनो चलिये रहल छनि । हम सभ दिन हुनकर हुकुम मानैत आयल छियनि, तँ आब कोना

नहि मानबनि ? बेस तँ आइसँ दस बजेसँ पाँच बजे धरि किरानी आ तकरा बादक समयमे बोहुक आँचरक छाहरिमे रहनिहार सुपुरुष । मुदा बादमे जँ अहाँकेँ केओ कलंक देअय जे अपन साँयकेँ भेड़ा बना कऽ रखने अछि तँ हमरा दोख नहि देब।' एतबा कहि ओ फेर भभा-भभा हँसलाह ।

हम कहलियनि-पुरुखकेँ खाली हँसिये रहैत छैक कि ? हमरा जे एहि ठाम पिजरामे आनि कऽ राखि देने छी-से हम की सूगा छी जे पाकल तिलकोड़ टोङैत रहब आ अछाहे राम-राम रटैत रहब ? हमहूँ मनुक्ख छी, हमरो मनुक्खक सङ चाही।'

ओ चोट्टहि बजलाह-सूगा तँ छीहे, फूलदाइ जे पाठ पढ़बैत छथि सैह रटऽ लगैत छी । देखाउ तँ एकोटा पुरुखकेँ जे खाली बोहु आ औफिसेमे जिनगी काटि दैत होअय ? पुरुख दस गोटेमे रहैत अछि, दस रंगक लोकसँ बतियाइत अछि । औफिससँ छुट्टी भेला पर कने एमहर-ओमहरक गप्प-सप्प कयलक, कने घूमल-फीरल, तखन डेरा आयल । अहाँकेँ से पसिन्न नहि अछि तँ आब संगी-साथी सभसँ कट्टिस कऽ लैत छी आ सोड़हो आना अहींकेँ संगी मानि लैत छी । भेल आब?

ओहि दिन ओ एतबा कहि देलनि आ दस-पन्द्रह दिन धरि औफिससँ सोझे घरे अबैत रहलाह । हय अंगरेजीफूल, जाहि दिन दरमाहा भेटलनि ताहि दिन अजगुत काज कयलनि जे एखनो परभाच्छय उठैत अछि । कयलनि की तँ उँचका एँड़ीवला चप्पल किनने अयलाह । हम पुछलियनि-ई ककरा लेल छैक ?

बजलाह-विक्टोरियारानीक अंगरेजीफूल लेल ।

हम कहलियनि- हम की मेम छी जे ई पहीरि कऽ खुटुर-खुटुर चलब ? हमरा बुतेँ ई पहिरब पार नहि लागत ।

ओ बजलाह-हम तँ किसुनभोग आम छी, गोड़ल रहब, तेँ अहीँ आब कने पटनिआ चरफर बनि जाउ । दुनू गोटे संगहि घूमब ।' हम कहलियनि-सोझुक्का चट्टी पहीरि नहि घूमल जा सकैत छैक ?' ओ कहलनि-लोक गमार बूझत ।' हय अंगरेजीफूल, चट्टी तँ पहीरि लेलहुँ मुदा कतेक भटका खसलहुँ से की कहियह । एखनो घरेमे हिस्सक लगा रहल छी । देखी, चलऽ अबैत अछि की नहि ?

अंगरेजीफूल, की कहियह ? हिनका मोनमे ई बात बैसि गेलनि अछि जे हिनकर बाहर रहब हमरा अखरैत अछि, तँ आब ई हमरे बाहर कऽ कऽ रहताह । की करी, की नहि, से किछु नहि फुराइत अछि । ई सब बात हमरा अनकट्ठल लगैत अछि, मुदा हुनकर मोन कोना तोड़ियनि ? एहि बीचमे आरो मारते रास बात सभ भेलैक अछि, से पाछाँ लिखबह । आब ई हुरकूचि रहल छथि, सैह बूझि लैह । गाम-घरक हाल-चाल लिखिहह । तोरा हमरे सप्पत, अपनो हाल-समाचार लिखैत रहिहह । फेरो लिफाफ पठा रहल छियह । तोहर- **अंगरेजीफूल**

तोहर चिट्ठी बहुत पहिने भेटि गेल छल, मुदा लगले उतारा नहि दऽ सकलियह । बात ई भेलैक जे तोहर मीसर आबि गेल रहथुन । हुनके परिचर्यामे रहऽ पड़ैत छल तेँ पलखति नहि भेटैत छल जे चिट्ठी लिखितियह । तोँ तँ जनिते छह जे तोहर अंगरेजीफूलकेँ लिखऽ-पढ़ऽमे कतेक उजियाइत छैक । ईहो जे लिखि रहल छियह से तीन दिनक नेयार-भासक बाद । तोँ कहबह जे माय आ भौजीक अछैत तोँहीँ किएक हुनकर परिचर्यामे लागल रहलहुन ? बात ई भेलैक जे मायकेँ तेहैया जऽर धऽ लेने छलैक, ओ तेहन दुक्खित भऽ गेलि छलि जे किछु कयनाइ पार नहि लगैत छलैक ओकरा बुतेँ । आ भौजीकेँ तँ तोँ जनिते छहुन । ओ तँ सब दिन अपनाकेँ कमौआक बोहु बुझैत रहलीह अछि तेँ आश्रमक काज लेल हाथ-पयर हिलयबामे हुनका हेठी बुझाइत रहलनि । आ आइ-काल्हि तँ आर बहन्ना भेटि गेल छनि, बेस दुलारू बनलि रहैत छथि ।

हय अंगरेजीफूल, तोरा ई जानि कऽ खुशिये होयतह जे भौजीकेँ बाँझीक पद छूटि रहल छनि । नव हाल-समाचार छनि । फागुन धरि जा कऽ लालभाइ बेटा-बेटीक बाप कहौताह । माय भारते रासे कबुला-पाती कयने छैक जे शुभ-शुभ कऽ वंश चलब शुरू होअओ । पोता-पोतीक मुँह देखऽ लय माय बेकल भेलि रहैत अछि । सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, हमरो बच्चाकेँ देखबाक बड़ सेहन्ता लागल अछि, मुदा अपना इच्छे कयने की ?

तोहर मीसर एहि बेर ओहिना नहि आयल रहथुन । आयल रहथुन विदागरीक लेल दिन मनाबऽ । माय कतबो कहबौलकनि जे फागुन धरि रहऽ दियौक, बैसाखमे लऽ जयबैक । लालभाइ सेहो कतेक बुझौलथिन-सुझौलथिन, मुदा ओ मानलथिन नहि। एकदमसँ बूझऽ जे अड़ले रहि गेलथिन । रातिमे हमरो गप्प भेल । हमहूँ कहलियनि-एतेक दिनसँ सूतल छलहुँ आ जखन एहि ठाम समाङक काज छैक तँ अहाँकेँ विदागरी फूरल अछि । की होयतैक, हम बैसाखेमे जायब तँ ?

ताहि पर ओ की बजलाह से जनैत छह ? बजलाह जे गरीब लोकक पुछारि लोक बेरे पड़ला पर करैत छैक ।' हमरा तँ हुनकर ई गप्प सूनि जेना ठकमूड़ी लागि गेल । भेल जे हम तँ हिनका कहियो किछु नहि कहलियनि तखन ई कोना बूझि गेलथिन जे हम नैहरमे दुखी रहैत छी, एहि ठाम हमर अनादर होइत अछि । कनेक कालक बाद कहलियनि-हमरा की एतऽ कोनो तकलीफ अछि ? भरि पेट खाइत छी, भरि दिन घुमैत छी । ओहि ठाम जा कऽ तँ हम पिजरामे बन्न भऽ जायब ।

ओ बजलाह-ओहि ठाम अहाँकेँ के रखैत अछि पिजरामे ? की हमर माय ? हमर माय तँ तेहन नहि अछि जे अहाँ पर शासन करत, अहाँकेँ सँसने रहत । ओ तँ

अहाँकेँ अपन बेटियोसँ बढ़ि कऽ मानैत अछि । देखाउ तँ कोनो सासुकेँ जे अपन पुतोहुक लेल एतेक हिलसगरि हो ?

अंगरेजीफूल, ओहि घड़ीमे हम अपनाकेँ कतबो सम्हारलहुँ, कतबो बन्हलहुँ, मुदा आँखि हमर कहल नहि ने मानलक । कोंढ़ फाटि गेल, भट-भट नोर झहरऽ लागल । नोरायल आँखिएँ हम अपन बितलाहा दिनक दृश्य देखऽ लगलहुँ..........। सासुरमे उपासक स्थिति कतेको बेर अयलैक, मुदा हमर सासु कहियो हमरा भूखल नहि सूतऽ देलनि । हमरा आ हुनका लेल कोनो ने कोनो धरानिसँ ओरियान कैये लेथि, अपने बरु उपासले पड़ि रहथि ।

हमरा एना हबोढकार भेल देखि ओ पुछलनि-की भेल अहाँकेँ ? हम तँ कोनो अवाच्य-कथा नहि बजलहुँ । जँ नैहरसँ बड़ मोह हो तँ रहू एत्तहि; हम अपन मोनकेँ मना लेब, मायोकेँ बुझा देबैक ।

हुनकर देवता सन व्यवहार आ बोली सूनि रहल नहि गेल हमरा । हम कहलियनि-जँ माय हमरा अपना लग बजौतीह तँ हम कोना हुनकर बात कटबनि, चलब हम ।

ओ हँसऽ लगलाह, हँसैत-हँसैत बजलाह-आइ अहाँ अपना हाथक भानस बना कऽ कतेक दिन पर खोऔलहुँ; प्रायः छौ मास पर, मुदा तीमन-तरुआ सोअदगर होइतो हमरा बढ़ियाँ नहि लागल; आइ तँ अहाँक हाथसँ हम मधुर खाय लेल आयल छी ।' एतबा कहि ओ उठलाह आ जेबीसँ रुमालक पोटरी बहार कऽ कऽ मधुर निकाललनि। दूगोट पेड़ा रहैक । एकटा पेड़ा हमरा हाथमे दऽ कऽ कहलनि-खुआ दियऽ ।

हम चोट्टहि पूछि देलियनि-से की बात थिकैक आइ ?

मुस्कियाइत ओ बजलाह-आब अहाँ बेरोजगारक घरवाली नहि छी, आब अहाँक स्वामी गामेक स्कूलमे मास्टर भऽ गेल छथि ।

ई सूनि हमरा ततेक खुशी भेल जे लाज-धाख सबटा बिला गेल । हम चट्ट दऽ पेड़ा हुनका मुँहमे धऽ देलियनि । मुदा तकरा बाद ओ अपना हाथक पेड़ा हमरा मुँहमे जे कोंचलनि से की कहियह । ओहन खुशीक क्षण हमरा जिनगीमे पहिले-पहिल /आयल छल ने !

हय अंगरेजीफूल, एहि चिट्ठीमे सबटा बात हम अपने कहि गेलियह । बड़ स्वार्थी छी हमहूँ हय ! मुदा तोँ तँ अपन छह । भरोस अछि जे माफ कैये देबह । एही अगहनमे हम सासुर चल जायब । आब ओतहिसँ चिट्ठी-पत्री करिहह । हम ओझाकेँ मोन छियनि से हमर बड़ भाग ! हमर बात ओ मानलनि से जानि हरखक ठेकान नहि रहल, छाती जुड़ा गेल । मुदा तोरा ओ मेमिन बनाबऽ चाहैत छथुन से बात हमरा पसिन्न नहि अछि । हय, बाहर घूमब, बाहरक लोकसँ बाजब-भूकब ततेक

अधलाह नहि, मुदा अपन चालि-व्यवहार छोड़ब, अपन परिवार ओ जातिक मर्यादा तोड़ब नीक लोकक काज नहि । हय, कहलकैक नहि जे खंजन चलली बगड़ाक चालि तँ अपनो चालि बिसरि गेलीह, तँ तकर परि नहि होअह, से धरि सदिखन मोन रखिहह । तोँ ओझाकेँ नीक जकाँ बुझबियऽहुन । हमरो नाँओं कहियऽहुन । तोरा हमरे सप्पत, एहि चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । जायसँ पहिने एक बेर तोहर कुशल-क्षेम बूझि ली । तोरा हमरे सप्पत, जल्दी उतारा दिहह । तोहरे-- **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **6 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी समये पर भेटल छल । सभ बात बुझलियह । जल्दी चिट्ठी नहि देलियह एहि दुआरे जे हम आइ-काल्हि अपने बड़ अपस्याँत रहैत छी । ने जानि ई चिट्ठी तोरा जायसँ पहिने भेटतह कि नहि भेटतह ।

हय, हम ई बुझैत छिऐक जे नैहर कतबो अधलाह रहौक मुदा ओ होइत छैक नैहरे-जनमस्थान । के एहन अभागलि माउगि होयत जकरा बुढ़ारियो वयस धरि नैहर पर मात्सर्य नहि रहैत होयतैक । तोँ जे अपन हाल लिखैत रहलह ताहिसँ हम यैह बुझलिऐक जे टका-पैसा सभ दुखक जड़ि थिकैक । आ सत्ते, छैको सैह बात । आब मीसर नोकरी धयलथुन अछि ने ! देखि लिहह आब जे तोँ अयबह तँ कतेक की मानदान होइत छह ! इह जाहि दिन तोहर चिट्ठी भेटल आ पढ़लहुँ जे मीसरकेँ मास्टरी भऽ गेलनि अछि, हम तँ खुशीसँ बताहि भऽ गेलहुँ । सत्ते कहैत छियह, तोहर नैहर छुटबाक एकोरत्ती दुख नहि भेल अछि हमरा । होयबे किएक करैत ! हमर अंगरेजीफूल नैहर छोड़ि कतहु कुठाममे थोड़बे जायति ? एहन दिन भगवान सभकेँ देखबथुन । स्त्रीगणकेँ तँ विधाता जाहि गाछक आश्रय लगा दैत छथिन ओही गाछक छाहरिमे सभ सुख भेटैत छैक । सागे-भात, कऽने-खुद्दी जुड़ौक आ कि पानियेँ पीबि कऽ दिन खेपि लेअओ, अपना लोकक सङमे रहने सब दुख बिला जाइत छैक । बूझऽ तँ एतेक दिन तोरा दुनू प्राणीकेँ अधलाहे बितलह । तोँ एमहर नैहरमे झखैत रहलह आ मीसर ओमहर अपना गाम पर । आब भगवान तोरा सभकेँ नीक दिन देखा रहल छथुन से जानि हम ततेक खुशी भेलहुँ जे हमरा अपन दुख एकदम हल्लुक बुझाय लागल । आब तोँ मीसरक संग रहबहुन एहिसँ बढ़ि कऽ कोनो माउगिकेँ जिनगीमे आर कोन सुख चाही ?

तोँ कहबह जे हमर अंगरेजीफूल बड़का शहरमे रहैत अछि, राजधानी पटनामे रहैत अछि, आ हम रहैत छी एहि गाम-देहातमे; पटनाक सुख-सुविधा गाममे कतऽ पाबी ? मुदा सत्त पूछह तँ अंगरेजीफूल, गूड़क मारि धोकड़िये जान । तोँ तँ बेर-बेर लिखबो कयलह जे एक बेर देखितिऐक पटनाकेँ । पटना देखऽ लेल तोहर मोनो औनाइत रहलह अछि । मुदा हय अंगरेजीफूल, जेना-जेना दिन बीतल जाइत छैक,

तेना-तेना हम चिन्हने जाइत छिऐक एहि पटनाकेँ , दूरक ढोल सोहाओन । हय, पैघ-पैघ घर, रंग-विरंगक मोटर-गाड़ी, चिक्कन-चुनमुन मुँह-कान आ लहक-चहक, पहिरन-ओढ़न जे रहौक एतुक्का लोककेँ, मुदा बूझि लैह जे तऽरे तर हकन्न कानि रहल अछि एतऽ सभ । ठोर पर मुस्की आ कोंढ़मे दलकी एतहि भेटतह तोरा । जहिना एहि ठाम शुद्ध घी-तेल आ भोजन-छाजन भेटब सेहन्ता भऽ गेल अछि, तहिना शुद्ध जिनगी बितायब सेहो सपने भऽ गेल अछि । सबमे फेंटफाँट । सब किछु बनौअलि। असली कतहु तकनहुँ नहि भेटतह । हय, बड़ सुन्दर तँ बुढ़ियाकाकी एकटा कहबी कहैत छथिन-देखैत-सुनैत महकारी आ तऽरमे बीया कारी, तँ सैह अछि ई पटना । ऊपरसँ देखैत बड़ दीब, बड़ सोहनगर मुदा भीतरमे अगबे फूसि-फटक आ छल-प्रपंच भरल छैक । हय, कहाँ धरि कहियह, ममता आ सिनेह सन वस्तुमे सेहो कपट सन्हिआयल रहैत छैक एतऽ । अपन सप्पत कहैत छियह अंगरेजीफूल, एखनो धरि अपना सभक गाम एहि फूसि-फटकसँ बाँचल अछि । एतऽक महिरम तँ एतऽ रहनिहारे बूझि सकैत अछि, से तोहर अंगरेजीफूल नीक जकाँ भोगि रहल अछि ।

तोँ कहबह अंगरेजीफूल, आइ हम बताहि जकाँ किएक चिट्ठी लिखि रहल छियह । हय, हम बताहिये भेल रहैत छी आइ-काल्हि । एक चुटकी सिनुरक बदलामे जकरा हम अपन सभ किछु दऽ देलिऐक, अपन मानि लेलिऐक, तकरा लेखेँ हम एकटा गमारसँ बेसी आर किछु नहि छी हय । कतेक की लिखियह । तोरा मोने होयतह अंगरेजीफूल, पछिला चिट्ठीमे लिखने छलियह जे ओ हमरा उँचका एँड़ीबला चप्पल आनि देलनि, जकरा पहिरबाक हिस्सक लगा रहल छी । से ओ हमरा लेल काल भऽ गेल हय ! हय अंगरेजीफूल, ओहि दिन भेलैक की, तँ, ओ हमरा कहलनि-चलू आइ वैह चप्पल पहीरि कऽ घूमऽ ।

हमरा अनसोहाँत लागल जे, जे वस्तु हम कहियो नहि पहिरलहुँ से पहीरि कऽ कोना बाहर होउ । कहलियनि-एखन हिस्सक कहाँ लागल अछि जे पहिरब ।' ओ आँखि गुराड़ि कऽ हमरा दिस तकलनि । हुनकर ओ आँखि हमरा एकदम अनभोआर लागल । कोंढ़ दलकि उठल हमर । तैयो अपनाकेँ सम्हारि हम मुस्कियाइत कहलियनि-सत्तेमे अहाँ हमरा मेम बनबऽ चाहैत छी ?

ओ गोँहछैत बजलाह-नहि पहिरबाक छल तँ पहिनहि कहि दितहुँ । हम कोनो राजा-महराज तँ नहि छी जे बेबाइली टका खर्च करैत रहब ।

अपन कोनो दोख नहि देखि हमरा रहल नहि गेल । हमहूँ कहि देलियनि-मेम बनाबऽलय तँ राजे-महराज एना भऽ कऽ टका खर्च कऽ सकैत अछि ।

आब बूझऽ जे, अंगरेजीफूल, ई बात हुनका लागि गेलनि । बजलाह किछु नहि, कपड़ा पहीरि चुप्पे विदा भऽ गेलाह । जाहि फुरतीसँ ओ अंगा-जुत्ता पहिरलनि

आ हमरा दिस बिनु तकनहि विदा भेलाह, हम बूझि गेलहुँ जे ई हुनकर तामसक एकटा रूप थिकनि । ओहि दिन हुनकर तामससँ पहिले-पहिल भेट भेल हमरा । ओहि दिन रवि छलैक तेँ पहर भरि दिन अछैते जे ओ गेलाह से कते राति बितला पर अयलाह आ तकरा बादसँ अयबा-जयबाक कोनो ठेकाने नहि रहलनि अछि ।

हय अंगरेजीफूल, तहियासँ ओ हँसैत छथि,बजैत छथि, सभ काज करैत छथि मुदा हमरा बूझि पड़ैत अछि जेना हुनकर मोने बदलि गेलनि अछि । हय, सत्त कहियह तँ ओ आब पहिलुका ओ नहि छथि-मने ओ जे किछु करैत छथि से उपरका मोनसँ करैत छथि । सदिखन हनछिन-हनछिन, मोन कतऽ दन उड़ल जकाँ । हुनका देखि किछु फुराइते नहि अछि । भरि दिन भरि राति गुनधुन करैत रहैत छी । की करी से किछु फुराइये ने रहल अछि हमरा ? हमरा सन्देह होइत अछि जे पटनियाँ मौगी सभक लहक-चहक, साज-सिङार हुनका मोनमे कोनो भूख तँ ने जगा देलकनि अछि ?

तोँही कहह अंगरेजी फूल, हम जे नहि छी से कोना बनि सकैत छी ? कोना पार लागत हमरासँ ? हमरा ततेक ज्ञान नहि जे हुनका बुझा सकियनि । हुनका के बुझौतनि जे बहुक मर्यादा बहुए बनल रहने रहैत छैक, मेम बनने नहि । ई अपन दुख हम ककरा कहियौक ? की करी की नहि, किछु फुराइते नहि अछि ?

हय अंगरेजीफूल ! तोँ जे लिखलह जे हमर मेम बनब तोरा पसिन्न नहि छह-से की हमरा पसिन्न अछि ? मुदा हुनकर सिनेह पयबा लय हम सभ किछु करबाक लेल तैयार छी । ओ शुद्ध मोनसँ कहि देथु तँ हम आगियोमे कूदऽ लेल तैयार छियनि । मुदा हुनकर मोन आब शुद्ध रहलनि कहाँ ? ओ हमरासँ चाहैत छथि की, सेहो तँ फड़िछा कऽ कहथु ! हय, बताहिक कहल-सूनल माफ करिहह । सदिखन मोन करैत रहैत अछि जे तोँ जँ भेटितह तँ तोहर गऽर धऽ भरि इच्छा कानि लितहुँ । मुदा तोँ भेटबह कहाँ ? जतऽ कतहु होअह, चिट्ठीक उतारा दिहह । तोरा हमरे सप्पत । तोरे बताहि- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **7 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी जा अयलह ता हमरा एतऽ आबि जाय पड़ल । सात दिन धरि चिट्ठी गाममे पड़ल रहि गेलैक । काल्हि माय गेनमाक हाथेँ एतऽ पठा देलक । हम तँ पहिनेसँ लिफाफ मङा कऽ राखि लेने रही जे तोहर चिट्ठी पबैत देरी उतारा दऽ देबह । मुदा नहि जानि तोँ चिट्ठी लिखऽमे देरी किएक कयलह ?

हय अंगरेजीफूल, तोँ जे एबरी चिट्ठी लिखलह से पढ़ि-पढ़ि हमरा बुकौर लगैत रहल । तीन-चारि बेर हम चिट्ठी पढ़ि गेलहुँ, कतेक काल धरि सोचैत रहलहुँ जे एहन बेरमे तोरा की लिखियह आ की नहि लिखियह । एखनो किछु फुरा नहि रहल अछि । बिधना स्त्रीगणकेँ कोन हाथेँ बनौलथिन से नहि जानि ? मौगी अपन

पुरुखक आगाँमे अपन कोँढ़ो-करेज बहार कऽ कऽ राखि दौक, मुदा पुरुखकेँ ओकरासँ सन्तोखे नहि होइत छैक । हय ! बड़ अभागलि होइत अछि मौगीक जाति। नेना रहओ तँ माय-बापक आश्रयमे रहऽ पड़ैत छैक, जुआन भऽ जाओ तँ स्वामीक खुट्टामे खुटेसल रहओ आ बूढ़ भेला पर बेटा-पुतोहुक मुँह धयने रहओ । जँ एको रत्ती एमहर-ओमहर भेल तँ फज्झतिक तऽर । स्त्रीगणक कपारपर विधाता एहन भोथहा कलम घसने रहैत छथिन जे कलपिते बितैत छैक जिनगी हय ! चरिदिना सुख तँ सभक जिनगीमे अबिते छैक, मुदा ओकरे सुमरि-सुमरि कऽ एहन पहाड़ सनक जिनगीकेँ कोना काटल जा सकैछ ?

अंगरेजीफूल ! तोँ बुझैत होयबह जे एहि ठाम सासुर आबि गेने हम बड़ सुखी भऽ गेल होयब, बातो ठीके छैक । हमरा एहि ठाम कथुक दुख नहि अछि । ने मोनक ने देहक । माय हमरा लय जान दऽ रहल छथि । माय मने हमर सासु । मौगीक सोभाव होइत छैक जे ओ परोच्छमे अपन सासुकेँ बूढ़ी-बुढ़िया कहैत अछि । हम जखन से सुनैत छिऐक तँ बड़ कोनादन लगैत अछि । दुख आ तामस दुनू होइत अछि । एँ हय! कहऽ तँ, जे स्त्रीगण ओकर स्वामीक जन्म देनिहारि तनिका बूढ़ी किएक कहल जाय ! ई तँ अनादर भेलैक किने हय ! हम परोच्छोमे बूढ़ी किएक कहबनि ? ओ हमर पूज्या छथि, माय छथि । से, जेँ हुनका प्रति हमर मोनमे एहन आदर भाव अछि तेँ ने ओ हमरा अपन बेटियोसँ बढ़ि कऽ बुझैत छथि आ मायक ममता दैत छथि । जँ दुनू दिससँ एक दोसराक लेल सिनेह आ मोनमे त्यागक भाव रहतैक तँ मोनमोटाओ किएक होयतैक, कलह किएक बढ़तैक ?

हमरा दुनू सासु-पुतोहुक सिनेह-भावकेँ देखि कौखन-कौखन ओ चौलो कऽ बैसैत छथि । ओ मायकेँ कहैत छथिन– माय, हमरा सदिखन होइत अछि जे ई घर सासु-पुतोहुक सम्बन्ध जनिते नहि अछि । जँ झोँटा-झोँटौअलि आ कहा-सुनी नहि भेल तँ फेर सासु-पुतोहुक सम्बन्धे की भेल ? बूझि पड़ैत अछि, तोँ पुतोहुकेँ नोन पढ़ा कऽ तँ ने खोआ देलही अछि ।

माय उतारा दैत छथिन-हओ बौआ ! हमर पुतोहु गाय थिकीह, साक्षात लक्ष्मी थिकीह । झोँटा-झोँटौअलि, उतरा-चौरी होइत छैक ओहि आङनमे जतऽ स्वार्थी लोकक अमार लागल रहैत छैक । हमर पुतोहु सन त्यागी के होयत ?

हय, हमरा प्रति माय एहन आवेश रखैत छथि तेँ हुनको मोन हमरा पर एहेन भऽ कऽ जमल रहैत छनि । हुनकासँ जे सिनेह भेटि रहल अछि, जेना ओ हमरा मानि रहल छथि, भगवानकेँ उठैत-बैसैत जगैत-सुतैत कहैत रहैत छियनि जे भगवान सभ दिन एहने बनौने रहथु । हमरा कोठा-सोफा नहि चाही; गहना-गुड़िया, रेशम-पटोर की खोआ-मलिद्दा सेहो नहि चाही । हमरा चाही एतबे जे अपन लोकक सिनेह भेटैत रहय, अपन लोक सदति अपन बनल रहय । हय, एहिसँ बढ़ि कऽ कोन सुख छैक एहि दुनियाँमे ?

मुदा की कहियह अंगरेजीफूल ! जखनसँ तोहर ई चिट्ठी भेटल अछि, कोँढ़ दलकऽ लागल अछि, । मनुक्खक स्वभावकेँ कखन की भऽ जायत तकर कोनो ठेकान नहि । हमरा ओहिना मोन अछि, ओझा तोरा कतेक मानैत छलथुन, कतेक सिनेह छलनि तोरा प्रति । एक बेर हुनकर मोन गमऽ लेल हम झुट्ठे-फुस्सं कहने छलियनि- ओझा ! अंगरेजीफूलकेँ सोझ नहि बुझिऔक, ओ बेस उड़ाँत अछि, एक खुट्टा पर बन्हा कऽ रहऽवाली गाय नहि अछि ओ ।

एतबा कहि हम चुप्प भऽ गेलहुँ, तरे-तऽर मुस्कियाइत हम हुनकर मुँहकेँ तजबीज करऽ लगलियनि । की कहियह अंगरेजीफूल, हमर बात सुनिते जेना हुनकर मुँह तमतमा गेलनि, आँखि रङि गेलनि । बजलाह किछु नहि ।

हम फेर चुटकी लैत कहलियनि-ओझा ! तमसाइ नहि, खाली नजरि रखबैक, आँकुस दैत रहबैक, सभ ठीक रहत ।' ओझा लोहछैत बजलाह-अहाँ हुनकर अंगरेजीफूल होयबाक योग्यता नहि रखैत छी । गंगा सन पवित्र अपन संगीक प्रति एहन कथा बजबामे अहाँकेँ कनेको संकोच नहि भेल ?' हम ठहक्का लगौलहुँ । कहलियनि-ओझा ! अहाँक मोन टोबऽ लेल हम फुसिये बजलहुँ । हमर अंगरेजीफूल जाहि दिन एहन भऽ जायति, हमरा अहाँ एहि दुनियाँमे नहि देखब ।' तँ ओ चोट्टहि बाजि उठलाह-तँ की हमरा केओ देखि सकत ? अहाँक अंगरेजीफूलक चरित्र पर जे आङुर उठाओत से एक नम्मरक गदहा होयत ।

हय अंगरेजीफूल ! जाहि ओझाकेँ तोरा पर एतेक विश्वास छलनि जे तोहर प्रशंसा करैत अघाइत नहि छलथुन, तनिका आइ की भऽ गेलनि ? तोँ जे लिखलह अछि, से, ठीके ? पटनियाँ मौगी सभ हुनक मोनकेँ की कऽ देलकनि हय ! मोन होइत अछि, एक बेर देखितिऐक ओहि धोंछिया सभकेँ तँ मारि बाढ़निसँ सोझ कऽ दितिऐक । तोहर चिट्ठी हम हुनको पढ़ा देलियनि अछि । ओ कहलनि जे हम एक बेर पटना जाइत छी, तखन बुझबैक जे की बात छैक ?

अंगरेजीफूल ! धैर्यसँ काज लेने जाह आ ओझा पर नजरि राखह । अपन इज्जति-मर्यादाकेँ किन्नहु नहि त्यागह । चारि अच्छर अंगरेजी पढ़ि लेने आजुक पुरुख-पातकेँ अंगरेजिया भूत धऽ लैत छैक । मुदा अंगरेजीफूल ! तोँ हमर बातकेँ गीरह बान्हि लैह जे तोँ अपन व्यवहारसँ कखनहु पाछू नहि हटिहह । ओझाक प्रति अपन सिनेहमे कोनो कोताही नहि करियऽहुन । तोँ देखिहह, ओझाकेँ एक ने एक दिन तोहर सिनेहक आगाँ झूकहि पड़तनि । ताहि दिन तोँ हमर अजुका कहलकेँ मोन पाड़ि लिहह । जल्दी-जल्दी चिट्ठी लिखिहह । तोरा लय बड़ मोन लागि गेल अछि। तोरा हमरे सप्पत, चिट्ठी पबैत देरी उतारा दिहह । तोहर- **अंगरेजीफूल**

तोहर चिट्ठी भेटल छल । उतारा देबऽमे जे देरी भऽ गेल से तोँ तँ बुझिते होयबह । मोन स्थिर रहैत छैक तँ सभ काज उजियाइत छैक । हमर मोन कतऽ उड़ल रहैत अछि आ भरि दिन हम की करैत छी, से अपनो नहि बुझैत छिऐक । नेयारैत-नेयारैत आइ कतेक दिन पर चिट्ठी लिखऽ बैसल छी । की लिखैत की लिखा जायत से भगवतिये जानथि । कहिया आयल चिट्ठी ? दिन पनरहेक भेल होयतैक । कोना बितलैक ई पनरह दिन आ एहि बीचमे कतऽ की भेलैक, से की एको रत्ती हम बुझलिऐक ! मुदा तोँ धरि सभ दिन सभ खन मोन पड़ैत रहलह ।

हय, कहबह जे अंगरेजीफूलकेँ की भऽ गेलैक अछि जे एना लिखैत अछि ? सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, हमरा जेना सदिखन होइत रहैत अछि जे तोँ हमरा गरामे हाथ देने छह आ हम तोरा गरदनिमे हाथ दऽ घेंटाजोड़ी कयने छी, दुनू बहिना गालमे गाल सटा कऽ कानि रहल छी; दुनू बहिना एक-दोसराक हाथ पकड़ि कऽ ठहक्का लगा रहल छी; दुनू बहिना एकान्तमे बैसि फुसुर-फुसुर मोनक बात बतिया रहल छी। सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल ! तोरे एकटा सिनेह अछि जाहि बलेँ हम जीबि रहल छी; तोरे मुँह ओ तोहर बोलकेँ अखियासैत जिनगी खेपि रहल छी । ने तँ, एहि दुनियाँमे आब आन के बाँचल अछि जकरा हमर जिनगीक जरूरति छैक ?

तोँ लिखलह अछि जे- धैर्य सँ काज लेने जाह आ ओझा पर नजरि राखह ।' हय ! तोहर ओझा आब ओ ओझा छथुन कहाँ ? आब जे भऽ गेलथुन अछि से बूझि लैह जे एकदमसँ नटकिया । जेना नाटकवला सभ बलजोरी दाँत निपोड़ि कऽ हँसैत छैक आ आँखिमे करपूर लगा कऽ बलजोरी कनैत अछि, तहिना तोहर ओझा आब कऽ रहलथुन अछि । हय ! हमहूँ जँ नाटक खेलायल रहितहुँ, तखने ने हमरो ओना करऽ अबैत ! हय, सिनेह-प्रेम की कोनो चाउर-दालि आ कि टका-पैसा छैक जे ककरो खोंइछ-खूटमे बलजोरी बान्हि देल जाइक ? सिनेह तँ मोनक भाव थिकैक किने हय ! सिनेहे ने सिनेहकेँ जगबैत छैक । केओ जँ ऊक लऽ कऽ दिन-राति झरकबैत रहय तँ ओकरा पर कहह जे मोन कोना दौड़तैक ?

अंगरेजीफूल ! तोँ लिखैत छह जे हम अपन कर्त्तव्य करैत चल जाइ । से हम कोन बातमे आ कहिया चुकलहुँ जकर फल हमरा भेटि रहल अछि ? हम चतुर्थीयेक रातिसँ हुनका जे बुझलियनि, हुनका लय जे-जे कयलहुँ से भगवाने जनैत छथि । बहुत बात तोहूँ जनैत छह आ कि हुनके धर्म जनैत होयतनि । तखन जे ओ हमरा संगे एना खेल खेला रहल छथि से कोन सुखलय ? जँ हमरा दुखी रहने हुनका सुख भेटनि तँ हम सौंसे दुनियाँक दुख अपन खोंइछमे हँसोथि कऽ लेबा लय तैयार छी; आ सेहो तँ तखने सम्भव छैक जखन ओ हमरा अपन बूझथि । मुदा एतऽ तँ दोसरे रङताल

लागल छैक । हय, कहबी नहि छैक जे मैया मरथि धीया लय आ धीया मरथि अपन फल्लाँ लय । हम हुनका लय दिन-राति झूर-झमान भेल रहैत छी आ ओ आने-आन बात लय सदिखन बेलल्ला भेल फिरैत छथि । तोरासँ कोन झाँप-तोप; तोँ तँ हमर सभ किछु जनिते छह, नुकयबो करब तँ ककरा लय ?

हय ! तोहर ओझा जे दोस-महीमक लाथेँ डेरासँ निपत्ता रहैत छलथुन तकर अर्थ आब बूझऽ लगलिऐक अछि । ओ एतेक दिन नाच-गानक पाछाँ बेहाल रहैत छलाह । तोँ कहबह जे नाच-गान तँ अपनो सभक गाममे कृष्णाष्टमी ओ दशमीमे होइते रहैत छैक तँ से अधलाह बात तँ नहि भेलैक । हय, अपना गामक नाच-गानमे आ एतुक्का नाच-गानमे बड़ फरक छैक । तोरा मोने हायतह जे बोधनबाबू अपन बेटाक उपनयनमे बाइ मङौने रहथि । बाइ की होइत छैक से तँ हमरा लोकनि खाली गारियेमे सुनैत रहिऐक । हम तोँ कोना चोरा कऽ देखऽ गेल रहिऐक ओहि बाइजीक नाचकेँ से मोने होयतह । तोहर लालभाइजी बूझि गेल रहथुन तँ कतेक तमसायल रहथुन । हमरो कक्का फज्जझतिक तऽर कयने रहथि जे बेटी-डाँटी भऽ कऽ ई सभ नहि देखी !

हय ! एतबा दिन तँ यैह बूझल छल जे नाच-गान ख़ाली बाइयेजी सभ करैत अछि; मुदा अंगरेजीफूल ! पटना आबि कऽ आब इहो बुझलिऐक जे नीको घरक धी-बेटी सभ नाच-गान करैत अछि । हँ हय ! सत्ते कहैत छियह जे एतुक्का नीक नीक लोक सभ अपन बेटीकेँ नाच-गान सिखयबा लेल गबैया मास्टर रखैत अछि । कतेको एहन इसकूल छैक जाहिमे नाचो सिखाओल जाइत छैक । आर तँ आर, कोना हमर बेटी भरला लोकमे नाचओ ताहि लय पैरवी-पात कऽ कऽ तखन बेटीकेँ नचाबऽ लय लऽ जाइत छैक । नाचक तेहन फैशन चलि गेलैक अछि एहि पटनामे जे की कहियह ! तोहर ओझा एतेक दिनसँ ओही फेरमे रहैत छलथुन ।

हय अंगरेजीफूल ! हमरा तँ एमहर पता लागल अछि जखन हमरा डेराक दछिनवारी कातबला घरमे लोकक जुटान होअऽ लगलैक । एतेक दिन तोहर ओझा कतहु अन्तऽ एहि नाचवाली सभक सुँघानी लेबऽ जाइत छलथुन । आब औफिससँ सोझे अबैत छथुन आ जल्दीसँ पानि पीबि पिठियाठोक दौड़ैत छथुन ओही घरमे । हय ! कतेक बेर सुरफुरयलहुँ, कतेक हुलकी-बुलकी देलहुँ जे कनेक ओहि धोंछिया सभक मुँह देखितिऐक मुदा से कहियो भऽ नहि सकल । खाली छम-छम सुनैत छी आ रंग-बिरंगक बाजा-पिपहीक पोंपियौनाइ सुनैत छी । ई ओहि ठाम की करैत छथि से नहि देखि पबैत छी । तोँही कहह अंगरेजीफूल ! हमरा करेज पर जे ई सभ भऽ रहल अछि तकरा कोना सहू ? हुनका मतिकेँ ई पटनियाँ मौगी सभ मारने जा रहल छनि, तकर कोनो उपाय एहि ठाम हमरा नहि भेटि रहल अछि ।

हय अंगरेजीफूल ! हमरा तँ ने ई पटना छोड़ने बनैत अछि आ ने रहने बनैत

अछि । गराँक घेघ भऽ गेल अछि पटना । तोँही आब किछु सुझाबह जे एनामे हम की करी आ की नहि करी ? कहल-सूनल माफ करिहह आ की कहाँ लिखि देलियह से मोनमे नहि रखिहह । तोरा हमरे सप्पत छह, ई सभ बात कतहु बजबो नहि करिहह । खाली मीसरसँ कने विचारि कऽ जे भऽ सकह से करिहह । तोरा हमरे सप्पत-जल्दी चिट्ठी लिखिहह । हमर मायकेँ ककरो दिया समाद पठबा दिहक जे हम एतऽ नीकेनाँ छी। ओकरा आन बात कोनो नहि कहबबिहक ने तँ ओ सूनत तँ बताहि भऽ जायत । चिट्ठी पबिते देरी उतारा दिहह । हमरा जकाँ देरी नहि करिहह, तोरा हमरे सप्पत । तोरे बतहिया- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल ! **9 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । पढ़ि-पढ़ि छगुनैत रहलहुँ जे दिन पर दिन तोहर हाल केहन भेल जाइत छह ! तोहर जिनगी जेना ओझरायल जाइत छह से तँ बड़ अधलाह भऽ रहल अछि । हय, ओझा सन बुझनुक पुरुख एहन बाट धऽ लेताह से कहियो विश्वास करऽ बला बात नहि छल । सत्त पुछैत छह अंगरेजीफूल, तँ हमरा एखनो एहि बात पर विश्वास नहि भऽ रहल अछि जे ओझा अधलाह लोक छथि । ओहि ओझा सन लोक कतहु अधलाह होअय जे अपन घरबालीक अनुरागकेँ घरक आन लोकक सिनेह-प्रेमसँ पैघ बुझलक ? हमरा तँ होइत अछि अंगरेजीफूल जे तोरा ओझाक प्रतिएँ धोखा तँ ने भऽ रहल छह ? हय, ओझा तँ कहियो गूढ़ी-कपटीवला लोक नहि रहलाह जे तऽरे-तऽर अपन लच्छन बिगाड़ने चल जाथि आ तोरा फुसिये किछु कहि कऽ बहटारि दैत होथुन । मुदा तोँ बेसीकाल जेना चिट्ठीमे लिखैत छह तकरो एके बेर फूसि कोना कऽ मानि लिऐक ! हय, पुरुख सभ मौगीक लेल एकटा श्लोक बना कऽ रखने अछि- 'त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं, दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः' । मुदा जेँ कि ई श्लोक पुरुखक गढ़ल छैक तेँ आङुर सब दिनसँ मौगिये पर उठैत रहल अछि जे फल्लीं बड़ चरितगरिं अछि । मुदा असलमे बात से नहि छैक । पुरुख हो आ कि मौगी, दुनू तँ मनुक्खे ने भेल ? से मनुक्खक स्वभावे तेहन चरिताह होइत छैक किने जे कखन कोन कुबाट धऽ लेत से बूझब बड़ कठिन ।

की कहियह अंगरेजीफूल ! ओझा पटनामे नोकरी करऽ गेल छथि कि नाच-गान करऽ से तँ वैह बूझि सकैत छथि आ ने तँ ओ जे सदिखन हुनका संगे रहैत अछि । से तँ तोरा छाड़ि आन केओ दोसर ओहि ठाम नहियेँ अछि । हँ तखन ई धरि जरूरे जे तोँ रहैत छह डेरा पर एक लेखेँ पिजरामे बन्द आ ओ पुरुख छथि तँ उड़ाँत चिड़ै जकाँ जतऽ ततऽ भेल फिरैत छथि । पिजरामे बन्न चिड़ै तँ आगू आनि कऽ देल कौरा खाइत अछि, तोड़ि कऽ देल तिलकोड़क फऽड़ टोङैत अछि, कियौरी महक पानि पिबैत अछि, फुरलैक तँ रटले कथाक रटना करऽ लागल, जँ बड़ मोन उबिअयलैक तँ पिजराक पत्तर पर अपन

लोल रगड़ि-रगड़ि अपन मोनक तामस-पित्त उतारि लैत अछि। मुदा घरक पिजरामे बन्द रहनिहारि मैथिल मौगी तँ ओकरोसँ गेल-गुजरल अछि। ओ घरमे बन्द भेलि पुरुखक हँ मे हँ मिलबैत रहय तँ बड़ बढ़ियाँ, जँ कतहु कनेको चूकि भेलैक आ कि सभ छार-भार ओकरे कपार। मिथिलाक मौगी तँ चिड़ै-जकाँ अपन मोनक विषादकेँ घरक देबालमे ढाहियो मारि कऽ तँ नहि बहार कऽ पबैत अछि।

हय अंगरेजीफूल ! हम तँ एखनो यैह विचार देबह जे तोँ अपन करेज पर पाथर राखि सभ किछु बुझितो सहने चल जाह, मुदा ओझाक प्रति अपन सिनेह-आवेसमे कखनो कोताही नहि करह। सदिखन मीठ-मधुर बोली आ व्यवहार राखह। हय, मधुरे तँ एकटा तेहन स्वाद होइत छैक जे ककरो खराप नहि लगैत छैक। यैह बूझि लैह जे ओ मनुक्ख अभागले होयत जकरा मधुर वस्तु अधलाह लगतैक। ओझा भने एखन महकारी फड़क सेहन्तगर रंग ओ डगडगीकेँ देखि कऽ ओकरा पाछाँ बताह भेल फिरथु मुदा नवगछुलीक मालदह आखिर मालदहे होइत छैक। जाँहि दिन ओ बूझि जयताह जे महकारी खाली रंगेरूपसँ डगडग करैत अछि, ओकर भीतरमे जे रहैत छैक से थू-थू करऽवला ए-छीया सन, ताहि दिन ओ अपने आबि कऽ तोहर पयरपर खसथुन। तोँ आँचरमे गीरह बान्हि कऽ राखि लैह जे अंगरेजीफूल किछु कहलक।

हय अंगरेजीफूल ! हम तँ तोरे गुनधुनमे तेना ने भुतिआयल रहैत छी जे अपनो हाल-समाचार नहि कहि सकलियह। कहबो की करबह ? कोनो नवो बात होइक तखन ने तोरा चटसँ लिखि दियह। हँ, एमहर नव बातमे बात यैह जे अपना सभक गाम-घरमे आइ-काल्हि एकटा नवका बसात बहि गेलैक अछि। जेम्हरे सुनैत छिऐक तेम्हरे एकटा सभा। जतऽ-ततऽ विद्यापति पर्व। हय, हमरा तँ अनकट्ठल लगैत अछि जे पुरुख सभ किएक एना मौगियाह भेल जाइत अछि। हँ हय, विद्यापतिक गीत तँ खाली हमरे मौगी-मेहरक गाबऽ बला वस्तु छल; से सुनैत छिऐक जे पुरुखो सभ आब सभामे गाल पर हाथ धऽ कऽ विद्यापतिक गीत गबैत फिरैत अछि। आर तँ आर, छठि आ चौड़चन सन पावनिमे जेना कोनो सझिया आश्रममे सभ उथल-पाथल कयने रहैत अछि, तहिना सौंसे परोपट्टाक लोक एहि पावनिक पाछाँ व्यस्त भेल रहैत अछि। पुरुख सभक लेल तँ ई पावनि छठि आ चौड़चनोसँ बढ़ि कऽ भऽ गेल छैक। मास-मास सभ सभे कयने फिरैत अछि।

अंगरेजीफूल ! हम एहि नवका पुरखाही पावनिक विषयमे हुनकासँ पुछने रहियनि तँ 'ओ' कहलनि जे विद्यापति बड़का भारी कवि भेल रहथि। धन्न ओ जे हमरा लोकनिक बोलीबानीक देश-देशमे प्रचार भेल। हम की जानऽ गेलिऐक ई इये-बीये बला गप्प-सप्प। जखन तोहर मोन कखनो हल्लुक होअह तँ तोँ लिखिहह जे ई गमैया बसात तोहर पटनोमे तँ ने बहि रहल छह ?

हय, हम सदिखन भगवतीकेँ नेहोरा करैत रहैत छियनि जे हे मा ! अहाँ हमर

अंगरेजीफूलकेँ देखियौक । हलसि-फुलसि कऽ रहऽवाली चन्द्रकला एना मौलायल किएक जाइत अछि, तकरा पर नजरि फेरियौक । जँ अंगरेजीफूलक खुशीक चिट्ठी आओत तँ हम अहाँकेँ पातड़ि देब । देखी हय, जे भगवती हमर बात आब कहिया धरि सुनैत छथि । चिट्ठीक उतारा जल्दीमे दिहह, तोरा हमरे सप्पत । तोरे- **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **10 (पटनासँ)**

कैक दिनसँ नेयारैत छलहुँ जे आइ अवस्से तोरा चिट्ठी लिखबह मुदा से अपन दुखड़ा-धनियाँमे रमल छलहुँ जे कखनो पलखतियें नहि भेटैत छल । आइ कोनहुना समय निकालि कऽ लिखऽ बैसलहुँ अछि । सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल ! एम्हरुका पाँच-सात दिन कोना कऽ बीतल से हमहूँ नहि बूझि सकलिऐक । सुखमे छलहुँ कि दुखमे, सेहो कहाँ बुझलिऐक ? तखन बातमे बात यैह जे तोरा आब भगवतीक पातड़ि लागिये गेलह । हय, तोहर गोहारि भगवती सुनलथुन कि हमरे मोनक पाप कटित भऽ गेल से नहि जानि । हँ हय , ठीके एहि मोनक कखनो विसवास नहि करी । कखन की मोनमे घुड़िया जायत, कोन बातक कोन अर्थ लगा देत तकर ठेकान नहि ।

हय अंगरेजीफूल ! एम्हरुका समय हमर कोना बीतल, भारी छगुनतामे पड़ल हम कोना गुनधुन करैत रहि जाइ से तँ हमरे अतमा जनैत अछि, कने-मने तोँहू जनिते होयबह । मुदा आब तँ ओ सबटा कथा बुढ़ियाक फूसि सन लगैत अछि हय । हमर मोनक पाप जे हम हुनका दऽ की की ने सोचि लेने रहियनि । मोन एकदमसँ मानि गेल रहय जे आब ओ कुपंथ पर चढ़ि गेल छथि । पटनिआँ मौगीक फेरमे बताह भेल फिरैत छथि, नाच-गान कयने फिरैत छथि, तेँ अपन घरनी आब हुनका तीत फिक्का लागऽ लगलनि अछि । मोने-मोन देवता-पितरकेँ कहियनि-हे दैव ! पछिला जनममे हम कोन एहन चूकि कयलियह जकर फल सोझे - सोझ हमरा दऽ रहल छह । तेहन उड़ीबिड़ी लागि गेल छल ने जे की कहियह । भरि दिन काज-धन्धा कऽ आबी आ जखन कखनो एको छन फुरसति भेटय कि बस लैह ने ओतबे गप-हमरा लय दुनिआमे केओ नहि । जखन सिंउँथ छुनिहारे अविसवासी भऽ जाय तँ ओहि माउगि सन अभागलि दोसर केओ नहि । मोन होअय जे जहर-माहुर खा कऽ हिनका सब दिने लय निश्चिन्त कऽ दियनि ।

मुदा की कहियह अंगरेजीफूल ! ओ हमर दिनक दोख छल । सत्ते कहैत छियह, ओ तँ वैह छथि, हमरे मोनकेँ पाप घेरि लेने रहय । हम जे गुनझिक्कू डाइन जकाँ एहि खिड़कीसँ ओहि खिड़की, घरसँ बाहर आ बाहरसँ घर, औनी-पथारी दैत फिरी, सदिखन किदन-किदन सोचैत रही, से सब जे आब मोन पाड़ैत छी, तँ अपने हँसी लगैत अछि । कखनो कऽ होइत अछि, हम जे एहन पाप कयलहुँ अछि तकर फऽल तँ कहियो ने कहियो हमरा भोगहि पड़त ।

हँ हय ! हम तोरा ओझा सन बौध पुरुखकेँ पापी कऽ कऽ बुझलियनि । तोँ कतबो लिखैत रहलह जे तोँ अपन सिनेह-पात, बात-विचारमे कखनो कोताही नहि करिहह मुदा हमरा मोनमे तँ से बिक्ख सन्हिया गेल छल किने जे तोहर बातक कोनो असरिये नहि भेल ! मोनक बिखाद तेहन रहय जे देखौआ हँसी कतहु हँसल जाय ! हम सदिखन घुघना लटकौने रही । कथीलय हम बेसी टोक-चाल करबनि । हय अंगरेजीफूल ! हुनकर की कहियह । ओ जे हमरा मुँह फुलौने देखथि तँ जानि-जानि कऽ मुस्की मारथि । की कहियह हुनकर ओ मुस्की, हमरा जहर सनक लागय । एँड़ीक लहरि सिक्खा पर फेकय । होअय जे ई पुरुख केहन नटकिया अछि जेना हिनकर कोनो ताइये नहि होइन तहिना हमरा परतारि रहलाह अछि । मुदा आब जा कऽ बुझलिऐक हय, जे हुनकर ओ मुस्की निकलैत छलनि हमर विक्खसँ मातल मोन देखि कऽ । हमर बतहपनी देखि कऽ । ओहि मुस्कीमे हमरा सन पापिन लय कतेक पैघ क्षमाक झलकी रहैत छल से तखन हम बुझिऐक कहाँ ? मुदा आब तँ सबटा बूझि रहल छिऐक जे ओ मुस्की छल तेहन देवताक जे खाली छमे टा करब जनैत अछि, ओ ककरो पापकेँ ने तँ गनैत अछि आ ने मोनमे गीरह बना कऽ रखैत अछि । आब तँ जे भेलैक से भेलैक, हमरे समय खराब छल तेँ ने हय ! तखन तँ आब भगवतीसँ सदिखन एतबे कहैत छियनि-हे मा ! आब हम ओहि मुस्कीकेँ चिन्हऽमे गलती नहि करी से ततेक ज्ञान हमरा अहाँ देने रहू ।

हय ! विपत्तिक ओ पहाड़ कोना ढहल से खेरहा तँ हम कहबे नहि कयलियह। बात भेलैक ई जे हम ओहि दिन साँझखन एकसरे बैसल-बैसल अपन करम पर झखैत रही जे ई अपन पहाड़ सन दिन हम कोना कऽ खेपब कि तखने 'ओ' औफिससँ धरफड़ायले अयलाह आ घरमे पयर रोपिते कहलनि-कपड़ा-लत्ता पहीरि कऽ जल्दीसँ तैयार होउ, एक ठाम चलबाक अछि ।

हुनक चालि-चलनिसँ देह तँ जरले रहय, एहन बनौआ सिनेह देखि देह जरि कऽ आर छाउर भऽ गेल । हम मन्हुआयले कहलियनि-हम कतहु नहि जायब ।' ओ आवेशसँ फेर कहलनि-उँह ! जल्दी करू । समय बड़ कम छैक ।' हम तैयो ठाढ़िये रहलहुँ-हिललहुँ ने डोललहुँ । ओ खुट्टी परसँ कुञ्जीक झाबा लऽ कऽ अपनेसँ बाकस खोललनि आ जे नूआ हुनका सबसँ बेसी पसिन्न छलनि से बहार कऽ बलजोरी हाथमे धरबैत कहऽ लगलाह-पहिरबाक तँ अछिये, तखन जँ अपने हाथेँ नहि पहिरब तँ हमरा अपनहि.....। की कहियह अंगरेजीफूल ! हमरा तखन हुनक बेबहार देखि कऽ तँ चकविदोर लागि गेल । बकर-बकर मुँह ताकऽ लगलियनि । हुनक बेकलता देखि कऽ मोने-मोन कने हँसियो लागि गेल । मुदा की कहियह हय ! तखन हमरा की भऽ गेल से किछु नहि बुझलिऐक । हमरा पर भगवती सहाय भऽ गेलीह से बिना कोनो झिक्का-तीरी कयने हम नूआ-ब्लाउज पहीरि लेलहुँ, ऊपरसँ काढ़ल

पाढ़िबला चद्दरि ओढ़ि चुप्पे हुनका पाछाँ लागल विदा भऽ गेलहुँ । जतऽ पहुँचबाक छल ततऽ पहुँचि कऽ देखलहुँ तँ भरल सभा छलैक । ओ कहलनि जे आइ विद्यापति पर्व छैक एकरे तैयारीमे एतेक दिनसँ अपस्याँत रही हम । अहाँ बैसि ज़ाउ, हम कने तैयारी देखऽ जाइत छी ।

हय अंगरेजीफूल ! हम तखनुक अपन मोनक हाल की कहियह ? मोनमे हुनका लेल ततेक मात्सर्य उमड़ल जे एखनो ओ अछिहे । ओहि सभामे मौगी सभ विद्यापतिक गीतकेँ जे भास बिगाड़ि-बिगाड़ि कऽ गबैक तँ मोन खौंझा जाय । एक मोन होअय जे हमहूँ ओहि उँचका जगह पर पहुँचि जाइ आ गाबि कऽ देखा दिऐक जे विद्यापतिक गीत एना कऽ गाओल जाइत छैक । हँ ! पाछाँ जा कऽ तँ आर तेहन-तेहन भेद सब फूजल, ओ जतेक रास बात सभ कहलनि से आब पाछाँ लिखबह । एखन आब एतबे बूझि लैह जे तोहर अंगरेजीफूल अनचोकेमे बड़ पैघ पाप कऽ बैसलह अछि, अपन देवता सन स्वामी पर अविसवास कयलकह अछि । हय अंगरेजीफूल ! आब तँ जे भेलैक से भेलैक, तोँ धरि हमरा अवस्से क्षमा कऽ दिहह । ओ हमरा क्षमा कऽ देलनि अछि । चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह, तोरा हमरे सप्पत । तोरे- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल ! **11 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी भेटलाक अगिले दिन हम भगवतीकेँ पातड़ि दऽ देलियनि । हमरा लेल एहिसँ बढ़ि कऽ खुशीक दोसर बात कोन भऽ सकैत अछि जे हमर अंगरेजीफूलक दिन घुरलैक । हय ! हम तँ पहिनहुँ बेसी काल लिखैत रहलियह जे हमर ओझा किन्नहुँ ने कुपुरुख भऽ सकैत छथि । मुदा तोँ तँ अपने विक्खेँ मातलि ! किए हमर बातकेँ मोजर देबह । आब तँ बूझि गेल होयबहक जे धोखा ककरा कहल जाइत छैक । धोखामे पड़ि कऽ लोक कीसँ की कऽ बैसैत अछि । ओ तँ रच्छ रहल जे तोँ अगुतयलह नहि । नहि तँ एहिनामे कतेक माउगि धोखामे पड़ि इनार-पोखरिमे जा धसैत अछि ।

एकटा बात बुझलह अंगरेजीफूल ! हमर पातड़ि देनाइ हमर मायकेँ जेना नीक नहि लगलनि । से ओहि दिन तँ नहि मुदा बादमे जा कऽ बुझलिऐक । बात ई भेलैक अंगरेजीफूल ! पातड़ि देलाक बाद जखन ओ इसकुलसँ अयलाह तँ जलखैमे हम वैह नवेद देलियनि । ओ खाइते-खाइत बजलाह- पूजा-पातड़िक फल जकरा जे भेटैत होउक मुदा हमरा तँ टटके भेटि गेल ।' हम अकचकाइते पुछलियनि-से की ?' ओ बिहुँसैत कहलनि-एहन सुअदगर तस्मैक जलखै की ओना कहियो भेटैत ?' हम कहलियनि-जोड़निहार तँ अहीं छी, जोड़ि कऽ देब तँ हमरा रान्हि कऽ देबामे की लागत ? दालि-भातसँ एहिमे बेसी मेहनति थोड़बे छै ?

हय अंगरेजीफूल ! ओ तँ ताहि पर किछु बजलाह नहि, खाली मुस्किआइत रहलाह आ नवेद खाइत रहलाह । मुदा माय कतहुसँ सभ सुनैत रहथिन । ओ ओहो ठामसँ टोकारा देलथिन-बौआ कतबो कमताह तैयो हुनका की पूजी पड़तनि ?'

हम मायक मुँहसँ एहन रुच्छ बोल कहियो नहि सुनने छलियनि से हम बकर-बकर हुनकर मुँह देखऽ लगलियनि । मोनमे भेल जे हमरामेँ कोन एहन गलती भऽ गेल जे माय अपन सोभाव बिसरि एहन कथा बाजि देलथिन । मुदा माय एहिसँ आगाँ किछु ने बजलीह आ सोझे गोंटुल्ला दिस चल गेलीह । अंगरेजीफूल हय ! ओ हमरा पुछलनि-मायकेँ केओ किछु कहलकैक अछि की ?

हमरा किछु बूझल रहितय तखन ने हम किछु कहितियनि ? हम अपरतीभ भेल कहलियनि- हम तँ किछु नहि कहलियनि अछि; आन के की कहलकनि अछि से तँ वैह जानथि, कि कहनिहारे जानय ।' ताहि पर ओ बजलाह-अहाँ ई तँ बुझलिऐक ने जे माय अहीं पर तमसायल अछि ? ओ किए तमसायल अछि अहाँ पर ?

हम कहलियनि-अपना जनैत तँ हम कोनो तेहन काज नहि करैत छी; फाजिल खर्चो-बर्चो नहि करैत छी । तखन काजमे काज आइ ऐह कयलिऐक जे अपना मोने भगवतीकेँ पातड़ि दऽ देलियनि । अहाँ तँ जनिते छी जे पातड़ि तँ पातड़ि, अंगरेजीफूलक नीक लेल हम गहना-गुड़िया बेचि कऽ लगा सकैत छी, अपन प्राण निकालि कऽ दऽ सकैत छी ।

ताहि पर ओ गुम्म भऽ गेलाह । चुपचाप जलखै कयलनि । हाथ-मुँह धोलनि आ ओसारा पर लोटा रखैत बजलाह-मायक सोभाव तँ तेहन नहि छैक जे अहाँ अपन अंगरेजीफूलक लेल पातड़ि देलहुँ से ओकरा अधलाह लगैक ! कोनो आन बात भेलैक अछि ! की भेलैक अछि से के जानय ? एखन पुछबैक तँ किछु कहत थोड़बे ?

की कहियह अंगरेजीफूल ! तखनसँ हमरा कोनो काजमे मोने नहि लागय । भरि दिन गुनधुनमे लागल रहलहुँ जे माय सदिखन जकरा लछमी कहैत छथि, जकर प्रशंसा करैत हुनकर मुँह टुटैत रहैत छनि से कोन एहन चूकि कयलकनि जकरा लेल एहन तोड़ल सन कथा ओ मुँहसँ बहार कयलनि । ओहि राति हमरा अन्न-पानि पर्यन्त नहि घोंटल गेल । कैक बेर मोनमे होअय जे मायसँ जा कऽ पुछियनि, अनजान-सुनजानमे जँ कोनो गलती भेल होअय तँ माफी माङि लियनि; मुदा किछु पुछबाक साहसे नहि भेल । भेल जे हमरासँ कोनो ततेक पैघ अपराध भऽ गेल अछि जकर माफी एहि दुनियाँमे नहि होइक । रातिमे हमर उदास मोन आ खमल मुँह देखि ओ हँसाबऽ चाहलनि; कतेक बेर गुदगुदी लगयबाक भाँकी देखौलनि । मुदा हमर मोन हुलसगर रहय तखन ने ! ओहो सभ किछु नीक नहि लागल । बादमे ओ हमरा कतेक परबोधलनि, कतेक बुझौलनि-सुझौलनि जे माय तँ आखिर माये थिक आ अहूँकेँ ओ अपन बेटीसँ एको रत्ती कम कऽ नहि बुझैत अछि । तखन मोनमे किछु एहन-ओहन

आबि गेल होयतैक आ तामस-पित्त पर बाजि देने होयत । ताहि बातकेँ जँ अहाँ गीरह बन्हने रहब तँ से नीक बात नहि ने !

की कहियह अंगरेजीफूल ! दोसर दिन जा कऽ पता लागल जे जा धरि हम पातड़िक ओरिआओन करैत रही ता माय कोनटामे बैसि कऽ कनिते रहलीह । हुनकर कोंढ फटलनि एहि दुआरे जे हुनका भगवती पातड़ि देबाक अवसर किएक नहि दैत छथिन । ओ नीक मोनसँ कबुलने छथि जे जहिये हुनकर लछमीक कोर भरतनि, ओ भगवतीकेँ आँचर चढ़ौतीह आ पातड़ि देतीह । से, सभक पातड़ि तँ भगवती सुसार लैत छथिन, मुदा जे शुद्ध मोनसँ पूजा आ दिन-राति गोहारि करैत रहैत छनि तकर मोनक बात ओ सुनिते नहि छथिन । यैह छलनि हमर मायक दुख· आ तँ तोहर उछाहीमे जे हम पातड़ि देलियनि से हुनका नीक नहि लगलनि ।

तोँही कहह अंगरेजीफूल ! एहिमे हमर कोन दोख अछि ? हम आ तोँ दुनू गोटा तँ एक्के बतारी छी किने हय ? तोँहू तँ एखन धरि ओहिना छह ? तोहर की बोहायल जाइत छह ? हमरा सभक बयसे की भेल अछि ? मुदा हमरा मायकेँ तँ होइत छनि जे कहिया ओ दिन आओत । जे काल्हि आबय से आइये आबि जाय । तोँही कहह अंगरेजीफूल ! की ई बात सभ अपना सकमे छैक ?

ओ जखनसँ मायक ई बात सुनलनि अछि, तखनसँ हँसैत-हँसैत लोटपोट होइत रहैत छथि । हमरासँ सदिखन हँसी करैत रहैत छथि । कहैत रहैत छथि– बड़ कंजूस छी अहाँ अय ! मायक इच्छाकेँ किए नहि पूरा करैत छिऐक ?

की कहियह अंगरेजीफूल ! ई सभ सुनि कऽ तँ हम लाजे कठौतु भेल रहैत छी । मुदा ओ से कहाँ बूझऽबला । माइयो साँझाँमे टोनि दैत छथि । कए दिन तँ माय हुनकर बात सूनि आङनसँ हटि गेलथिन । एक दिन नहि रहल गेलनि तँ हँसैत कहलथिन-भारखम्भी होअह ।' मायक बात सुनियो कऽ 'ओ' खिखिआइते रहलाह आ हम साँझे घरमे जा कऽ पतनुकान लऽ लेलहुँ ।

एम्हरुका तँ यैह हालचाल अछि । तोँ समाचार लिखैत रहिहह । ओझाकेँ कहियऽहुन जे हमर अंगरेजीफूल अहाँपर बड़ प्रसन्न अछि । कोनो काज करथि तँ अपन लोकवेदकेँ साफ-साफ कहि देल करथि । मोने-मोन गुड़-चाउर फँकने लोककेँ धोखा भऽ जाइत छैक । साँय-बहुक बीच एहन धोखा होयब बड़ अधलाह बात ! चिट्ठीक उतारा जल्दीसँ दिहह, तोरा हमरे सप्पत । तोहर- **अंगरेजीफूल**

12 (पटनासँ)

अंगरेजीफूल हय,

तोहर चिट्ठी भेटल । हाल-चाल बुझलियह । तोहर सासु जाहि बात लऽ कऽ दुखी छथुन ताहि बात लऽ कऽ अपन देश-कोसक सभ सासु आ सभ माय दुखी रहऽ

जनैत छथि । प्रत्येक बूढ़ि-पुरनियाँकेँ अपन बेटाकेँ मोछक पम्ह निकलिते होइत छैक जे कहिया हमर बेटाक वियाह होयत; वियाह-दुरागमन होइत देरी होइत छैक जे कहिया हम अपन पोता-नातिक मुँह देखब । जँ दुइयो बरख देरी भेलेक कि टोना-टापर आ झाड़-फूक ओझा-गुनी शुरू भऽ जाइत छैक । ई कोनो सासु आ कि माय नहि सोचैत छथि जे हमर धी-पुतहु एखन ताहि जोगरक भेलि अछि कि नहि जे कोराक नेनाकेँ पोसऽ जनैत हो । तोँ तँ देखबे कयलह जे रामजोड़ीकेँ चौदहमे बरखक वयसमे बेटा भेलनि । हुनका अपन देह पर नीक जकाँ नूओ राखऽ नहि अबैत छलनि कि बेटाक माय बनि गेलीह । हमरा-तोरा केहन अनसोहाँत लागल छल जखन ओ दुरागमनक बेरमे कोरामे बेटाकेँ लऽ कऽ महफामे पैसलीह ।

हय, हमरा जँ ओना भेल रहैत तँ हम लाजे मरि जैतहुँ । हमरा तोरा चारि बरख भेल बियाहक । चारि बरख तँ कोनो बेसी नहि भेलैक । बड़ बेसी तँ अठारहम वयस होयत दुनू गोटेक । एखन धरि जे हमरा लोकनि बाँचल छी से नीके कि ने ।

फूसि बजलहुँ हय अंगरेजीफूल ! की बात छैक से तँ भगवतिये जानथि, मुदा हमरा सन्देह होइत अछि । हरदम मोन कोनादन करैत रहैत अछि आ अन्न देखि कऽ रोआँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि । एहि ठाम अपन के अछि जकरा किछु कहबैक आ के एहन अछि जे लच्छन देखि कऽ सन्देह दूर करत ? गाममे कतेक गोटाक मुँहसँ जे सुनने बुझने छी ताहिपर अँटकर करैत छी । हमर खयनाइ-पीनाइक हाल देखि कऽ आ भरि दिन 'ओ ओ' करैत देखि कऽ ओ कहैत छथि जे अहाँक पेटमे चाली फड़ि गेल अछि; चलू कोनो डाक्टरसँ देखा लियऽ । मुदा चाली फड़ल अछि आ कि की अछि से ओ की जानथि ? ओ ने डाक्टरे छथि आ ने देवते । तखन जे कहैत छथि से चुपचाप सूनि लैत छी ।

हय अंगरेजीफूल, जँ कहीं बात सत्ते भेलैक तखन तँ बड़ा भारी जुलुम होयत। एखनेसँ मोन दहलैत अछि जे कोना की करबैक हम । सत्त कहैत छियह अंगरेजीफूल, हमरा लोकनिसँ पटनियाँ मौगी सभ नीक अछि ।

हय, हमरा लोकनिक वयसक मौगी सभ नेन्ने बुझल जाइत छैक एहि ठाम । बीस-बीस बरखक छौड़ी सभ उतान भेल दलकल फिरैत अछि । ने सिंउथिमे सिनुर आ ने माथ पर नूआ । कतेक तँ केशो पुरुखे जकाँ छटबौने रहैत छैक । से एहन जगरजाठि सन-सन छौंड़ी सभ हेंज बान्हि बान्हि इसकुल-कौलेज जाइत अछि । कथी लेल ककरो बियाह भेल रहतैक आ कथी लेल क्यो कोनो पुरुखकेँ पुरुख बुझतैक। खूब निधोख भऽ कऽ घुमैत अछि आ आश्रमक हींग-हरदिसँ निचैन रहैत अछि । जँ सत्त पूछह अंगरेजीफूल तँ ओकरे सभक जिनगी नीक छैक । हमरा लोकनि तँ जहाँ दस-बारह बरखक भेलहुँ कि हुड़पेट्टा भेटऽ लगैत अछि-एना चल तँ एना बाज, एना नूआ पहिर तँ एना आँचर राख । एना-ओनाक छौंकी खा कऽ हमरा लोकनि नेन्नेमे

बूढ़ि बनाओल जाइत छी । नेन्नेमे वियाह होइत अछि आ नेन्नेमे धिया-पुताक परिचर्या करऽ पड़ैत अछि । ने घर-आश्रमक व्योंत बुझैत छी आ ने दुनियाँक कोनो अनुभव कऽ पबैत छी कि आश्रमक हऽरमे जोति देल जाइत छी आ सासु-ससुर, देओर-भैसुर आ घरबलाक तोंख राखऽ लेल उधियाय पड़ैत अछि ।

हमरा ओहिना मोन अछि अंगरेजीफूल, ता हमरा लोकनिक भरिसक बारहम बरख छल । दुनू गोटे गेल रही बाबीपोखरि नहाय लेल । पोखरिमे चुभकैत-चुभकैत कती काल दुनू गोटे खेलायल रही, कती काल धरि ढेहा-लेल-छूमे दूनू गोटा बाझल रही कि माहे मोहारंपरसँ कूदल आ जाठि दिस बढ़ल । तोँ हमरा चोट्टहि कहलह-चलह, अंगरेजीफूल, एहि छौंड़ासँ पहिनहि हमरा सब जाठि छूबि ली । दुनू गोटे विदा भेलहुँ हेलैत हेलैत । माहे से बूझि गेल आ ओ सुरुक्की मारि कऽ आगू बढ़ल । मुदा हम तोँ डूब मारि कऽ तऽरे तऽर ओकरासँ आगू बढि गेलहुँ आ सभसँ पहिने हम सभ जाठि छूबि देलिऐंक । माहेक मुँह अप्पन सन भऽ गेल रहैक ।

मुदा फेर ओ अपन पुरखारथ देखाबऽ लेल बाजल रहय-के पहिने दाउरकेँ छूबए ?' आ फेर ओ सुरुक्की लगौने रहय । मुदा ओहू बेर हम आ तोँ ओकरासँ पहिनहि दाउर छूबि लेने रही । ओ वयस हमरा लोकनिक नेन्नेक वयस छल तेँ हम-तोँ ई नहि बुझलिऐंक जे ई काज अधलाह भेलैक । सभ दिन हेलैत रही आ ओहू दिन सैह कयलहुँ । कोनो नब बात तँ भेल नहि रहैक । मुदा के ने के जा कऽ बाबूकेँ कहि देलकनि । कहि देलकनि फल्लीँ माहेक संग पोखरिमे खूब चुभकलि अछि ।

बाबू तँ हमरा किछु नहि कहलनि, मुदा माय हमरा झोंटा तिरि-तिरि कऽ मारलक । मारितो जाय आ कहितो जाय जे पुरुखक संग रभसैत लाज नहि भेलहु । तोँ तेहने काज कयलेँ छुच्छी, जे आइ हमरा लोकनिक नाक कटि गेल । ओहि घड़ी नोरायले आँखियेँ हम मायक मुँह दिस तकने रही जे नाक तँ छैके तखन कटलैक कोना आ कनैत-कनैत सोचनहुँ जाइ-माहे हमर बतारियो भऽ कऽ पुरुख बूझल जाइत अछि तेँ ओकरा संग खेलब बड़ खराप काज भऽ गेलैक । तहियेसँ हम आ तोँ ई बूझऽ लगलिऐंक जे हमरा लोकनि अपनाकेँ आब नेना नहि बूझी ।

हय अंगरेजीफूल, तहियेसँ हम आ तोँ अपनाकेँ छौंड़ी छोड़ि मौगी बूझऽ लगलहुँ । आ बूढ़-पुरनियाँक देखसी करऽ लगलहुँ । मुदा सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, जखन एहि ठामक छौंड़ी सभकेँ देखैत छिऐक-देखैत छिऐंक जे कते उछतगर मोने ई सभ अपन काज करैत अछि तँ होइत अछि हमहूँ एकरे सभ जकाँ एतुक्के ककरो कोखिसँ किएक ने जन्म लेलहुँ । जँ लेने रहितहुँ तँ आइ निचैन रहितहुँ-एकरे सभ जकाँ फुदकैत रहितहुँ । आइ जाहि सन्देहसँ हमर मोन दहलैत अछि से सभ एखन योजन दूर रहैत ।

आर की लिखियह । ओ आब बरोबरि हमर ध्यान रखैत छथि । आफिससँ सबेर

आबि जाइत छथि । सदिखन कहैत रहैत छथि जे चलू डाक्टर आतऽ । मुदा हम जाउ तँ किएक ? माइयोकेँ चिट्ठीयेमे सभ हाल लीखि देने छिऐक । देखी ओ की उतारा दैत अछि । तोँ धरि उतारा जल्दी दिहह, तोरा हमरे सप्पत ! तोरे- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **13 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी पढलहुँ । चिट्ठी पढ़ि कऽ खुशियो भेल आ दुखो भेल । खुशी भेल एहि बात लऽ कऽ जे तोँ एहि बेरुका चिट्ठीमे नव बात लिखलह । हय, कहाँ तँ तोरा दुनू प्राणीमे रूसा-फुल्ली चलैत छलह आ कहाँ ई खुशीक बात सुनौलह । कोना-की से सभ तँ फड़िछा कऽ लिखबे ने कयलह । खाली बेगारी कऽ कऽ लिखि देलह जे अन्न देखि कऽ रोआँ ठाढ होइत अछि, मोन कोनादन करैत रहैत अछि।

तोँ ई नहि जनैत छह अंगरेजीफूल, जे स्त्रीगण जखन अनको विषयमे नव बात सुनैत अछि तँ ओकरा सभ बात जानक लेल मोन बेकल भऽ जाइत छैक । आ हम तँ तोहर अंगरेजीफूल छियह, अपन लोक छियह, तखन सभ बात साफ-साफ लिखऽमे कोताही किएक करैत छह ? हय, जखनसँ तोहर चिट्ठी पढ़लहुँ अछि तखनसँ सदिखन यैह होइत अछि जे कखन तोँ भेटबह आ कखन तोरासँ भरि पोख गप्प करब । बेटीक भाग्य तँ विधाता तेहन भोथहा कलम लऽ कऽ लिखि देने रहैत छथिन जे छोटो-छीन सन सेहन्ता पूर भेनाइ कठिन रहैत छैक । आ हमरा तोरा भेंट भेनाइ तँ तेहन बात थिक जे एहि लेल रकटैते जिनगी बीतत ।

मानि लैह जे तोहर बात सत्ते होइक, भगवती करथि जे सत्ते होइक, तँ तोँ गाम जयबह । पहिल बेरमे अधिक स्त्रीगण नैहरे जाइत अछि । तोँहूँ जयबे करबह । मुदा हम तँ एतहि रहब । हमरा अपना मोने के जाय देत ? खास कऽ कऽ हुनका जहियासँ ई भनकी लागि गेल छनि जे भौजी हमर अपमान करैत रहलीह तहियासँ तँ ओहि ठाम हमरा जाय देबाक नामे नहि लैत छथि । कतबो कहबनि तँ नाक पर माछी नहि बैसऽ देताह । तोँही कहह अंगरेजीफूल, एहनामे हम करबे की करब ? हय, तोरासँ तँ आब भेंट नहिये होयत, तखन तँ चिट्ठी-पत्रीयेक असरा अछि । चिट्ठियेसँ तोँ हमर हाल बुझबह आ चिट्ठियेसँ हम तोहर हाल बुझबह । तखन तोँ सभ बात फड़िछा कऽ किएक नहि लिखलह जे हमर मोन एना औँढ़ि मारि रहल अछि ।

हय अंगरेजीफूल, एक बात लिखबाक मोन होइत अछि आ होइत अछि, लिखि देबह तँ तोरा होयतह जे हमर अंगरेजीफूल केहन लुतरियाहि अछि, ओकर सासु केहन छैक, मुदा हम तँ आइ धरि तोरासँ कोनो बात नुकौलहुँ नहि। अपन सभ बात अयना जकाँ तोरा आगाँ रखैत अयलहुँ अछि । फेर आइ किएक नुकबियह ?

बात ई भेलैक अंगरेजीफूल, जे चिट्ठीमे तोहर हाल-समाचार पढ़ि हमरा ततेक

खुशी भेल जे हमरा रहल नहि गेल आ हम बिनु बूझनहि-सुझनहि खुशीसँ ताली पीटऽ लगलिऐक । माय लगमे रहथिन से हम देखलिऐक नहि । ओ चोट्टहि पूछि देलनि जे– चिट्ठीमे एहन कोन बात आयल अछि कनियाँ जे अहाँ खुशीसँ एना बताहि जकाँ करैत छी ?

हम मायकेँ साफ-साफ कहि देलियनि । पुछलियनि जे– ई बूढ़ि छथि, एना, एना हमर अंगरेजीफूलकेँ भऽ रहल छैक, कहथु जे बात ठीक छैक की नहि । ताहि पर ओ बजलीह नहि । कनेक काल धरि मटसुन्न जकाँ वकर-बकर हमर मुँह ताकऽ लगलीह आ तकरा बाद हुनकर आँखिसँ टप-टप नोर झहरऽ लगलनि ।

हमरा बूझऽमे किछु नहि आयल । हाथक चिट्ठी हाथमे रहल आ कनेक कालक लेल भेल जे माय केहन छथि जे अनकर खुशी देखि नोर झहराबऽ लगैत छथि । कनेक कालक बाद जखन हमरा नहि रहल गेल तँ पूछि देलियनि-माय, जे पुछलियनि से तँ कहलनि नहि आ लगलीह कानऽ ? जँ अनजान-सुनजानमे हमरासँ अनुचित भऽ गेल होइन तँ हमरा झाँट-बाढ़नि करथु, हम चुँइ शब्द नहि करबनि। मुदा सभ बातमे ई कानऽ लगैत छथि से हमरा कोनादन लगैत अछि । अंगरेजीफूलकेँ भगवती नीक दिन देखबऽ चाहैत छथिन से तँ हमरो लेल खुशियेक बात कि ने ?'

ओ पहिने खखसि कऽ ठाँठ साफ कयलनि, आँचर लऽ कऽ नोर पोछलनि आ तकरा बाद बजलीह-अनका खुशी देखि कऽ जे क्यो जरति तँ भगवती ओकरा कहियो नीक नहि करथिन । हम तँ अपन भाग पर कनैत छी । हमर भाग केहन अछि जे कोनो सेहन्ता पूर नहि होइत अछि । जखन अहाँक अंगरेजीफूलक सासु सुनथिन जे हुनका पुतोहुकेँ कल्याणक योग्यता छनि तँ कतेक खुशी होयतीह बेचारी आ एकटा अभागलि छी हम जे सभ कथू लेल लल्ले रहैत छी ।

एतबा कहि ओ तँ ओहि ठामसँ उठि गेलीह आ हमर मुँह लाजे लाल भऽ गेल। सोचऽ लगलहुँ जे भौजीकेँ जे धीया-पुता नहि होइत छलनि तँ माय कोना देवता-पितरमे लागल रहैत छलि ? कोना ओकरा रटना लागल रहैत छलैक ?

हय अंगरेजीफूल, तोँ जे अपना दऽ लिखलह जे कोना की करबह से हमरा अनकट्ठल लागल । दुखो भेल ई जानि कऽ जे एम्हर आबि कऽ तोरा पटनियाँ माँगीक जिनगी नीक लागऽ लागल छह । तोँही पहिने ओकरा सभक खेरहा लिखने छलह, आब कोन बात भऽ गेलैक जे ओकरे सन जिनगी पयबाक सेहन्ता भऽ गेल छह ? ओ बेसी बयस धरि कुमारि रहैत अछि, जगरजाठि जकाँ साँसे दुनियाँ दलकैत फिरैत अछि, से की नीक लोकक काज भेलैक ? ओ सुनलनि जे तोरा मोनमे एहन एहन बात उठैत छह तँ पहिने तँ हँसलाह, फेर बादमे कहलनि जे -हमरा लोकनि नीक छी आ हमरा लोकनिक रेवाज नीक अछि । कुमारि कन्याक जे मरजादा छैक से एहन बयसाहु कुमारिमेसँ कय गोटा रखैत अछि ? अहाँ नहि बुझबै ई सभ । खाली

सिन्नुरे-लहठी पहिरने बियाह नहि भऽ जाइत छैक । बियाह होइत छैक कोनो पुरुखसँ। से एहन कुमारि सभ बिना लहठियो-सिन्नुरकेँ माय बनैत अछि आ तैयो दुनियाँक नजरिमे कुमारि बनल रहैत अछि । हमरा जखन ओ एहन बात कहलनि तँ तोरा पर बड़ क्रोध भेल । भेल जे, जे मौगी सभ नरकक पापकेँ अपन लटक-चटकमे नुकौने रहैत अछि तकरा जिनगीकेँ नीक बुझब आ ओहि जिनगीक सेहन्ता करब पाप थिक । ओहन जिनगीकेँ सतबढ़ना लऽ कऽ झाँटि दी । हय अंगरेजीफूल, तोँ ई सभ बात नहि सांचह । भगवान स्त्रीगणक जन्म एही सभ लेल देने छथिन ।

दुख नहि मानिहह अंगरेजीफूल, हम कीसँ की कहि गेलियह । हम तोरे छियह, जे किछु लिखलियह अपन बूझि कऽ, से तोरे नीकक लेल । हमरा माफ कऽ दिहह आ जल्दीसँ जल्दी लिखिहह जे कोना की भेलह-कोना रहैत छह । पटनेमे रहबह की गाम जयबह सेहो लिखिहह । सभ बात फड़िछा कऽ लिखिहह । तोरा हमरे सप्पत । तोहर– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **14 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी आइये भेटल अछि । मायोक चिट्ठी काल्हिये आयल अछि । ओ लिखैत अछि जे ओझाकेँ कहुन जे ओ तोरा गाम आबऽ देथुन । मुदा तोहर ओझा केहन लोक छथुन से तोँ चिन्हिते छहुन । हम हुनका कोना कहियौन जे हमर एतऽ रहनाइ आब ठीक नहि अछि, गामे जायब जरूरी अछि ! एक तँ ई सभ बात लोक पुरुखकेँ मुँह खोलि कऽ कोना कहौक, ताहि पर तोहर ओझा तेहन उकाठी छथुन जे भरि दिन ओही बातक खोद-बेद करैत रहथुन । हुनका खाली चालियेक सन्देह भेल छलनि, ताहि पर तँ हरदम अकच्छ कयलनि-की तँ चलू एहि डाक्टरसँ देखा दैत छी, तँ ओहि डाक्टरसँ देखा दैत छी । ओ कतबो अकच्छ करैत रहि गेलाह मुदा हम कोनो सुनबाहि नहि कयलियनि । एक दिन कहबो कयलियनि जे हमरा गाम दऽ आउ; ओहि ठाम सभ ठीक भऽ जायत ।

ओ चोट्टहि पूछि बैसलाह-ककर गाम ? हमर की अहाँक ?' हम कहलियनि- अहाँक गाम जा कऽ की करब हम ? हमरा अपना गाम जाय दियऽ । माय सेवा-बारी करत तँ सब ठीक भऽ जायत ।' ताहिपर ओ की बजलाह से जनैत छह, अंगरेजीफूल ? बजलाह जे अहाँ एतेक दिन हमरा संग रहलहुँ, मुदा हमरा नहि चिन्हलहुँ ।' हमहूँ पूछि देलियनि-हमरा तँ कोनो तरहेँ अहाँ अनचिन्हार नहि लगैत छी। हमर कोन बातसँ अहाँकेँ लागल जे हम अहाँकेँ नहि चिन्हैत छी ?

ओ कहलनि- जँ अहाँ हमरा नीक जकाँ चीन्हि लेने रहितहुँ तँ एखन गाम जयबाक कथा नहि बाजल रहितहुँ ।' हम अनठा कऽ फेर पुछलियनि-से किएक ? जकर बहु अपन घरबलाकेँ नहि चिन्हैत छैक सैह गाम जयबाक कथा करैत अछि ?

ताहिपर कने काल हमरा मुँह दिस टुकुर-टुकुर तकैत रहलाह । हम देखलियनि, हुनकर आँखिमे ने जानि कतेक सिनेह उमड़ि अयलनि । ओ आवेश देखबैत बाजऽ लगलाह-हमरा मोनमे अहाँक प्रति केहन-केहन भाव अबैत रहैत अछि से की जानब अहाँ ! ओहि भावकेँ ने कहल जा सकैछ आ ने सूनल जा सकैछ । खाली मोने-मोन अनुभव कयल जा सकैत अछि ।

हमहूँ अपना जनैत आवेश देखाबऽसँ चुकलियनि नहि, कहलियनि-ई बात तँ हमरो मोनमे होइत अछि । ई तँ कोनो नव गप्प नहि भेल ।

ओ कने काल चुप रहलाह आ तकैत रहलाह, उतारा किछु नहि देलनि । हमहीं कहलियनि-जे बात अहाँ कहैत छी से पुरुखसँ बेसी मौगीकेँ होइत छैक । पुरुख तँ भेल बहरुआ लोक । दस ठाम जाइत अछि आ दस लोकसँ गप्प करैत अछि, ओकर मोन दस दिस बहटरि जाइत छैक । मुदा मौगी तँ दिन- राति घरेमे रहैत अछि । गप्प करओ तँ घरेबलासँ आ काज करओ तँ ओकरे आ जहाँ पुरुख घरसँ बाहर भेल कि ओकरेपर टकध्यान लागल रहैत छैक । की हम फूसि बजैत छी ?

ई सुनि ओ बड़ ध्यानसँ हमरा देखऽ लगलाह आ तकरा बाद बजलाह-नहि, अहाँ फूसि किएक बाजब ? ने अहीं फूसि बजैत छी आ ने हमही फूसि कहैत छी। तखन हम जे कहलहुँ जे अहाँ हमरा नहि चिन्हलहुँ से एहि द्वारे जे अहाँ एखन असक्क छी, मोन ठीक नहि रहैत अछि । एखन जे अहाँ हमरा लगसँ चल जायब से की हमरा नीक लागत ? ओ पुरुख स्वार्थी अछि जे नीकमे घरबालीक प्रेममे डूबल रहैत अछि आ असक्क भेला पर ओकरा कात कऽ दैत अछि । हमरा बुते से नहि होयत ।

एतबा कहि कने काल ओ चुप रहलाह आ एना तकैत रहलाह जेना हमरा आँखिमे हुनकर किछु हेरा गेल होइनि । फेर कहऽ लगलाह- हमरा एकर चिन्ता नहि अछि जे लोक हमरा की कहत। लोक तँ ओहिना बड़बड़ाइत फिरैत अछि; मुदा हमर अपने मोन नहि मानैत अछि जे अहाँकेँ हम एखन आन ठाम पठा दी ।

हय अंगरेजीफूल, ओहि दिन तँ हुनकासँ एतबा गप्प भऽ कऽ रहि गेल । ओहि दिन जे हम हुनकर सिनेह-बात देखलियनि से भेल जे हमहूँ दुनियाँक एहन भागमन्ति लोकमेसँ छी जकर एहन अपन लोक एहि दुनियाँमे छैक । मुदा तोँही कहह अंगरेजीफूल, पुरुख मौगीकेँ कतबो सिनेह दौक, कतबो अपन करेज काटि कऽ घरबालीक हाथमे धऽ दौक मुदा एहन-एहन बेरमे तँ पुरुखक सिनेह-प्रेम कोनो काज नहि अबैत छैक । हम हुनका की कहियौन आ कोना कहियौन से किछु नहि फुराइत अछि । हय, माय तँ लिखलक अछि जे ओझाकेँ कहुन गाम आबऽ देथुन, मुदा एहन ओझाकेँ के बुझाओत ? कोना बुझाओत ?

हय अंगरेजीफूल, तोँ जे हमरा पर क्रोध कयलह आ तोरा जाहि बात लऽ कऽ

दुख भेलह से उचितें । हमहूँ पाछाँ सोचलिऐक जे की अर-दर अंगरेजीफूलकेँ लीखि देलिऐक, ओ ई सभ पढ़त तँ की बुझत ? मुदा आब तँ जे लीखि देलियह से लीखि देलियह । आब हमरा मोनमे ओ बात सभ नहि उठैत अछि। हय, कोनो नीक की अधलाह बात हमरा मोनमे उठल से अनका तँ नहि ने कहलिऐक, तोरे लिखलियह कि ने ? जे भेलैक से भेलैक , ताँ धरि माफ कऽ दिहह । चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । तोरा हमर सप्पत, बिसरिहह नहि । तोरे– **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **15 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी अयना कतेक दिन भेलह, मुदा हम उतारा देरीसँ दऽ रहल छिएह। ताँ एतेक दिन हमरा पर खूब खौंझायलि होयबह । हय, देरी होयबाक आर कोनो कारण नहि, हम अपने दुखित भऽ गेल रही । हमरा तेहन धाह धऽ लेने छल जे उतरबाक नामे नहि लैत छल । बाइस दिन पर पऽथ पड़ल छल । एखनो ततेक कमजोर छी जे कोनो काज नहि कऽ होइत अछि । आइ बैसल-बैसल मोन नहि लागल, तँ मोन बहटारबाक लेल तोरा चिट्ठी लीखि रहल छियह ।

तोहर चिट्ठी जे आयल छल ता हम एकदम बेसुधि रहैत रही । एहनामे कोना उतारा दितियह ! हुनका हम बीच-बीचमे कैक बेर कहबो कयलियनि जे अंगरेजीफूल हमर उताराक बाट तकैत होयत । दू अच्छर अहीं टीपि दियौक ।

मुदा ओ बराबरि यैह कहैत रहलाह जे स्त्रीगणक चिट्ठीक उतारा कतौ पुरुख देलकैक अछि ? कोनो जरूरी बात तँ नहिएँ अछि जे नहि लिखने कोनो बड़का हर्ज भऽ रहल हो ।.अहाँ जखन निकेँ होयब तँ अपने लीखि देबनि । हम ओहू हालतिमे कहलियनि जे हमर अंगरेजीफूल बताहि अछि । चिट्ठीमे देरी होयतैक तँ सोचति जे अंगरेजीफूल हमरासँ मुँह फुला लेलक अछि ।' ताहि पर ओ बजलाह-एहनो कतहु बूझब भेलैक अछि ? ओ अवश्ये बुझतीह जे कोनो तेहन बात भऽ गेलैक अछि तेँ उतारा नहि आबि रहल अछि । हमरा कोनादन लगैत अछि हुनका चिट्ठी लिखब । अहाँक ओझा बुझताह जे हम हुनकर घरबालीकेँ चिट्ठी लिखलियनि अछि तँ ने जानि की सोचथि ? भऽ सकैत अछि, आने क्यो बूझय तँ ने जानि की कहाँ सोचय ? नीक होयत जे निकेँ भेला पर अपनहि लिखियनि ।

हम हारि कऽ हुनका कहलियनि- तँ ओझेकेँ दू अच्छर टीपि दियौन, ओ अंगरेजीफूलकेँ कहि देथिन ।' तखन तँ ओ गछि लेलनि, मुदा ओझाकेँ लिखलथिन कि नहि, से फेर हम पुछलियनि नहि । पाछाँ जा कऽ हमर मोन तेहन खराप भऽ गेल जे कथुक सुधियें नहि रहल ।

हय अंगरेजीफूल, हम जे उतारा नहि देलियह तँ ताँहू बैसये रहलीह । जखने देरी

भेलह उतारामे तँ तोँ बूझि तँ लितह जे हमर अंगरेजीफूल अनठाबऽबाली नहि अछि। कोनो तेहने बात भऽ गेल होयतैक। मुदा तोँ से नहि सोचलह आ चुपचाप बैसि रहलीह। हमरा तोरामे तेहन सम्बन्ध नहि ने अछि जे ककरो पर क्यो कोनो संदेह करय!

तोरे सप्पत कहैत छियह, अंगरेजीफूल, जा हम खटवासि लेने रही ता जखन कखनो कने मोन नीक होअय, हम हरदम सैह सोचैत रही जे अंगरेजीफूलकेँ जे हम उतारा नहि देलिऐक अछि से देखा चाही, ओ फेर दोसर चिट्ठी लिखैत अछि की नहि। मुदा तोँ तँ दम्मे सधने रहि गेलीह, कथी लेल उनमुनयबह हय! एम्हर हम बराबरि अख्यासैत छी, बराबरि सोचैत छी तँ यैह पबैत छी जे तोहर मोन हमरा दिससँ उखड़ल जाइत छह। हम कतबो तोरा लिखलियह जे तोँ नव समाचारक विषयमे साफ-साफ लिखह जे कोना-की भेलैक। हमरा जानऽ लेल मोन लगल अछि तँ तोँ ताहि विषयमे किछु नहि लिखलह। तोँ चिट्ठी लिखबो कयलह तँ ओहिमे ओहि बातक कोनो चर्चे नहि। आने आन आहे-माहेमे सौंसे कागत रङि देलह आ हम जे पुछलियह तकर कोनो जबाब नहि। हय, हम तँ सदाके अभागलि छीहे, ताँहू जँ हमरा अपन मोनसँ बहार कऽ देबह तँ हमर एहि दुनियाँमे अपन के कहाओत?

सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, हम तँ अपना जनैत हुनकासँ एक्को रत्ती कम तोरा नहि बुझैत छियह, तखन तोँ हमरा जे बूझह। हमर एहिमे अपन सक्के कोन! आइ धरि हम अपन गुप्तसँ गुप्त बात तोरा कहैत अयलियह। कहियो कोनो बात नुकौलियह नहि। तखन तोँ जे किछु करबह से तँ अपनहि मोनसँ। तोहर मोनपर हमर कथीक जोर चलत?

हय अंगरेजीफूल, तोहर चिट्ठी अयना एक मास भेल। मास दिनपर उतारा दऽ रहल छियह। एहि बीचमे ओझा तोहर बात बुझलथुन कि नहि से तँ हम नहि जनैत छी, मुदा तैयो हम ओझाकेँ बुझाबक लेल चारि अच्छर टीपि कऽ पठा रहल छियह। ओझाबला चिट्ठी ओझाकेँ दऽ दियऽहुन। तोहर मिसरकेँ तोरा चिट्ठी लिखैत लाज होइत छनि, मुदा हमरा तँ ओझाकेँ किछु लिखबामे लाज-ताज नहि होइत अछि। किएक होयत? जकरासँ भरि मुँह बतिअयलहुँ, रंग-बिरंगक हँसी-ठट्ठा कयलहुँ, तकरा चारि अच्छर लिखबामे लाज कथीक? से हम ओझाकेँ लीखि देलियनि अछि जे- औ ओझा! अहाँ हमरा अंगरेजीफूलकेँ जतेक सिनेह-बात करैत छी से हमरा नीके लगैत अछि। अपन सखी-सलोड़िनिकेँ ओकर घरबला जतेक अधिक आवेश करैत छैक से सूनि लोककेँ खुशिये होइत छैक, मुदा छुच्छे सिनेहसँ तँ किछु नहि भऽ जाइत छैक। आर कतेक बात होइत छैक मौगीक जिनगीमे जाहि कारणेँ किछु दिन सिनेहकेँ कात कऽ देबऽ पड़ैत छैक। से अहाँ थोड़ेक दिनक लेल हमर अंगरेजीफूलक प्रतियेँ अपन सिनेहकेँ अपने सङ्गमे सम्हारि कऽ राखू। किछु दिन धरि सिनेहकेँ जोगौने चल जाउ आ जखन अंगरेजीफूल एकटा सोन सन नेनाकेँ

लऽ कऽ अहाँक कोरामे देबऽ आबय तँ ओहि नेनापर अपन सभ सिनेह खर्च करब। हमर अंगरेजीफूलकेँ ओहि नेनापर अहाँक सिनेह खर्च होइत देखि खूब नीक लगतैक, खूब सुख भेटतैक ।

बुझलह कि ने अंगरेजीफूल, एहिना आने-माने लिखि कऽ हम ओझाकेँ असली बात फड़िछा कऽ लीखि देलियनि अछि । तोँ हुनकर चिट्ठी पढ़ि लिहह। तोरा हमरे सप्पत, अंगरेजीफूल ! हमर चिट्ठी पढ़लाक बाद ओझाक जेहन मोन होइनि आ ओ जे बजथुन करथुन से सभ एकदम फड़िछा कऽ लिखिहह ।

हय, हम तँ तोहर चिट्ठीक बाट तकबे करबह । तोहर खुशी, उतारा दैह, नहि दैह, अंगरेजीफूलकेँ बिसरि जाह । हमर अपन सक्के कोन । तोहर– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **16 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । हलसि कऽ लेलहुँ । भेल जे तोँही भेटि गेलीह । मुदा जखन पढ़लहुँ जे तोँ एतेक दिन धरि दुखित छलीह तँ छाती फाटऽ लागल । भेल जे खूब कानी ।

हय अंगरेजीफूल, तोँ जे अनुरोध कयलह से ठीके । मुदा हम तोरे उताराक आस-बाट तकैत रहि गेलहुँ । होइत छल जे आइ तोहर चिट्ठी आओत तँ आब तोहर चिट्ठी आओत । मुदा से नहियेँ आयल । हम की जनैत छलहुँ जे तोँ दैवक जाँचमे पड़ि गेलि छह । हमरा तँ भेल जे तोँही हमरासँ अभिरोख कयने छह । छगुनैत रहैत छलहुँ जे कोन एहन विषय भऽ गेलैक, हमरासँ कोन एहन चूकि भऽ गेल जे हमर अंगरेजीफूल हमरासँ रूसि रहलि ?

हय अंगरेजीफूल, हम तँ लिफाफ अना कऽ रखने रही, आधा चिट्ठी लिखबो कयलहुँ मुदा फेर भेल जे जँ तोहर चिट्ठी आबि जायत तँ पढ़ि कऽ लिखब । आ तोहर चिट्ठी भेटलाक बाद मास दिन धरि उतारा नहि देलियह ताहिसँ तँ तोरा आरो विश्वास भऽ गेल होयतह जे 'हमरा प्रतियेँ अंगरेजीफूलक मोन उखड़ल जाइत छैक।'

हय अंगरेजीफूल, तोँही कहह जे तोरा छोड़ि कऽ हमर मोनक मधुर दोसर के होयत ? जकरा संग पुतली पहिरि कऽ धाप-धूप खेलयलहुँ, पोखरिमे चुभकलहुँ खपटा-खुपटी खेलयलहुँ, आमक गाछीमे महुआ आ टिकुला बिछलहुँ, खेतसँ बदाम, खेसाड़ी आ बथुआ साग तोड़ि अनलहुँ, बिड़हारा आ पौती बुनलहुँ, तुसारी पुजलहुँ आ संग संग मधुश्रावणीक फूल लोढ़लहुँ; तकरा कोना बिसरि जयबैक ? तखन कहह जे दुनू बहिनाक उपर विधाता रूसि रहल छलाह । ने तँ दुनू गोटा आगाँ पाछाँ एना सिद्दति किएक भोगितहुँ ।

हय, हमहूँ एम्हर की नीके रहैत छी से ? एक तँ मोन ओहिना अलसायल सन

रहैत अछि, ताहि परसँ बिनमाङल बेयाधि भेटि गेल । तोँ कहबह जे कोन एहन बात भऽ गेलैक ? हय तोहर ओझा पहिने पेयाजु-लहसुनसँ कतेक नाक भौंह फोकड़बैत रहथुन ? आ आब सौंसे सौंसे पंयाजु चढ़ि जाइत छनि । की कहैत छथुन से बुझबह ? मने, पटनामे पेयाजु खायब आवश्यक छैक । हय, ओहि दिन साँझ कऽ जलखइ तैयार कऽ कऽ पंयाजु कतरैत रही से दहिना औंठा कटि गेल । बड़ लिधुर बहल । ओहिमे सिन्दुर भरि कऽ लत्ता लपेटि देलिऐक । तरे-तर पकाइ कऽ देलकैक । कहैत छियह अंगरेजीफूल ! ओही बेत्थे मास दिनसँ पड़लि छलहुँ । तोहर ओझा तँ ई बात बुझिते बड़ उदास भऽ गेलथुन । बजलाह जे हमरे कारणेँ अहाँक हाथ कटि गेल । आब पेयाजु नहि खायब । से सरिपहुँ कहैत छियह, पंयाजु एकदम्मेसँ छोड़ि देलथुन । हम कतबो बुझौलियनि जे ई दिनक दोख छलैक, कुजोखी भऽ गेलैक । मुदा जा धरि घाव नहि चोखायल ता धरि उदासे-उदास रहलाह । दबाइ-बीरोक पाछाँ अपसेयाँत रहैत छलाह ।

हय, हमरा दबाइ खायब नीके नहि लगैत छल । से ओकरा हुनकासँ नुका कऽ फेकि दैत छलिऐक । तोँ हमरा पर तमसयबो करबह आ कहबह जे हमर अंगरेजीफूल हमर ओझासँ एना फूसि किएक बाजलि । हय, आब हमहूँ से बुझैत छिऐक जे हमरा एना हुनका सिनेहक कुभेला नहि करबाक चाही । तकरे फल ने मास दिन धरि भोगऽ पड़ल जे घिसियौढ़ कटैत रहलहुँ । मुदा हमरा डऽर भऽ गेल । माय कहैत नहि रहैक जे एहन अवस्थामे किछु अक्कर-बक्कर नहि खयबाक चाही । हय, तोरा मोन होयतह, एक बेर खराजपुरबाली भौजी बिनु बुझनहि-सुझनहि दोसर दवाइक बदलामे कुलालेनक गोटी खा लेने छलीह । हुनको तँ पहिले बेर रहनि, ओ गेलनि से तँ गेबे कयलनि, अपनो जान कोनहुना बाँचि गेलनि । तँ हम नहि खयलहुँ ने तँ हम हुनक सिनेहक कतहु कुभेला करियनि ? जँ हुनका देखा कऽ दबाइ नहि खैतहुँ तँ मारि कहूँ सोचऽ-बिचारऽ आ बाजऽ लगितथि । ई बात बजिहह नहि, तोरा हमरे सप्पत । लोक कलजुगाहि बुझत ।

हय अंगरेजीफूल, एहि ठाम अपन मोनक बात ककरा कहियौक ? चारू कात तँ मगहिनी सभ रहैत अछि । सब 'कहे हलइ' 'दऽ हलइ' 'हलू' 'हलऽ' 'ही' 'हू' बजैत । हय, कोनो कोनो वस्तु पर तिसना भऽ जाइत अछि । बेसी काल घोरजाउड़ि खयबाक सेहन्ता होइत अछि । एहि ठाम ओ सब कतऽसँ आओत ? गाम रहैत तँ एहन इच्छे ने होइत ।

हय, साग खयना कतेक दिन भऽ गेल । जुआयल पोड़ोक साग कनेक अम्मत रहैत छैक तँ कतेक नीक लगैत छैक ? आइ-काल्हि तँ देशमे खूब बदाम आ खेसाड़ीक साग होइत होयतैक । तोरा केओ तोड़ि कऽ आनि दैत छह की नहि ? हमरा तँ बूझह जे जीह सेरर भऽ गेल । हय, एहन पटनाक कोन काज, जतऽ सागो ने भेटय। एकटा कुजड़नीकेँ बड़ नेहोरा कयलियैक तँ ओ दू मुट्ठी बूटक साग नेने आयल ।

देखितें तँ जीह पनिछा गेल । दू टा मूड़ी खोंटि कऽ जांकि मुँहमे दैत छी ओम्हरसँ तोहर ओझा आबि गेलथुन । देखितें ओ बात लोकऽ लगलथुन-- एक तँ पेटमे चाली अछि । डाक्टर ओतऽ चलैत नहि छी, ताहि परसँ ई असंयम । ई हरियर साग पेटमे जा कऽ की कहत ?' हय अंगरेजीफूल, हम तँ लाजे गड़ि गेलहुँ । सोचैत रहलहुँ जे कतेक जिउलाहि बुझने होयताह । ओहि दिन हुनका दिस लाजे ताकियो ने भेल ।

हय, यैह सभ तँ हाल चाल अछि । अपन कुशल-छेम लिखिहह, तोरा हमरे सप्पत । हे, बिसरिहह नहि । हँ, एकटा बात आर, तोहरबला चिट्ठी हुनका नहि देलियनि । हुनका हाथमे दैत हमरा बड़ लाज भेल । मारि देखार बात सभ लिखि देने छहुन । चुपचाप हुनका पोथीमे धऽ देलियनि । नजरि पड़तनि तँ पढ़थुन, ने त.....। हँ तों उतारा तुरन्त दिहह । मोन लागल अछि । तोहर-- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **17 (गामसँ)**

जी-जी कऽ तोहर चिट्ठी पौलहुँ । भरोस नहि छल जे आब तोरा हाथक लिखल अच्छर भेंटत । हमरा तँ होइत छल जे तों तमसा गेलि होयबह । तें मने-मन विचारैत छलहुँ जे आब ओझोकेँ सभ बात फड़िछा कऽ लिखियनि जे हमर रूसल अंगरेजीफूलकेँ हमर ओझा छोड़ि कऽ दोसर के बौंसि देत ? मुदा नहि, हमर अंगरेजीफूल तँ नेनु सन कोमल अछि । ओ कतहु हमरासँ रूसय ।

हय अंगरेजीफूल, ओझाजी आब पयाजु खाइत छथुन हय ! छीया ! कोना कऽ अरघैत छनि हुनका ? हम तँ हुनका लिखबनि हय, एना ओ अजाति किएक भेल जाइत छथुन ? मुर्गा-मुर्गी तँ ने खायब शुरू कयलथुन अछि ? सुनैत छिऐक पटना सभमे ई सभ खूब चलैत छैक । देखिहह, आर जे किछु ओझा कहथुन ताहिमे जी-हजूर रहिहह, मुदा मुर्गा-मुर्गीक पाँखियो नहि टपऽ दिहऽ अपना घरमे ।

हय अंगरेजीफूल, ओझाजी तँ तोरा किछु नहि कहलथुन आ हमरा सभ किछु लीखि देलनि । हय, ओ सभ किछु बूझि गेलथुन । हय, पटनियाँ पुरुख तँ सहजहि एक नम्मरक खेलाड़ होइत अछि, से तोरा किछु नहि कहलथुन जानि कऽ । आब नहि ई बात सभ बुझथिन तँ कहिया बुझथिन हय ? थोड़बेक दिनमे एक बच्चाक बाप भऽ जयथुन ।

हय, एम्हर माय तोरा दऽ पुछारी करैत रहैत छथुन । ओहि दिन अपने मने उपकरि कऽ पुछलनि जे अय कनियाँ ! आब अहाँक अंगरेजीफूल चिट्ठी लिखब छोड़ि देलनि की ?

हम कहलियनि-एखन धरि तँ नहि लिखलक अछि । ताहि पर ओ कहलनि जे अहाँ अपनहुँसँ लिखियौन ने, ओहि बेचारीक मोन अपन देस-कोससँ दूरमे बौआइत होयतैक । अहाँक चिट्ठी भेटने मोन लगतैक । हमरा तखन बूझि पड़ल जे हुनका

मोनमे कतेक ममता आ आवेश रहैत छनि । हय, कनी काल ओ हमरा दिस तकैत रहलीह आ विहुसि कऽ की बजलीह से बुझबह ? कहलनि जे 'एहि बेर भगवतीकेँ कबुला करैत छियनि जे अहाँक अंगरेजीफूलकेँ कंटिरवा होयतनि तँ पातड़ि चढ़यबनि ।' आ फेर भगवती घर दिस आँचर पसारि कऽ कहलथिन जे-हे भगवती ! हमर मोनक बात पूर होयत तँ कनियाँक हाथेँ हम अहाँक आँचर भरब ।' भगवतीक मिनतीमे जेना ओ अपन मनकमना कहि देलथिन ।

हुनकर ई बात सुनि कऽ तँ भेल जे हम हुनक पैर पर जा कऽ लोटऽ लागी। हम ओहि जनममे कतेक पुन्न कयने रही जे हमरा एहन मदोदरि सासु भेटलीह । हमरा सन सासु तँ ककरो नहि होयतैक । हमर सासु बस हमरे सासु छथि ।

तोँ साग दऽ लिखलह से बात मायकेँ कहलियनि तँ हुनका हँसी लागि गेलनि। कहलथिन जे एहि ठाम तँ कुकुरो-कौआ सागकेँ नहि पुछैत छैक । कोन अन्हर-कुप्प देसमे रहैत छथि जतऽ सेहन्ताक कोनो वस्तु नहि भेटैत छैक ! लगमे छथि जे ककरोसँ तोड़बा कऽ एक मोटा पठाइयो देबनि ?

हय, एतऽ हमरा तँ साग तोड़निहार केओ नहि अछि जे आनियो देत ? लोकक घरमे तँ धी-बेटी छैक तँ तोड़ि कऽ अनैत छैक । हमरा घरमे तँ से सब नहि अछि। अंगरेजीफूल हय, एकटा ननदि लेल बड़ सेहन्ता होइत अछि । कोना कऽ लोककेँ ननदिसँ झगड़ा होइत छैक ? एकटा ननदियो छथि हुनकासँ जेठ, से ततेक दूरमे बियाहलि छथि जे हुनक अयबे कठिन । बड़ पसार छनि हुनको । भरि घर धीया-पुता छनि । अपनासँ छुट्टी होइनि तखन ने हमरा सभ दिस ताकथि । लोककेँ जखन आङुर धरऽबला टेल्ह भऽ जाइत छैक तँ सभ हित-प्रेमकेँ बिसरि जाइत छैक । तेँ डर होइत अछि जे तोँहू ने बिसरि जाह हमरा सबकेँ । हय, तोँ अनकर परतर नहि करिहह ।

आगाँ समाचार जे हमर मोन आब ठीक रहैत अछि । मुदा निरतागति एखन धरि अछिये । सेर भरि कऽ गायक दूध लेल जाइत छैक । माय चाहैत छथि जे दुइये दिनमे हमर पुतहुक लटल देह मोटा कऽ भकुना भऽ जाय । से कोना होयत ? हय, हमरा अपना ओ दूध पिबैत कोनादन लगैत अछि । मुदा ओ सभ मानबे ने करैत छथि । माय कहैत छथि जे एहिमे संकोचक कोन बात ? अहाँ दबाइ पिबैत छी । ई तँ दूध नहि थिकैक ।

आ ओ जखन कोम्हरोसँ अबैत छथि तँ पूछि बैसैत छथि-मोन नीक अछि ने ? मोन तँ ने अधलाह अछि ? अहाँ उदास किएक लगैत छी ?' आब एहि छन-छन मोन तँ ने अधलाह... पुछारीक कोन उतारा दियनि ? हुनकर मुँह तँ चिन्तासँ एकदम सुखायल रहैत छनि। हुनकर ओ मुरुझल मुँह देखि कऽ हमरा बुकोर लागि जाइत अछि । हम कतेक बेर कहलियनि जे-- अहाँ अनेरे सोचमे किएक पड़ल छी ? हमरा किछु नहि होयत ।' मुदा तकर कोनो असरि हुनका पर नहि होइत छनि ।

एक दिन, रातिमे हम कहलियनि जे पुरुखकेँ मौगी लेल कतहु एतेक सोच होइक ? मौगी तँ हाथक मैल होइत अछि । हम मरियो जायब तँ अहाँकेँ हमरासँ सुन्नरि-सुन्नरि पचासो कनियाँ भेटि जायत।

एहि बात पर ओ किछु बजलाह नहि । केवल टुकुर-टुकुर ताकऽ लगलाह आ ओहिनामे भरि आँखि नोर ढबढबा गेलनि । ओ सुसुकि-सुसुकि कऽ कानऽ लगलाह । कहैत छियह अंगरेजीफूल ! हम सप्पत दैत-दैत थाकि गेलहुँ, ओ किन्नहुँ चुप्पे ने होथि। हहा-हहा कऽ नोर आँखिसँ बोहिआयल जाइनि । पाछाँ हमरा अपने पर तामस उठल, कोन दुरमतिया घेरलक जे एहन बात बजना गेल ! ई जरलाहा जीह एना बहसि किएक गेल ? जे 'ओ' हमरा जान परानसँ बढ़ि कऽ मानैत छथि, जनिका सिनेहक पोखरिमे हाँस-माछ जकाँ बिहार करैत रहैत छी, तनिका एहन रुच्छ-अलच्छ बात कोना कहल भेल ? यैह सभ सोचैत-सोचैत हमरो कोंढ़ फाटि गेल । हमहूँ कानऽ लगलहुँ ।

हय, हमरा कनैत देखिते ओ झट दऽ चुप भऽ गेलाह आ हमरो चुप कराबऽ लगलाह जे एना कनने असेयास बढ़ि जायत । अहाँ किएक कनैत छी ?

हय, अंगरेजीफूल ! हम तँ अपने आहेमाहेमे बाझि गेलहुँ । तोरासँ तँ कोनो बात पुछबे नहि कयलियह । आब तोहर मोन केहन छह ? कने संयमसँ रहिहह । आब तँ थोड़बे दिन बाँचि गेलह अछि । नीके नीके भगवती पार लगा देथुन ।

मायकेँ जे तोँ चिट्ठी लिखने छलहक तकर की उतारा अयलह वा नहि अयलह से लिखबे ने कयलह । आब ओझा कोना कऽ तोरा रखैत छथुन से सभ फड़िछा कऽ लिखिहह । एही लिफाफमे ओझाक चिट्ठी सेहो छनि । तोँ ओकरा नहि पढ़िहह, नहि तँ तोँ हुनका नहि देबहुन । हय, जँ अपनेसँ देबामे लाज होइत छह तँ ओहिना पोथीमे, कि सिरमामे आ कि ओछाओन पर धऽ देल करियऽहुन । नहि तँ कमीजक उपरका जेबीमे राखि दिहनु ।

हँ, एकटा जरूरी बात बिसरल जाइत छलियह । केओ अरोसिन - पड़ोसिन जँ किछु देअओ तँ से खैहह नहि । के जनैत अछि, ककर नजरि केहन होइत छैक ? अनका घरक कोनो वस्तु बिसरभोरोमे मुँहमे नहि दिहह । तोरा हमरे सप्पत । मगहिनी मौगी सभ नीक नहि होइत होयत । अपना सभक ओहि ठाम जे मगहिया डोम सभ अबैत छैक से केहन डेराओन लगैत रहैत छैक ! आ हें, कोनो भारी वस्तु नहि उठबिहह । कोनो कुजोखी भऽ जयतह । ओझाकेँ हम चिट्ठीमे लीखि देलियनि अछि जे एकटा नौड़िन राखि लेताह । तोँ खाली चाह टा बना दिहनु, किएक तँ तोरा हाथक चाह हुनका बेसी नीक लगैत छनि ।

हय अंगरेजीफूल ! लिखबाक तँ छल बड़ी टा ढड्ढर मुदा से आब दोसर बेर। एखन बैसल-बैसल हमरा डाँड़ दुखा गेल अछि । एकलगाति नहि बैसि होइत अछि।

तोँ धरि बिसरिहह नहि । चिट्ठी पढ़िते देरी उतारा दिहह । जा धरि तोहर अच्छर फेरो नहि देखब ता धरि मोन उचटल रहत । तोरा हमरे सप्पत, देरी नहि करिहह । हमरासँ टुट्टी भेल होअह तकरा अपना अंगरेजीफूलक बुझि कऽ छमि दिहह । ओझाजीकेँ तँ हुनकर चिट्ठी देए दियऽहुन आ उतारा दिहह । तोहर– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **18 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी पढ़ि कऽ बड़ अहलाद भेल । जाहि दिनसँ तोहर दुखितक बात सुनलहुँ ताहि दिनसँ हमर प्राण तोरे पर लटकल रहैत अछि । होइत अछि जे पाँखि रहैत तँ तोरा लग उड़ि कऽ चलि जैतहुँ । मुदा से दिन कहिया होयत जे भेंट होयत। हम तँ बनिसारमे पड़ल छी । अपना देश-कोसक लोको सभ एहि ठाम बड़ कम छैक। जे छैको तकरा एतेक पलखतिये ने रहैत छैक जे ककरोसँ गप्प करत । सभ अपन-अपन धंधामे डूबल रहैत अछि ।

हय, तोहर ओझा सभ बात सुनबाक लेल आ बुझबाक लेल तैयार भऽ जयथुन मुदा हम अपना देश जाइ, से नहि नीक लगैत छनि । हम ई नहि कहैत छियनि जे हमरा नहि नीक लगैत अछि, नहि तँ ओ रोख मानि लेताह ।

हमे एक दिन कहबो कयलियनि जे– हमरा गाम किएक ने जाय दैत छी ?' ताहि पर ओ कहलनि जे अहाँ जे हमरा लगमे रहैत छी से हमरा बड़ नीक लगैत अछि। अहाँ चलि जायब तँ हमर सुरता अहीं पर लागल रहत ।' आब तोँही कहह जे एहि बातक कोनो उत्तर छैक ? लोक नैहर-सासुर नहि करतैक ? हय, तोहर चिट्ठी तँ हम नहि पढ़लियह मुदा वैह पढ़ि कऽ सुना देलनि । हय, तोँ केहन बताहि छह, एहनो बात सभ कतहु पुरुखकेँ लिखल गेलैक अछि ?

अँय हे अंगरेजीफूल ! तोरा हम एही दुआरे सभ बात फड़िछा कऽ लिखैत छियह जे तोँ सभ बात अपना ओझाके कहि दिहनु ? तोहर ओझा तँ खूब हँसैत छलथुन जे अहाँक अंगरेजीफूल तँ हमरा सुठोरा आ आद-गुड़ बनयबाक विधि सीखि लेबऽ लिखैत छथि । हय, ओ तोहर हाल पुछैत रहैत छथुन । कहैत छथि जे अंगरेजीफूल पटना औतीह ? मास दिन रहि कऽ चलि जैहथि । एतऽ मोनो दोसर रंग भऽ जयतनि । हय, सुनैत छिऐक अपना देशमे पानि-पाथर बड़ पड़लैक अछि । बात सत्ते थिकैक की ? लोक सभ काहि कटने होयतैक एहि जाड़मे । एहू ठाम बड़ जाड़ पड़लैक अछि । लोकसभ घरसँ बड़ कम्मे बहराइत छल । हम जे बिना ओढ़नाक बहार होइ तँ ओ हमरा रोकि लैत छलाह । आब तँ हुनकर सिनेह हमरा पर आरो बढ़ि गेलनि अछि ।

हय, तोँ जे हमरा मिसरकेँ अपन मरऽबला गप्प कहलहुन से बड़ बेजाय

कयलह । तोरा एहन नहि करबाक चाहियह । तोँ ई नहि बुझलह जे मौगियेटाकेँ अपना पुरुख पर बड़ सिनेह नहि रहैत छैक । नहि हय, पुरुखोकेँ अपना घरबालीपर बड़ ममता रहैत छैक । बड़ सिनेह रहैत छैक । पुरुख जँ तमसाइयो कऽ बाजि लैत छैक तँ ताहूमे मधूरे भरल रहैत छैक । तँ तोँ जे बात बजलह से बड़ अधलाह कयलह । हम तँ यैह कहबह । तोँ सभसँ पहिने हमरा मीसरकेँ मनाबह । ओ जखन मानि जयथुन तखने तोरा हम चिट्ठी लिखबह । नहि तँ खेलकट्टिस कऽ लेबह तोरासँ आ अपना मीसरकेँ चिट्ठी लिखबनि ।

मायक उतारा एखन धरि नहि आयल अछि । बुझैत नहि छहक, बेटी आन घर जाइते विरान भऽ जाइत छैक । सैह जँ हमरो बूझि लेलक तँ कोन अजगुत गप्प ? एहि ठाम तोहर ओझा नौड़िनिकेँ तकैत छथुन मुदा ओ सभ तँ एहि ठाम अपनो खेबा-खर्चा माँङऽ लगैत छैक । हय, एहि ठामक मौगी-पुरुख सभ लफन्दर होइत अछि । नौड़िनो जँ राखत, तँ से मुँह-कान, देह-दसा देखि-परेखि कऽ । बुझिते होयबहक जे किएक ।

हमरा पड़ोसेमे छथि एक गोटा । कोनो बड़का नोकरीमे छथि । हुनका बेसी काल चाह नीक लगैत छनि अपना नौड़िनेक हाथक । जा धरि ओ नहि औतनि ता धरि ओ ओछाओनपरसँ नहि उठैत छथि । घरबाली एहि लेल कटैत रहैत छनि । मुदा हुनका लेल धन सन । बड़का लोक जे छथि । एम्हरुक ई मौगियो सभ बड़ छलिया होइत अछि । रहत नौड़ी आ पहिरत पटोरे । ओकरा सभक साज-पसाहनि तँ अपना ओहि ठामक धनिको घरक बहुआसिनकेँ नहि होयतनि । यैह सभ सोचि कऽ नौड़िनकेँ नहि राखऽ चाहैत छी । मुदा ओ तँ तोरा बातकेँ गुरुमन्त्र बना लेलथुन अछि।

हम अपना सक भरि खूब संयमसँ रहैत छी । मुदा बड़ डऽर होइत अछि जे कोना कऽ निमाह होयत । भगवतियेक हाथमे अपन सभ किछु सोंपि देने छियनि, जे करथि । तोरा सासुकेँ हम गोड़ लगैत छियनि से कहि दियऽहुन । तोँ अपन ताक-छेम करिहह आ मीसरकेँ मनबिहह आ बिसरभोरोमे कोनो कड़ू बात नहि बजिहह । पुरुखकेँ नीक बोल सुनबाक बड़ सेहन्ता होइत छैक । से बात नहि बिसरिहह । हँ खराजपुरबाली भौजीक की हाल से लिखिहह । गाम घरक गप्प लिखिहह । बिसरिहह नहि । तोरा हमरे सप्पत । विशेष एखन एतबे । तोहर-- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **19 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । तोँ हमरा पर हमर चरजा देखि खूब तमसायल छह, से उचिते । जे केओ हमर ई गप्प सूनत तकरा तामस होयबे करतैक । तोहर मीसर तँ सहजहिँ रुसले छथुन । तोँहूँ जे हमरासँ बी कऽ लेबह तँ हम ककरा लऽ कऽ जीब ?

हय, हम तँ हुनकर पैर पकड़ैत-पकड़ैत थाकि गेलहुँ, मुदा ओ तँ बेदरदी छथि, कथीलय हमरा पर एक्को रत्ती दया औतनि । ने ओ हमरासँ बजैत छथि, ने हमरापर तमसाइत छथि। जँ कोनो बात मुँहसँ बहार भेल, ओ तुरन्त पूर । आब तोँही कहह जे एहि ठाम रहब कोना नीक लागत ? हय, एक दिन हुनका राति भरि गोहरबैत रहलियनि जे हमर जे अपराध भेल तकरा छमि दियऽ । मुदा हुनका लेल धन सन । कान मटियौने सुनैत रहलाह । हय, जाहि मीसरकेँ तोँ एतेक सुध बुझैत छहुन से ततेक ओ छथुन नहि । हम तँ यैह बुझैत छी । हय, जतऽ दूटा बासन एक ठाम रहतैक तऽ ढनमनयबे करतैक । तेँ लोक एना भऽ कऽ चुप्पा भऽ जयतैक । हम एहिमे ककरो दोख नहि बुझैत छिऐक । ई तँ हमर भाग्यक चरैनियाँ थिक ने । जे हमरा प्राणसँ बढ़ि कऽ मानैत छलाह से कतहु दूधक माछी बना देथि ? आब तँ हमरा कोनो बातो नहि कहैत छथि ।

एक दिन माय लग ठाढ़ि रही । माय हुनका हमर कोनो औषधि दऽ कहैत रहथिन जे सठि गेलैक अछि से आनि दहक । तोहर मीसर हमरा दिस ताकि उतारा देलथिन- उँह औषधि आनि कऽ की होयतैक ? तोहर पुतोहु कोनो मरि जयथुन थोड़बे ? मुदा मरिये जयथुन तँ हुनकासँ सुन्दर पुतोहु जेहन चाहबेँ तेहने आनि देबहु।

माय तँ कहैत छियह, अंगरेजीफूल, हुनका कुकुरक मौगति करऽ लगलथिन। कहऽ लगलथिन जे चुप रहह, चुप रहह । केहन छह जे एहन दुरभखा मुँहसँ बहार कयलह ? लछमीकेँ बदलि कऽ लछमी नहि भेटैत छैक । सोना तोड़ओला पर फेर सोना नहि टलहा भेटैत छैक ।

तोहर मीसर मायक गप सुनि दाँत निपोड़ने हँसैत रहलथुन । माय रुष्ट भऽ कऽ इनार पर चलि गेलीह । ओ आङनसँ कहैत बहार भऽ गेलाह जे-अन-धन रुपैया-पाइ दुर्लभ छैक मुदा लोक भेटब कोन कठिन ? हय, गूड़क मारि धोकड़े बुझैत छैक । माय की जानऽ गेलथिन जे एहि गप्पक तऽरी-भिट्ठी की छैक । तोहर मीसर तँ हमरा छुआ-छुआ कऽ बात बजैत छलथुन । हमरा बुझिये नहि पड़ैत अछि जे हुनक एहि बात पर तमसाइ आ कि कानी । ई चिट्ठी लिखैत-लिखैत हमर कोंढ़ फाटि रहल अछि । होइत अछि, मौगी भऽ कऽ जनम भेल तेँ ने ई दशा अछि । नहि तँ पुरुख रहितहुँ तँ हमहूँ उछतगर भेल बौआइत रहितहुँ । तोँहू छह से सहजहि कहिये देलह जे चिट्ठी नहि लिखबह । तोरा हमरासँ सिनेह नहिएँ रहतह तँ ताहिमे हमर कोन सक ? तोँ हमर अंगरेजीफूल छह से जखन एना सिनेह तोड़ि रहल छह, तखन ओ तँ सहजहि आन छथि । आन गामसँ हमरा उठा अनने छथि । हम अनकर घरमे छी। सदिखन मोनमे होइत रहैत अछि जे विधना मौगी बना कऽ जनम किएक देलनि ? बरु एहिसँ नीक जे चिड़ै-चुनमुन्नी बना दितथि ।

हय, तोरो हमरासँ सिनेह नहि रहलह, तैयो तोँ तँ हमर वैह अंगरेजीफूल छह।

तँ लिखैत छियह जे नीक नौड़ीकेँ रखिहह । हमरा तँ ओकरा सभ दऽ नहि बुझल छल तँ लिखलियनि । अपनो सब दिस बड़का-बड़का घरमे तँ एहिना रहैत छैक नौड़िनि सभ । खिस्सा सभ तँ बुझनहि छहक ।

अपना ओझाकेँ हम मोन छियनि से सुनि कऽ जी हुलसि गेल । मुदा पुरुखक कोन विश्वास ? आइ मोन रहबनि, काल्हि बिसरि जयताह । मुदा ओ हमरा बातकेँ गुरुमंत्र किएक बनौथुन ? लगमे छहुन तोँ....।

बंस छोड़ह एहि बातकेँ । हमर ओझा बड़ नीक लोक छथि । ओहन तोहर मीसर रहितऽथुन तखन ने ! हय, तोहर मीसर तँ हमरा पर तमसायले छथुन । तेँ तोँ हमरा चिट्ठी नहि दिहह । हमरासँ आब कोन सम्बन्ध ? दियऽहुन हुनके उतारा । हम फेर कहैत छियह जे अपन ताक-छेम करिहह आ डेरैहह नहि । एहिना सभकेँ होइत छैक । जा धरि मायक पद नहि भेटैत छैक ता धरि मौगी किछु नहि । एहि बातकेँ ध्यानमे रखिहह । हँ, तोरा लेल सागक बिड़िया बना कऽ रखने छियह । सुनगुनसँ बूझि पड़ल अछि जे तोहर मीसर पटना दिस जयथुन । जँ जयथुन तँ हुनके दिया पठा देबह।

हय, लगमे रहितह तँ कतेक रास वस्तु बना कऽ सधोरिमे दितियह । पहिल खेपमे सधोरि बड़ विन्याससँ देल जाइत छैक । से सेहन्ता तँ मोनेमे रहि गेल । तँ तोहर सधोरि बाँकी रहलह । दोसर खेपक लेल । तोँ तँ हमरा चिट्ठीक उतारा नहिये देबह, तखन सप्पत किएक दियह जे उतारा दैह । अपना दिन पर झखैत पिपहिया जकाँ तोहर चिट्ठीक बाट तकैत रहबह अवस्स । एक बात मोनमे रखिहह जे हम बड़ दुखिया छी । एखन आर किछु नहि । तोरे दुखनी– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **20 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । तोहर अच्छर देखि कऽ जतबे अहलाद भेल, ततबे पढ़ि कऽ दुखो भेल । एहि बात लऽ कऽ बड़ गरानि भेल जे हमर अंगरेजीफूल कनेकटा हँसीबला बातपर एतेक तमसा किएक गेलि । अँय हय, तोँ जे एतेक तमसाहि भऽ गेलीह अछि तकर की कारण ? एना तँ तोँ हमरा बातके रोख नहि मानैत छलीह !

हय, अंगरेजीफूल, तोँ हमर बालसंगी छह । पहिने तोँ हमर आ तोरे लागि कऽ ने हमर मिसरो हमर । तोरा तँ एहि दुआरे लिखलियह जे तोँ हमरा मीसरकेँ मना लेबह । से तोँ कयलह नहि आ हमरे पर तमसा गेलह । हय, पुरुखसँ रूसि कऽ मौगीकेँ कोन फल ? मौगीकेँ भगवान **बनौलथिन** अछि तेना जे ओकरा पुरुखक नजरिक नीचाँ रहऽ पड़ैत छैक । हमरापर तँ **बीतल अछि** सभ बात । तोँहीतँ बोल-भरोस देने छलीह जे हम कोना की करी आ आब तोँ अपने हमरा मीसरसँ बाजब-भूकब छोड़ि देने छह । ओ नहि बजैत छथुन तँ तोँ अपनो, बलसँ किएक ने टोकैत छहुन ?

हय अंगरेजीफूल, एह सभक एकटा अवस्था होइत छैक, से बीति गेलापर लोककें पछतावा होइत छैक। ओढ़ब-पहिरब, बाजब-भूकब, देखब-सूनब, अवस्थे गुने मनलगू होइत छैक। ओना तों जे बूझह मुदा हम बड़ गुनि-धुनि कऽ ई गप्प लीखि रहल छियह। तोरा जँ एहि गप्प सभक दुख भेलहु की होअहु तँ हमरा छमि दिहह।

हय, हमरा तँ होइत अछि जे अधिक दिन धरि दुखिताहि रहने तोरा नाकपर तामस जमा भऽ गेलह अछि। जँ हम अपना अंगरेजीफूल लग रहितहुँ तँ तामसक नाक पकड़ि कऽ आ कनैठी दऽ कऽ बैला दितहुँ, मुदा हम तँ 'परवस पड़ल कन्हैया गे दैया' ताहिमे पड़लि छी। कहैत छैक जे 'पड़लहुँ सैयाँ तोरा बसमे जे जे कहबह से से करबह'।

हय, मायक चिट्ठी आयल छल जे जखन ओझाजीक इच्छा नहि छनि जे तोरा आबऽ देथुन, तँ हमरा जे कहह करऽ लेल। हम तोरा ओझाकेँ कहलियनि जे जँ हमरा नहि जाय देब तँ माइयेकें एहि ठाम बजा दियऽ, तँ ओ कहलनि जे ककरा मायकें बजा दियऽ ? अहाँक मायकें की अपना मायकें ? अपना मायकें तँ हम चिट्ठी लीखि देने छिऐक जे छुट्टी होउ तँ पटना चल आ।' आब तोंही कहह जे एहि बातक कोनो जबाब छैक ? ओ छथि अगरजित्त। अपन जे मोन होयतनि सैह करताह। हय, नेहोरा करैत छियह, तों एकटा खूब सिनेहसँ अपना ओझाकें चिट्ठी लिखहुन जे ओ हमरा थोड़बो दिन लेल अपना गाम जाय देथि।

हय, तों लिखलह-अछि जे हमर मीसर पटना आबऽ लेल छथि। ई बात बुझि कऽ तँ हमर मोन तऽर-ऊपर भऽ रहल अछि। हय, कहिया पटना अबैत छथुन से तुरन्त लिखिहह। कतेक दिन पर हम अपन अंगरेजीफूलक वऽरकें देखबनि। हय, पटना जँ आबथि तँ हमरे ओतऽ आबथि। हुनका हमरे सप्पत कहि दियऽहुन। हमर मीसर हमरा ओतऽ पाहुन भऽ कऽ रहताह से सोचि कऽ तँ होइत अछि जे धरती पर पयरे ने रोपी। हय अंगरेजीफूल, गाम पर तँ हमरा आङन नहि अबितथि आ पटनामे तँ सरती हाथ पकड़ि अनबनि। हम तोरा ओझाकें सभ बात फड़िछा कऽ कहि दैत छियनि जे साढ़ूकें खूब नमहर चिट्ठी लिखियनि। आ हे मीसरकें आबऽ दहुन तँ हम गन्जन करैत छियनि जे हमरा अंगरेजीफूलसँ एतेक अनुरोध करौने छथि। से की वैह एकटा वऽर छथि जे एना गाल फुलौने रहताह।

हय अंगरेजीफूल, तोहर फगुआ कोना कोना बितलह से खुसफैलसँ लिखिहह। हमर मीसर होरीक रंग-अबीर खेलयलथुन की नहि ? अपना देशमे तँ फगुआ बड़ सेहन्तगर भेल होयतैक। पटनामे तँ बड़ सुन-सुन लगैत छलैक।

हय, तोहर ओझा फगुआ दिन भिनसरे-भिनसरेसँ हँसि-हँसि गप्प लड़बैत रहलथुन हमरासँ। हम तँ फरदी साड़ी निकालि कऽ पहिरने रही जे एहि ठाम रंगक कोन डऽर। दुपहरमे ओ हमरा सौंसे मुँह अबीर लगा देलनि। आ खूब जोरसँ ठहक्का

देमऽ लगलाह आ रब्बरबला फुचुक्कासँ सौंसे देह रंगसँ बोरि देलनि । हय, एना फगुआमे परि नहि ने लागल छलियनि हुनका । तोरा तँ मोने होयतह जे पहिल बेर आयल रहथि तँ हम केहन पतनुकान लेने रही ? थोड़े कालक बाद मारि रंग-अबीर लेने छौंड़ी सभ हमरा ओहि ठाम आयलि । ओ सभ तँ छलि अपने देशक । अपन जातिक तँ नहि मुदा बोली-बानी सभ हमरे तोरे सन । ओकरा सभसँ बजबामे बड़ पियरगर लागल । बूझि पड़ल जेना सभ अपने बहीन हो । हय, ओकरा सभकें तोहर ओझा चारि दिन पहिनहिसँ नोत दऽ आयल छलथुन जे हमरा डेरा पर बजौलनि अछि-आ एतऽ हमरा किछु बुझले ने । से रंगमे डूबि गेलहुँ, सैह बुझह । हय, तों तुरन्त उतारा दिहह, हम अपना दिससँ कागत आ लिफाफ धऽ दैत छियह । हमरापर तामस छह से हटा कऽ मीसरसँ मिलान करिहह । तोरे– **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **21 (गामसँ)**

तों अपना दिससँ लिफाफ आ कागत दऽ देलह से नीके कयलह, ने तँ हम उतारा नहि दितियह । आब एहि चिट्ठी-पत्रीसँ मोन उचटि गेल अछि । किछु नहि सोहाइत अछि । सभ किछु काटऽ दौड़ैत अछि । हय, कखनो कखनो कऽ एसगरमे होइत अछि जे हम मतिक बिसेख भऽ गेलहुँ अछि । कखनो-कखनो होइत अछि, जहर-माहुर खा ली, कि इनार-पोखरिमे डूबि कऽ जीव हति ली ।

हय अंगरेजीफूल, तों जे फगुआ दऽ लिखलह से गाममे सम्मत जरबे कयलै। सौंसे रंग-अबीर उधिअयबे कयलै मुदा हमरा लेल रुच्छ-छुच्छ रहल । फगुआक रंग-रभस दुनियाँलेल आयल छलैक, तोहर दुखिया अंगरेजीफूलक लेल नहि ।

हय, तोरा बुझल होयतह जे जहियासँ बियाह भेल, तोहर मीसर सभ साल एकटा कऽ साड़ी, साया आ ब्लाउज दैत छलथुन । से एहि बेर हमरा लेल नहि आयल। बड़ तामस भेल मोनमे । एतेक दुरजऽरू भऽ गेलहुँ ? दस हाथक साड़ियो एहि घरमे हमरा लेल नहि जुड़लैक ? पुरान नूआ पहीरि कोना कऽ जैतहुँ लोकक सोझाँ फगुआक दिन । हय अंगरेजीफूल, फगुआ दिन अपन मोन मारने बैसल रही । भरिसक दस बजे माय हमरा देखि कऽ कहलनि जे कनियाँ अहाँ नहयलहुँ किएक नहि ? जल्दी नहा लियऽ ।' ई कहि ओ पू पकाबऽ भनसाघर चल गेलीह ।

दोसर घरमे चौकी पर बैसल तोहर मीसर लिखैत छलथुन । प्राय: कोनो हिसाब-बारी छलैक । हमर चकरका कोर बला साड़ी ओही चौकी पर छल से लऽ कऽ नहाय चललहुँ तँ भेटल ओहिमे एकटा मोटरी बान्हल । खोलि कऽ देखलिऐक तँ पाँच टा पुड़िया गुलाबी रंगक आ आधसेर-तीन पा भरिक बड़का पुड़िया । साड़ीमे नवे कलप छलैक । माय धोबिन ओतऽसँ आनि देने छलीह । ओ मोटरी देखि कऽ मोन खौंझा गेल । हम पुछलियनि जे एहिमे की छैक ?

ओ कने बिहुँसैत कहलनि-किएक, अबीर थिकैक ।

हम रुच्छ भऽ कऽ पुछलियनि- की हांयतैक ई लऽ कऽ ?' आ पुड़िया खोलि देलिऐक । ओ कहलनि-अहाँ फगुआ नहि खेलायब ?

हम ई बजैत जे-हम की करब अबीर-तबीर लऽ कऽ राखू अपन.....आ पुड़िया हुनका दिस फेंकि देलियनि । हमर मतिकेँ की भऽ गेल छल से नहि जानि । हय अंगरेजीफूल, ओ पुड़िया हुनका देहपर खसि पड़लनि आ सौंसे देह अबीरसँ भरि गेलनि । हम चौकठिसँ बाहर चलि आयल रही । हुनक अबिरायल देह अझक्के देखलियनि । खाली हुनका कहैत सुनलियनि- वेश फगुआ खेलेलहुँ !

हम हकमैत माय लग आबि कऽ बैसि गेलहुँ आ बलहुँ आँच उसकाबऽ लगलहुँ । माय हमरा बिन नहयनहि देखि फेर कहलनि जे- नहा ने लियऽ, पानि आङनमे राखल अछि ।

हम उठि कऽ नहा अयलहुँ । नहायब की, देह पर दू लोटा पानि ढारि लेलहुँ सैह बूझह । पुरना साड़ी देखि माय कहलनि-अय, नवका साड़ी-ब्लाउज भगवतीक आगाँमे राखल अछि से गोड़ लागि कऽ पहीरि लियऽ गऽ । हम उठैत छी तँ नवका चूड़ी हाथ पर चढ़ा दैत छी । साँझ खन बौआ सभ वस्तु अनलक ।

हय अंगरेजीफूल, मायक ई गप्प सुनि कऽ भेल जे धरतीमे समा जाइ । सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, मोने-मोन जानकीजी जकाँ मनाबऽ लगलहुँ जे फाटऽ हे धरती तऽर जाइ । मुदा हमरा सन छुछुन्नरिकेँ किएक धरती अपना कोरमे लेतीह ? सीरा आगूमे गन्हकी रंगक छपुआ साड़ी राखल छलैक । केराक बीड़ सन पातर । ओहि ठाम जयबामे भेल जेना पैरमे जाँत बन्हा गेल तेहने लोत्थे भारी । हम ओ साड़ी पहिरलहुँ मायक रोचेँ मुदा ओ साड़ी हमरा कटैत रहल, भम्होंरैत रहल ।

हय अंगरेजीफूल, यैह हमर फगुआ थिक । आब तोँ अपना अंगरेजीफूलकेँ जे कहह, जे बूझह; सब बात पक्का । हय, आब बुझैत छी जे मीसर देवता छथुन, देवता । मुदा हुनका गरदनिमे हम छुतहरि बन्हा गेलियनि । जनैत छह ? ओ अपन पुरना कुरतामे साबुन लगा कऽ फगुआ खेलयलथुन । आ नीक जकाँ बुझलियनि जे खूब उदास छथि । जेना क्यो किछु पुछतनि तँ हबोढकार भऽ जोरसँ कानऽ लगताह । हमरा ई अकिद्दा नहि भेल जे हुनका आगाँ जैयनि ।

हय अंगरेजीफूल, ओहि दिनसँ ओ दलानेमे सुतैत छथुन, आङनो बेसी काल नहिएँ अबैत छथुन । मोटाक मोटा कापी सभ आनि कऽ दलानमे टलिया देने छथुन आ आध-आध राति धरि ओहीमे मगन रहैत छथुन, जेना वैह घरबाली होइनि ।

हय अंगरेजीफूल, हमरासँ हुनका कोनो सुख नहि भेलनि । हम कहियो तँ ने

सिनेहसँ पुछलियनि जे अहाँक मोन नीक अछि ने ! अहाँ उदास तँ ने छी ? अहाँ बड़ थाकि गेल छी । हय, कहियो हम हुनका पैरमे तेलो नहि लगौलियनि आ जतबनि कथी लेल । एक दिन ओ कहबो कयलनि– हम बड़ थाकि गेल छी, कने जाँति दियऽ ।' तँ हम कहलियनि जे-हमरा बुतेँ नहि होयत' आ कान मटिया देलियनि । आब ओ सभ मोन पड़ैत अछि । हमर बुद्धि कते बाउर अछि से बुझबह ? हम कहियो आइ धरि हुनका गोड़ नहि लगलियनि । लोक कहैत छैक जे वर देवता तुल होइत छैक । से हम कथीलय बुझबनि । हय अंगरेजीफूल, आब सभ बात सुमरि-सुमरि कऽ होइत अछि जे हम ओरेसँ अनटोटल करैत रहलहुँ । आ एकटा तोहर मीसर छथुन जे हमर मोन खराब होइत छल तँ राति-राति भरि जागि कऽ सिरमामे बैसल रहैत छलथुन । हमरा दुखमे झिटुकी जकाँ टाका बूकि देलनि । हम एहन ओछि जे फगुआ दिन एकटा अदनी वस्तु साड़ी लेल धैरज हेरा देलहुँ । हय, बड़ गरानि होइत अछि अपना पर । हमरा सन अधलाहि मौगी तोरा सौंसे दुनियाँमे नहि भेटतह ।

आर फगुआक हाल-चाल की लिखियह ? एहि बेरक फगुआ तँ बैरी भऽ गेल हमरा लेल । सौंसे संसार खुशी मनौलक आ हम झाम गुड़ैत छलहुँ । हय, हम तँ अपने खेपने जा रहल छी तखन की लिखियौन ओझाकेँ चिट्ठी । आबऽ तँ नहिएँ देथुन; से जनिते छह, तैयो हम हुनको नामे चारि पाँती लीखि दैत छियनि । जँ मानथुन तँ एतबेमे, नहि तँ चारि पन्नो लिखने नहि मानथुन । तोहर मीसर पटना कहिया जयथुन से कोना कहियह ? ओझाजी हुनका चिट्ठी लिखलथिन की नहि से नहि कहि । तोँ कहिया अपना मीसरकेँ चिट्ठी लिखैत छहुन ? तोरा हमरे सप्पत, एहि बातक चर्च नहि करिहह । तोरा हम अपन हीत-परेम बुझि कऽ एना सभ बात फड़िछा कऽ लिखलियह अछि । देखिहह, बात फूजऽ नहि पाबय । आ हे, चिट्ठीक उतारा तुरन्त दिहह । तोरा हमर देह-सामाङक सप्पत, उतारा तुरन्त दिहह, देरी नहि करिहह । तोहर चिट्ठी पाबि कऽ भरसाहा होयत । बड़ उद्वेग धयने अछि ।

एकटा बात पूछब बिसरिये गेलियह, बाबूजीकेँ अपना गाम लऽ जयबाक लेल समाद दियनि की नहि हय, से अपन विचार लिखिहह । होइत अछि जे अपना गाम गेलापर मोन बहटरि जायत । तोहर– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **22 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । जहिं भेटल तहिं उतारा देबऽ लेल बैसि गेलहुँ । हमहूँ कोनो नीक मोने नहि छी, हय ! तोहर ओझोक मोन उचड़ले रहैत छनि । आ ताहि पर तोहर ओहन चिट्ठी भेटल तँ भेल जे एखन कुदिनक बसाते बहल छैक । हय, अपना गामपरसँ चिट्ठी आयल अछि जे बाबू बड़ जोर दुक्खित छथि । एकदमसँ सेज

धऽ लेने छथि । तोरा तँ बुझले छह जे हुनका बेर-बेर शूल उखड़ि जाइत छनि, मुदा एहि बेर बड़ लबेजान भेल छथि । माय लिखलक अछि जे कोनो दबाइ-बीरो लगबो ने करैत छनि । संगहि फूलबाबूकँ से दामस भऽ गेल छलैक । हय, होइत अछि जे आब बाबूकँ नहि तँ ने देखि पयबनि ! होइत अछि, केवाड़ बन्न कऽ कऽ खूब कानी, खूब कानी । जे बाबू हमरा ओना कऽ कऽ पोसलनि तनिका अपन मुँहो ने देखा सकबनि । जँ कहूँ किछु भऽ जयतनि तँ हमर मुँहो नहि देखि सकताह । लगमे टाका-पैसा रहैत तँ मायकेँ पठा दितिऐक, से हाथ एकदमसँ छुच्छ अछि । हुनका कहबो कोना करियनि ? ओहो जचनामे पड़ल छथि । हुनका गामपरसँ काल्हि खबन चिट्ठी अयलनि अछि जे घरमे ककरो मोन ठीक नहि छैक । जेठजन कोनो मोकदमामे फँसि गेलाह अछि आ जेठजनी फागुने मास नैहर चलि गेलीह। ओतऽ मायकेँ एकसरे सोंसे घर सम्हारऽ पड़ैत छनि । ओ चिट्ठी लिखलथिन अछि जे एनामे जे कहैत जाह, से करी । तोरा ओझाकेँ जेठजनक चिट्ठी अयलनि अछि जे सभ खेत-पथारक पोत- बाकी लगतैक । तँ टाका चाही ।

हय, तोहर ओझाकेँ किछु अक-बक नहि सुझैत छनि । एम्हर आफिसमे मेहो मारि खटनी होइत छनि । साँझ कऽ अबैत छथि तँ मुँह सुखा कऽ चोंचा भऽ गेल रहैत छनि । ओ हमरा कहलनि जे आब एहनामे की करक चाही ?' तोँही कहह जे हम की जबाब दितियनि ? ओ हमरा पुछलनि जे आब एहन बेरमे अहाँ कतऽ जायब ? नैहर, सासुर आ कि पटनामे, कोन पसिन्न पड़त ?

हय अंगरेजीफूल, हुनका बड़ थकथकायल सन देखलियनि । हम कहलियनि जे हम की अहाँसँ बाहर छी ? अहाँ किछु करब तँ हमरा पसिन्ने पड़त । हमर गति तँ अहाँ छी । हम तँ जतऽ कतहु रहब तँ अहीं लऽ कऽ रहब । हमरा जाहि ठाम रखने अहाँकेँ सुभिस्ता होयत, ओही ठाम राखू ।

हय, एते दिन हुनका संग रहि कऽ बुझलहुँ जे ओ हमरा बिना नहि रहि सकताह आ तेँ हमरा गाम जाय देबऽ नहि चाहैत छलाह । मुदा हमहूँ हुनका बिना नहि रहि सकब से बुझाइत अछि । हुनका बिना हमरा बुतेँ रहल पार नहि लागत । तेँ नीक कयलनि जे नहि जाय देलनि । ओ कहलनि जे-जे किछु करब से मासक खतमी छैक, हाथ खाली अछि आ ऊपरसँ गामपरक ई दशा । हम कहलियनि-एहि लेल एना सोच किएक करैत छी ? सभ भगवतीक भारा छनि । वैह सभ किछु पार लगौथिन ने ।' हय अंगरेजीफूल, हुनकर आँखि नोरायल जकाँ बुझि पड़ल । भेल जे आँचरसँ पोछि दियनि । तावतमे ओ बात बदलैत कहलनि जे- माढ़, कोना की आबि रहल छथि ? अंगरेजीफूलक चारि पाँतीक ई हुकुम नहि पुरलनि तँ खूब तमसायलि होयतीह ।

हम कहलियनि जे- ओ बेचारी की तमसायति ? ओ तँ अपने विपत्तिमे पड़लि अछि । हय अंगरेजीफूल ! तोँ ई नहि बुझिहह जे हम तोरा ओझाकेँ कोनो बात

कहलियनि । ई बात कतहु हुनका कहियनि ? हय, तोहर हाल बुझि कऽ तँ मोन अहुछिया कटैत अछि तोरासँ आ मीसरसँ भेटक लेल । एहिनामे भेट होइतह आ तोरा हम तीरि कऽ हुनका घरमे ठेलि दितियह आ जिँजिर भरि दितियह । हय, हमरा तँ कखनो मीसरपर तामस होइत अछि आ कखनो तोरापर । एतेक कतहु मनाओन-छिड़ियाओन भेल अछि ? तखन जेहन किरदानी तोरा ताइएँ भेलह से नीक नहि मुदा ओ तँ भऽ गेलैक । ओहि लेल तोरा जे बितैत होयतह से हम बुझैत छियह । हय, तोरा टोलो-पड़ोसमे संबंधमे क्यो ननदि नहि छह ? कोनहुना आनेमानेसँ तोहर सासु बुझि जैतऽथुन तँ सभ ठीक भऽ जैतह ।

एक बात मोन राखह, आब जखन बाजा-भुकी होअह तँ हुनकासँ नीक-बेजाय पुछैत रहियहुन । हय, गोड़ लगने क्यो नमहर-छोट नहि भऽ जाइत छैक । खाली एहिसँ अपन शील-सोभाव देखार होइत छैक । अपने जँ लऽत कऽ चलब तँ क्यो ने दूसत आ उतान भऽ कऽ चलने सौंसे हसारति होयत । हुनका देह-तेह नहि जँतैत छहुन, गोड़ नहि लगैत छहुन, से बुझि कऽ बड़ छोह भेल । हमरा नहि बुझल छल जे तोँ एतेक बुझनुक भऽ कऽ एतेक बकलेलि भऽ गेलि होयबह । हम बुझैत छी जे आब अंगरेजीफूल बताहि जकाँ नहि करति । तोँ हमरा बातकेँ गीरह बान्हि लैह जे हमर मीसर तोरा बड़ मानैत छथुन । धैरज धरह, भगवती सभ सोझरा देथुन ।

तोँ जे लिखलह जे गाम कऽ समाद दियनि की नहि, एहन काज बिसरभोरोमे ने करह । जँ माय-बाप ई बात बुझैत अछि जे हमर बेटी सुखसँ नहि अछि तँ बड़ सन्ताप होइत छैक । तेँ एखन चुपे रहह आ मीसरसँ मिलान भऽ जाह, तखन गाम जयबाक चर्च करिहह ।

हय अंगरेजीफूल, बहिकिरनी तँ नहि भेटलि । एकटा आठ-नओ बरखक छौंड़ा भेटल अछि । बड़ सुजन अछि ओ । काल्हि मोन कोनादन करऽ लागल तँ तोहर ओझा अस्पताल लऽ गेलथुन । भेल किछु ने, बौआ टौआ कऽ चल अयलहुँ । फेर आइ जयबाक अछि । नामेटा पटना अस्पताल सैह बूझह । मारि कहूँ हरान करबैत छैक । एम्हर जाउ, तँ ओम्हर जाउ । अनेरो ढहनाइत रहू । हमरा नीक नहि लगैत अछि। सौंसे संसारक रोगाह सभ जेना ओही ठाम जमा भऽ गेल होइक । देखी जे ओहि ठाम की होइत छैक । चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । तोरा हमरे सप्पत ! तोहर– **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **23 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । की उतारा दियह आ की नहि । तोँ अपने छह झंझटिमे, कहबह अंगरेजीफूल अपने आमामाइक खिस्सा पसारि दैत अछि । मुदा हम की करू हय, तोरा नहि अपना मोनक बात कहियह तँ ककरा कहबैक ? आब तोहर

अंगरेजीफूल कोनो जिनगीमे नहि छह आ ने रहतह । हय, पहाड़ लगैत अछि जे एतेकटा जिनगी कोना खेपब । कहैत छैक जकरा साँय मानय सैह ने सोहागिन ! जकरा से नहि छैक तकरा जीयब बेकार छैक । तोँ कहबह जे कोन एहन बात भेलैक जे हमर अंगरेजीफूल एना लिखैत अछि ? ततमतेमे छी जे ई बात तोरा लिखियह की नहि। तोँ ई बुझिये कऽ की करबह ? अनेरे कचोट होयतह । फेर होइत अछि जे अपन नीक-अधलाह तोरा लिखैत अयलियह अछि तँ आइ इहो गप्प करेज पाथर कऽ लिखिये दियह । हय अंगरेजीफूल, पाँच-छौ दिन भेलैक अछि, साँझ कऽ हम आङनक दुरुक्खा लग ठाढ़ि रही । माय खरिहानमे ककरोसँ गप्प करैत छलीह । हम अकानि कऽ सूनऽ लगलिऐक । ओ मौगी मायकेँ कहलकनि जे- अय, जँ एहन अछि तँ कतहु देखबियौक- सुनबियौक ने । किछु जोग-जाप करा दियौक ।

माय कहलथिन-कतेक तँ कबुला-पाती कयलहुँ अछि । भगवतीकेँ जोड़ा छागर कबुललियनि । बाबावैद्यनाथकेँ भारे गंगाजल आ सोनाक ठोप कबुललियनि, तैयो आँचर नहि फोलैत छथिन ।

ओ मौगी ताहि पर बाजलि-अय, तखन कनियाँकेँ धीया-पुता नहि होयतैक। एतेक दिन भऽ गेलैक आ कतहु किछु नहि । कहू तँ, कतेक सेहन्ता रहैत होयत धिया-पुताकेँ कोर करबाक लेल ! अय, हमर बात मानी तँ बच्चाकेँ दोसर बियाह करा दियौक । अहाँक सोन सन बेटाकेँ हलसि कऽ बेटीवला सभ लऽ जायत ।

हम दम सधने सुनैत छलहुँ । होइत छल जे आब प्राण बहार भऽ जायत । भेल जेना चाउन्हि आबि जायत । तैयो होस कयलहुँ जे माय एकर की उत्तर दैत छथिन। माय कहलथिन जे -हँ आब यैह सोचैत छी जे बच्चाकेँ दोसर बियाह करा दियनि। आब पुछबनि एक दिन ।

- हँ हँ कराइये दियौक, वंश कोना बढ़त ?

आ हम अपन माथ पीटि कऽ बैसि गेलहुँ । जँ नहि बैसितहुँ तँ तड़ाँहि दऽ खसितहुँ । सौंसे देह जेना थर-थर काँपऽ लागल । घामे-पसेने नहा गेलहुँ ।

ओमहरसँ माय आबि गेलीह । ओ देखिते बाजि उठलीह-जाह की भेल अय कनियाँ ? एना अनस्थरिमे किएक बैसलि छी ?

हम कहलियनि-ओहिना जी फरिआय लागल छल । तेँ बैसि रहलिऐक ।' ओ हमरा कहलनि-चलू चलू, घरमे पड़ि रहू । मुँहमे एक टूक सुपाड़ी धऽ लियऽ ।' हय, औंटल दूधमे जेना अम्मत पड़िते फाटि जाइत छैक तहिना हमहूँ भऽ गेल छी । आब जीबिए कऽ की होयत ?

हय अंगरेजीफूल, हम तँ पहिनेसँ तोहर मिसरक रंग-ढंग देखैत छलियनि ।

बहुत रास बात तँ पहिने लिखिये देने छियह । तोँ अपना मीसरकेँ धौबांसँ चिक्कन बुझैंत छलहुन । हमरा लेल सुखदायक वस्तु आनि कऽ राखिये देताह । हय, सुनबे करैत छलिऐक सौतिनक कथा, से आब परतच्छे होयत । हमरा छातीपर सौतिनिसाल रहत आ हम एहि घरक नौड़िन रहब । जँ नैहरमे रहब तँ लोक चारू दिससँ आङुर देखा कऽ कहत जे देखही, बेचारीकेँ घरबला छोड़ि देने छैक । कतेक कहत जे जँ एहन सतोजनी छलीह तँ ने माँय छोड़ि देलकनि !

यैह सभ सोचि कऽ होइत अछि जे जहर-माहुर खा ली, कि इनार-पोखरिमे धसि जाइ, कि की करी । हय अंगरेजीफूल, होइत अछि जे खूब भोकारि पाड़ि कऽ कानी । कोंढ़ फाटल जाइत अछि । कतबो रोकैत छी, तैयो आँखिसँ नोर भट दऽ खसि पड़ैत अछि । कोनो काज करऽमे मोन नहि लगैत अछि । खायब-पीब नहि सोहाइत अछि । हय, एहिसँ नीक छल जे ओहि बड़का दुखमे मरिये जैतहुँ । एँ हय ! जँ हिनका सभक मोनमे यैह बात छलनि जे फेर नऽवसँ कोबर लिखी, तखन एतेक दवाइ-बीरो किएक करौलनि ? छोड़ि दितथि । अपन इलटि-बिलटि कऽ मरि जैतहुँ।

हय, हम तँ अपना जनैत कहियो अन्यथा नहि कयलियनि । तखन कथीक बदला हमरासँ लैत छथि ? हय, तोहर मीसर तँ हमरा सहजहि दूधक माछी बनाइये देने छथुन, से बुझले छह । मुदा जे माय हमरा एना जान-परान कऽ मानैत छलीह, तनिको लेल हम तीत भऽ गेलियनि । हमरा तँ होइत अछि जे माइयोकेँ बुझबामे आबि गेलनि जे तोहर मीसरकेँ हम नीक नहि लगैत छियनि । आ बुझितथिन कोना नहि ? एक दिन तँ तोहर मीसर अपनहि कहि देने छलथिन जे जेहन कनियाँ चाहबेँ तेहन कनियाँ आनि देबौक । हय अंगरेजीफूल, हम की करू ? तोँ लिखह जे हम की करू? हमर जी-हाथ हेरायल अछि । की- सँ-की कऽ लेब तकर नहि कोनो ठेकान। तोँही कहह जे धिया-पुता भेनाइ तँ अपना हाथक बात नहि थिकैक । जँ कोनो दोख हमरामे अछि तँ ताहि लेल ओ हमरा ताजन देथु ने, हमरा एको रत्ती दुख नहि होयत । मुदा एना हृदयशूल देब की सोहाइत छनि ? ओ सभ हमरा सभसँ श्रेष्ठ छथि तँ जे किछु हुनका सभसँ भेटत से असिरबाद बूझब । मुदा हमरा जे वस्तु भेटल छल अपन कहि कऽ से नहि छीनथु । हमर माथक सिन्नुर आ हाथक लहठी अनका नहि देथुन । हमरा यैह दूटा वस्तु चाही, और किछु ने हमरा देथु ।

हय, पहिने होइत छल जे सौतिनसँ लोक अनेरे डेराइत अछि । घरमे दू गामक दूटा मौगी रहतैक तँ की हेतै ? दू देयादिनी तँ रहबे करैत छैक । मुदा आब बुझैत छिऐक आ जिनगी भरि बुझैत रहबैक । आब तोहर मीसर हमर नहि रहलथुन । आब ओ अनकर भऽ गेलथुन । नवकीक आगाँ पुरनकीकेँ के पुछैत छैक ? बियाही बऽहु परपियाही आ सगही बऽहु सिपाही । हँ हय, अंगरेजीफूल, आब भरि जनम तोहर मीसर

संहन्ते वनि क ऽ रहि जयताह । हय, एते दिन जे हुनक महांमहां गप्प सभ होइत छल से सभ की फूसि छल ? जँ येह करवाक छलनि तँ शुरूमे एतेक दुलार किएक कयलनि ? ओरेसँ झरकौने किएक ने रहलाह ? ओगक झरकाओल नीक, परिकाओल नहि नीक । से जँ करितथि तँ एखन एतेक दुख नहि होइत । तोहर एहि अभगली अंगरेजीफूलक येह कथा छह । आओर की लिखियह ? सक रहैत तँ अपन कोंढ़-करेज खखोड़ि क ऽ चिट्ठीमे राखि दितियह ।

बाबा लगाओल बेलरी बिन सींचे कुम्हलाय
पास ने आवय भमर से मूँह निरखि फिरि जाय
एक दिन भमरा हमर छल नयना ललक लगाय
भेल विधाता वाम की ताहि देलक हरकाय

तोहर अभागलि-- **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **24 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी पढ़िते देरी बूझि पड़ल जे हम बौक भ ऽ गेलहुँ । आदिसँ अन्त धरि चिट्ठी बेर-बेर पढ़लहुँ अछि जे कोनो दाग-दागमे ई बात लिखल होयतैक जे ई सभ बात फूसि छैक । मुदा अधलाह बात कतहु फूसि भेलैक अछि ? हय, भेल जे, खूब कानी । चिट्ठी पढ़लाक बाद सदिखन कोंढ़ फटैत रहैत अछि । छाती कपैत रहैत अछि । हय अंगरेजीफूल, चिट्ठी पढ़लाक बाद जखन हमर ई हाल अछि, तखन तोहर जे दशा होइत होयतह से विधाते जनैत छथि । तोरापर जे बितैत होयतह से हम खूब नीक जकाँ बुझैत छियह । हमरा छोड़ि क ऽ एहिसँ बेसी दोसर के जानि सकैत अछि ?

हय, हमरा एखनो विश्वास नहि होइत अछि जे हमर मीसर एहन निट्ठुर भ ऽ जयताह । ओ कठोर होम ऽ वला लोक नहि छथि से हम एक-दू-तीन क ऽ कहि दैत छियह । मोन नहि छह ? एक बेर गाममे बहुत दिनपर आयल रहथुन तँ हम कहने रहियनि जे सभ पुरुख एके रंग छातीक पाथर होइत छैक । नजरिक पाछू जहाँ भेल की सभ दुलार-मलार बिसरि गेल । सभ कौल-करारकेँ पानिमे भसा देलक । मौगियेक जाति कुजाति होइत अछि जे ओकरा लेल अपन जान दैत रहैत छैक ।

ओ कहने रहथि जे --कोना बुझैत छिऐक जे पुरुखमे ई सभ बात नहि होइत छैक ? होइत तँ छैक ओकरामे मुदा ओ देह लगा क ऽ मार ऽ जनैत अछि । मौगी जकाँ आँखिसँ नोर नहि भुटभुटाव ऽ लगैत अछि । पुरुषक मोनकेँ मौगी चिन्हैत छैक नहिये ने, उनटे दोख देव ऽ लगैत छैक ।' हय अंगरेजीफूल, आरो मारि किदन-किदन कहने रहथि, से सभ बात फोड़िछा क ऽ मोन नहि अछि । मुदा तोरा लेल जे हम ओहि दिन आवेश देखने छलियनि से बिसरल नहि जाइत अछि । तखन कोना मानि लिय ऽ जे हमर मीसर आब अंगरेजीफूलक बदलामे दोसर वियाह करताह ?

हय, मुदा सोचैत छी जे मनुक्खक मोनक कोन विश्वास जे कखन केहन भऽ जयतैक। पाथरक मूरुत तँ छैक नहि जे जेना बैसा देलिऐक तेना बैसि गेल। हय, ओहो पाथर तँ बेसी दिनेँ ढहिये-ढनमना जाइत छैक। जँ सत्ते बात जे हमर मीसर दोसर वियाह करताहे तँ तोहर की दशा होयतह सैह सोचि-सोचि कऽ झूर-झमान होइत रहैत छी। हय, जँ देब-लेब लऽ कऽ मोन असन्तुष्ट रहितनि तँ एकटा बातो, से तँ महुअक दिन कहलियनि जे मीसर रूसू। तँ ओ कहलनि-कथी लेल रूसू। रूसि कऽ की होयतैक ?' आ से मीसरकेँ फेर बियाह करबाक मोन होइत छनि। धिया-पुता लेल तोहर बयस कोनो बीति गेलह अछि हय? तोहर सासु ई किएक नहि सोचैत छथुन जे हमर बेटा-पुतोहु एखन कोन दीन-दुनियाँ देखलक अछि ?

बुढ़िया सभक ई कोन लति होइत छैक ? होइत छैक जे हमर पुतोहु कोबरमे पयर दिअय तँ कोरेमे नेन्ना लेने। थोड़बो दिन धैरज नहि राखत। नेन्ना-नेन्नाक रटना लगौने रहत जे सुनैत-सुनैत नवकनियाँ सभक कान पाकऽ लगैत छैक।

हय अंगरेजीफूल, हम एहिना उदास रही तँ तोहर ओझा हमरा पूछि देलनि जे एना उदास किएक छी ? हम हुनका सभ बात खुलासा कहि देलियनि। ओ थोड़े काल चुप रहि कहलनि जे हमर साढ़ू बेस नीक लोक छथि। ओ एहन काज नहि कऽ सकैत छथि।

हम कहलियनि जे हमर अंगरेजीफूल की फूसि लिखलक अछि ?' ओ कहलनि-अहाँक अंगरेजियोफूल बताहि छथि। आइ-काल्हि जकरा दुइयो अच्छरक ज्ञान छैक से ई सभ बात नहि सोचत। हमर साढ़ू तँ बी.ए. पास कऽ मास्टरी करैत छथि। दोसर बियाह करताह, सेहो नेन्ना-भुटका लेल ? आइ-काल्हि तँ लोक धिया-पुता होयबाक डरेँ छीह कटैत अछि।

ओ मारि ऐनि-कानून सभ देखबऽ लगलाह जे- आब तँ तेहन कानून बनि गेलैक अछि जे पहिल घरबालीक रहने कंओ दोसर बियाहे नहि कऽ सकैत अछि।

हय अंगरेजीफूल, तोहर ओझाक ऐनि-कानून तोरा लेल तँ अकाजके छह। हय, ऐनि-कानूनसँ धन-बीत भेटि जयतैक , खेबा-खर्चा भेटतैक। मुदा सिनेह तँ ओहिसँ नहि भेटतैक। ओ तँ अन्तरक वस्तु थिकैक, जोर-जबरदस्तीसँ छीनल नहि जा सकैत छैक। एहि लेल तोहर ओझासँ के मुँह लगबैत ?

तोँ धैरज धयने रहह। मीसरक लेल अपना मोनसँ एको रत्ती सिनेह कम नहि करिहह। हुनका विषयमे कोनो अन्यथा नहि सोचिहह। हय, मौगीक सिनेहक डोरी बड़ सक्कत होइत छैक। मीसरक दिन थिकनि जे ओ एहि सिनेहक डोरीकेँ तोड़ि कऽ पड़ा जयताह ? हमरा तँ से विश्वास नहि होइत अछि ?

हय मीसर तँ अपना मुँहसँ नहि ने किछु बजलथुन अछि ? से जेँ सुन-गुन

बुझिहक कि मायकेँ दू अच्छर लिखि दिहह आ हमरो लिखिहह । हुनका मनाबऽ लेल एहि ठामसँ तोरा ओझाकेँ पठयबनि । मोनमे बेसी सोच नहि करिहह । भगवतीकेँ अनुकूल होइतें सभ ठीक भऽ जयतैक । चिट्ठीक उतारा तुरन्त दिहह । लिफाफ संग दऽ दैत छियह ।

गहिर सरोवर उखम समयमे सूखल पड़ल उपास ।
धैरज धयने रहु सखी बरिसत साओन मास ।।

तोहर– **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **25 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी की भेटल, अमरित भेटि गेल । बूझह तँ ओही बल पर जीबैत छी, ने तँ हमरो जीबाक भरोस ? हय, हम की कोनो जीवनमे छी ! दिन-राति मनुआँ हमर कनैत रहैत अछि । कैक दिन माय पुछलनि जे कोन भितरिया दुख भऽ गेल अछि जे एना मुँह सुखा गेल अछि ?' हम कोना की कहियौन जे हमर की दुख अछि आ ओकर की औषधि होयतैक ?

एक दिन माय कहलनि-अहाँकेँ भितरे-भीतर की होइत अछि से बाजू ने जकर दवाइयो बीरो होइक ?' हम तँ मोने-मोने बजलहुँ जे हमर दवाइ-बीरो करऽसँ नीक अछि जे दू आनाक जहरे-माहुर आनि कऽ खुआ दी । अयँ हय अंगरेजीफूल ! हमरा जे दुख सभ देमऽ जा रहल छथि ताहिसँ की ई देही दुख बड़ पैघ छैक ? हय, देही दुख तँ छौ-मास वर्ष दिनमे रहि-सहि कऽ छुटि जाइत छैक । आ हमर दुख की छूटऽबला अछि ? कहैत छैक, जनमाहु लेबऽ की बरखाहु । से जनमाहु दुख कपार पर सटऽबला अछि । हमर भागे एहन अछि तँ हुनकर सभक की दोख ?

हय, एमहर दुनू माय-पूतकेँ बेस खुसुर-फुसुर करैत देखैत छियनि । एक दिन एहिना बजैत सुनलियनि । माय पुछैत छलथिन जे कतेक खर्च-बर्च पड़तैक ?

तोहर मीसर कहलथुन- किछु खर्च तँ अवश्ये पड़तैक । एहना ठाम तँ खर्च बेसी होयबे करतैक । अंगरेजीफूल हय, हमरा ओहि दिनसँ असरधा भऽ गेल अछि। एखनेंसँ ई सभ दोसर बियाहक खर्च जोड़ने जाइत छथि । एकर अर्थ तँ ई ने भेल जे बात-विचार भऽ गेल छनि । खाली शुद्धक बाट तकैत छथि । ओहि दिन और बात तँ नहि सुनलिऐक, खाली एकटा बात सुनलिऐक । तोहर मीसर कहैत छलथुन जे आब जल्दीये भऽ जयतैक ।

हय अंगरेजीफूल, आबो तोरा सन्देहे छह जे तोहर मीसर दोसर बियाह नहि करथुन ? करथु ने दोसर बियाह । हम किछु कहबनि ? हुनकर यैह इच्छा छनि तँ के रोकतनि ? भगवान भोग देथुन । हम तँ राति-दिन झखैत रहैत छी अपन भाग्य

पर। केहन दिन होयत, केहन राति होयत ? हय, जखन घरमे नवकी कनियाँ आबि जयतैक तँ सभ रहत ओकरे अल-दलमे । हम अछोप जकाँ एक कात, कोनो कोनमे बैसलि रहब । छुतहर बासन जकाँ फेकलि रहब । टुटलाही छितनी जकाँ ओंघरायल रहब । बहारनि-सोहानि जकाँ कोनो कोनमे पड़लि रहब । केओ कथो लेल पूछत ?

एक दिन माय तोरा मीसरकेँ कहैत छलथिन जे-देखहक कनियाँकेँ फेर कोन सुखौंती रोग धयने जाइत छनि जे ने किछु कहैत छथुन ने कखनो हँसैत-बजैत छथुन।

हय, अपने रोगक बीयो बाओग करैत छथि आ अपने नाड़ियो टोएत छथि । पीठमे मारि कऽ मुँह हँसोथब एकरे कहैत छैक ।

एतेक दिनक बाद हमरा ओ पुछलनि जे-अय, अहाँ एना अनमनायलि किएक रहैत छी ? अहाँकेँ की होइत अछि ?' हमरा आश्चर्य भेल जे कोना कऽ आइ धनुखा टुटलैक ? कोना कऽ बैसाख मासमे मेघ बरिसल ? कोना कऽ मोन भेलनि जे एहि घरमे दोसरो केओ रहैत छैक ? हय, फेर भेल जे पुरुखक मोनक कोन भरोस ? आगाँमे मिठ-मिठ, पाछाँमे तीत अक्कत ।

हमरा किछु नहि फूरल । हम कनेक चुप रहलहुँ, फेर कहलियनि-हमरा कहाँ किछु होइत अछि ?' तोहर मीसर कहलनि-किछु तँ अवश्य होइत अछि ।' हम मोने-मोन कहलहुँ जे से होयबाक रहैत तँ अहीं ने हमर भऽ कऽ रहितहुँ ? से जखन नहि भेलहुँ, तखन हमरा किछु होइत अछि, ताहिसँ अहाँकेँ कोन मतलब ?

फेर तकरा बाद किछु बुझलिऐक नहि । हय, हमरा तँ जे होयबाक होयत तकरा के रोकि सकतैक ? किन्तु तोँ अपन हाल-सुरति नहि लिखलह । आब तँ लगिचयलह। एहि अभगलीकेँ जुनि बिसरिहह । तोरे पर भरोस लगौने छी । तोँही हमर अवलम्ब छह । तोरे अभगली– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **26 (पटनासँ)**

तोरा पर हम एखन बड़ तमसायलि छियह । आन चिट्ठीमे तँ तोँ ई लिखैत छलीह जे हमर मीसर पटना आबऽ लेल छथि मुदा एहि बेर तोँ से सभ किछु नहि लिखलह । हय, तोहर चिट्ठी हपसि कऽ पढलहुँ । कोन रूपेँ तोँ एखन छह से बूझऽ लेल मोन आकुल अछि । तोरा आइ पैघ ढड्ढर लिखि रहल छियह ।

हय, जाहि दिन तोहर चिट्ठी भेटल ताहि दिन अस्पताल गेल रही । दिन आब गनले गृथल बूझह । हय अंगरेजीफूल, दोसर दिन भिनसरुक उखराहामे चाहक लेल पानि चढ़ा देने छलिऐक, तावतमे मुँहथरि पर मीसरकेँ देखलियनि ठाढ़ । हुनका देखि कऽ जे हमरा हुलास आ आश्चर्य भेल से पूछह जुनि । तामस भेल तोरा पर जे तोँ जँ ई पता दऽ देने रहितह जे हमर मीसर कोन दिन पटना आबि रहल छथि, तँ थोड़ेक

विन्यास करितहुँ । से तँ हमरा-तोरासँ कोनो सतुराबैरी छह । मीसरकेँ हम कतेक दिन पर देखलियनि हय ! आब तँ आरो सुन्नर मुँह भऽ गेलनि अछि । होइत छल जे हुनका दिस तकिते रही । हमरा तँ अपना मीसरसँ भरि पोख गप्पो ने भेल अछि । तोहर ओझा तँ हुनका अपने गपाध्यायमे बझा लैत छथिन । हय अंगरेजीफूल, हमरा मीसरकेँ एहि ठाम इमतिहान देबाक छनि । मोन तँ हलसि गेल जे अच्छा, आब थोड़ेक दिन अपना देश-कोसक गप्प करब । मुदा मीसरो अधलाह लोक छथि । ओ अपन डेरा आन ठाम कऽ लेने छथि । अँय हय, ओ हमरा एना विरान किएक बुझि लेने छथि ? हय, कतबो कहलियनि जे हमरे डेरामे रहू । तोहर ओझा मारते आग्रह कयलथिन मुदा कइसा तेरा रंगा ! नाक पर माछियो नहि बैसऽ देलनि । कहलनि- बिना अहाँ सभसँ भेंट कयने पटनामे हमरा मोन लागत ? मुदा एक गोटाक ओहि ठाम ठहरि गेलिऐक तँ फेर ओहि ठामसँ हटब ठीक नहि ।' हम एही शर्त पर बात माननलियनि जे साँझ-भिनसर चाह हमरे ओहि ठाम पीताह । से ओ जखन अबैत छथिन कि तोहर ओझा अपने आहे-माहेमे हुनका बझा लैत छथुन । हम मुँह बौनहि रहि जाइत छी । तोरा ओझासँ हम एहि लेल लड़लहुँ तँ ओ बजलाह जे मीसर तँ अहींक छथि, ओहि पर हमर कोन अधिकार ? हम तँ अपन साढ़ूसँ गप्प करैत छी ।' अन्तमे हमरा आ तोरा ओझाक बीचमे तसफीया भेल जे एक उखराहामे हम मीसरसँ गप्प करी आ दोसर उखराहामे तोहर ओझा गप्प करथि ।

हय अंगरेजीफूल, हमरा पूरा आशा छल जे मीसरक हाथेँ तोँ हमरा अवश्य चिट्ठी लिखने होयबह । से हम निराश भऽ गेलहुँ । तोँ तँ ई बुझने होयबह जे अंगरेजीफूलकेँ एकटा चिट्ठी लिखिये देलिऐक तखन फेर किएक लिखू ? ई नीक काज नहि कयलह । दुइयो पाँती तँ लीखि दितह । हय, मीसरसँ पुछलियनि जे गाम-घरक हाल-चाल कहू तँ ओ उतर देलनि जे बड़ बढ़ियाँ । अपना देशमे आम नहि फड़लैक अछि । थोड़-बहुत गोटा-गोटी गाछ वा कौआ डारि फड़ि गेलैक सैह बहुत ।' हम पुछलियनि-हमर अंगरेजीफूलक हाल-चाल कहू । खूब नीकेँ रहैत अछि किने ? अहाँ खूब नीक जकाँ मानैत छिऐक की नहि ?

ओ कनेक काल चुप रहलाह फेर चाहक चिन्नीकेँ चम्मचसँ मिलबैत बजलाह-अहाँक अंगरेजीफूलक मोन नीक नहि रहैत छनि ।' हम चौंकलहुँ- की ? की भऽ गेलैक फेर ? ओ बजलाह- पता नहि हुनका चुप्पा रोग भऽ गेलनि अछि । सदिखन मुँह लटकल रहैत छनि । किछु पुछलापर दू बेर कछु नहि बजतीह आ तेसर बेर बेस झझकि कऽ बाजि लेतीह । हम वैद्योकेँ पुछलिऐक तँ ओ कहलक जे एकर उपचारक लेल हमरा सुरूसँ वैदगीरी सीखऽ पड़त ।

हय, एते बाजि ओ हँसि देलनि । हमरा बूझि पड़ल जे ओ मोनक हँसी नहि ठोरक हँसी छलनि । हमरा तँ मोनमे भेल जे तोहर चुप्पी, दुःखक कारण आ ओखधि

की छैक से खोलि कऽ कहि द्रियनि मुदा फेर भेल जे तोँ तँ ककरो किछु कहऽसँ मना कऽ देने छह ।

हय अंगरेजीफूल, जँ तोहर विचार होअह तँ हम मीसरकेँ पुछियनि जे दोसर बियाह किएक कऽ रहल छथि ? हमर अंगरेजीफूल कोनो कि कनाहि-कोतरि अछि ? हय, तोँ तुरन्त उतारा दिहह जे हम कहियनि कि नहि ?

हय, ओ बजैत छलाह जे कय दिन भऽ गेल, गामक कोनो समाचार नहि बूझल भेल अछि । अंगरेजीफूल हय, तोँ हुनका चिट्ठी लिखहुन ने । परदेसमे रहने लोककेँ गामपरक चिट्ठीक बड़ सेहन्ता होइत छैक । खास कऽ अपना कनियाँक । तोँ मधुर-मधुर भाखामे हुनका चिट्ठी लिखहुन । ओ तोरे भऽ कऽ रहथुन । ककरो अनकर नहि होयथिन से एखनो हमर आत्मा कहैत अछि । तोँ एक बेर लिखहुन तँ।

मीसर कहलनि जे-अहाँक अंगरेजीफूल जानि नहि किएक हमरापर तमसायलिए रहैत छथि । हम कोन अपराध कऽ देलियनि से बजबो करथि तखन ने बूझी । सम्भव छैक माय कहियो किछु कहि देने होइनि । ताही बातक रोख मानि लेने होथि ।

हम कहलियनि-नहि औ मीसर ! हमर अंगरेजीफूल तँ अपन सासुक अछिन्नरय प्रशंसा करैत रहैत अछि ।

ओ कहलनि-तखन हमरेसँ कोनो-बितय भेल होयतनि । हम तँ सभ दिन प्रसन्ने रखबाक प्रयास कयलियनि, तैयो हमरापर रोष छनि तँ से हमर भाग्यक दोष।

हय अंगरेजीफूल, एहन मीसरकेँ कठोर कोना बुझियनि ? कोना बुझियनि जे ओ तोरा उपेखि कऽ दोसर वियाह कऽ लेताह । मुदा फेर होइत अछि जे पुरुखेक मोन, कखन कोन मुँह ढरि जाय तकर कोन ठेकान ।

तँ तोँ अपन विचार लिखिहह । मीसरकेँ चिट्ठी लिखिहौनि । धैरज बान्हि कऽ रहिहह आ भगवतीक पूजा करिहह । भगवती जँ मीसरक मोनमे बसि जयथिन तँ फेर ओ तोरासँ फराक नहि भऽ सकथुन । सभ भगवतीयेक भारा छनि ।

हमर आरो हाल-चाल एखन नव नहि अछि । मुदा कोनादन मोन करैत रहैत अछि । होइत रहैत अछि जे कोन जपाल कपारपर पड़ि गेल से नहि जानि । कतहु बाहरो जाइमे बड़ लाज होइत अछि । मौगियोक जाति बड़ कठजीव होइत अछि । तोहर उताराक बाट तकैत । तोहर– **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **27 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । कय बेर ने पढ़लहुँ, मुदा ही नहि भरैत छल । होइत छल जे बेर-बेर पढ़िते रही । तोहर मीसर पटना जयथुन से पहिनहिसँ गामक चिड़ै

जकाँ हमहूँ सुनैत छलिऐक । कहिया के कतऽ जायत, से जखन केओ कहैत तखन ने बुझितिऐक । बिनु बुझनहि हम की लिखितियह ?

हय, जाहि दिन जयताह, ताहि दिन बेरियामे ओहिना हड़बड़ायल अयलाह आ मोटा-चोटा बान्हऽ लगलाह । ई तँ तोहर मीसरक पुरान अभ्यास छनि जे जखन चलऽ-चलबाक बेर होइत छनि तँ सभ वस्तु ओरियाबऽ लगैत छथुन । तँ ओहि हुड़थुड़मे हम चिट्ठी लिखबालेल बैसितहुँ ? हमरा एकटा चिट्ठी लिखबामे कते बेर लगैत अछि से नहि बूझल छह की ? आ जखन दसटा पाइए खर्च कयने चिट्ठी तोंरा भेटि जाइत छह तँ ककरो हाथे हम चिट्ठी किएक पठबितियह ? हय अंगरेजीफूल, ओ हमरा लगमे आबि कऽ कहलनि जे– हम आइ पटना जाइत छी ।' हम अकबका गेलहुँ हुनकर बात सूनि कऽ । हमरा किछु ने फूरल जे की बाजी । तोहर मिसर फेर पुछलनि जे-अहाँ लेल की सभ सनेस लेने आयब ?

हम कहलियनि-किछु नहि । हमरा लेल कोनो सनेस नहि चाही ।

ओ-अंगरेजीफूलकेँ कोनो समाद कहबनि ?

हम-नहि, काल्हिये परसूमे चिट्ठी देलिऐक अछि ।' ओ जेना हारि गेलाह तँ पुछलनि जे-अंगरेजीफूलक पता देब ? कि ओहो नहि देब ?' हम हबर-हबर तोहर पता लीखि कऽ दऽ देलियनि ।

हय अंगरेजीफूल, सत्त पूछह तँ जाहि दिन तोहर मीसर पटना विदा भेलथुन ताहि दिन मोन बड़ उदास भऽ गेल । आङन-घर कोनादन सुन्न-सुन्न लगैत छल । हम अपना मोनकेँ बड़ बुझाबी जे, जे अपन नहि रहल तकरा लेल एतेक मोह-ममता किएक ? से मोन नहि मानय । पाछाँ तँ इहो भेल जे जखन ओ पुछलनि तँ हम किएक नें किछु कहलियनि । रहि-रहि कऽ जेना बुकौर लागि जाइत छल ।

माय सेहो जेना एकदम छतिफट्टू भऽ गेलि छलीह । दलानसँ आगाँ अरियाति कऽ माय अयलीह तँ अपने मोने बजलीह जे- देखी आब बौआ कहिया धरि अबैत छथि ।' ओ हमरा दिस ताकऽ लगलीह जेना ओकर जबाब हमरे लग रहय । हम तँ केबाड़ धयने ठाढ़ि रही, मारि की कहाँ सभ सोचैत-विचारैत ।

अंगरेजीफूल हय, तोँ जे हमरा लिखलह जे हुनका चिट्ठी लिखहुन, से उचित बूझि पड़ैत छह ? उपकरि कऽ हमहीं लिखियौन ? ओ तँ हमरा आरो हीन कऽ बुझताहे । ओ केहन हियाक पाथर छथि जे पटना पहुँचलाह तँ अपन कुशल-छेमक दुइयो पाँती गाम पर नहि लिखलनि । हमरासँ तँ कोनो सम्बन्धे ने छनि, हम आब के ? मुदा माय तँ छथिन । हुनको तँ कमसँ कम लीखि दितऽथिन । से तँ नहि भेलनि ने ।

हय, हम कहि दैत छियह जे हम पहिने चिटठी किन्नहु ने लिखबनि । किन्नहु ने । हय अंगरेजीफूल, ओना तँ हमरा कोनो मतलब नहि अछि, तैयो लिखैत छियह

जे तोरा मीसरकेँ पटनामे खयबा-पीबाक कोनो तकलीफो होइत छनि ? होइते होयतनि। तोँ कने ध्यान रखिहौन । इमतिहान भऽ गेलैक की नहि ? जँ भेलैक तँ केहन, ई सभ बुझबाक मोन होइत छल । आरो कोनो खास बात नहि बुझिहह ।

हय, तोरा लग तँ ओ कतेक रास ने अदखोइ-बदखोइ कहने होयथुन । से सभ सूनि कऽ तँ तोँ हमरा एकदम अधलाहिये बूझि लेने होयबह । हय, आरो की सभ कहैत छलथुन ?

हय अंगरेजीफूल तोँ जे लिखलह जे मीसरसँ दोसर बियाहक सम्बन्धमे पुछियनि ? से तोरा हमरे सप्पत, हमरे मुइल मुँह देखह जे हुनका किछु कहुन । करऽ दहुन जे करैत छथि से । पुरुखकेँ सभ किछु छजैत छैक । हुनका जकरेसँ मोन भरनि तकरे घरमे लऽ आनथु । हम सपनो रूपेँ मना नहि करबनि । जखन बूझब जे एहि घरमे हमर बास नहि होयत, नैहरेमे जा कऽ दिन गुदस्त करब । चरखो काटि कऽ सौंसे जिनगी खेपि लेब । हम फेरो कहैत छियह, हुनका हमरा सभक चिट्ठी-पत्रीक सुन-गुन नहि लगनि । ई चिट्ठी चोरा कऽ पढ़िहह ।

तोँ तँ अपना मीसरसँ खूबे गप्प करैत होयबह । ओझाकेँ हमर नाम मोन पाड़ि दियऽहुन । आब तोँ अपने नेमटेमसँ रहिहह आ हे, किछु अलट-बिलट नहि कऽ बैसिहह । ओना जपाल तँ बुझिये पड़ैत होयतह । तोहर चिट्ठीक आशमे रहबह ।
तोहर– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **28 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । खूब मोनसँ पढ़लहुँ । जहिना तोरा एक बेर पढ़ने ही नहि भरलह, तहिना हमरो बूझह । हय, तोँ जे लिखलह जे जाहि दिन मीसर गामसँ आबऽ लगलथुन ताहि दिन तोहर मोन एकदम उदास भऽ गेलह, से भेले होयतह । हमरो भऽ जाइत छल । तेहने केओ-केओ छातीक सक्कति मॉउगि होइत अछि जकरा एहन-एहन बेरपर कोंढ़ नहि पसिझैत छैक । हय, हमरा तँ एहन-एहन कालमे होअऽ लगैत अछि जे ठोहि पाड़ि कऽ कानऽ लागी । तखन तोरो कोंढ़ फाटले होयतह ।

हय, हमर मीसर आ हमर अंगरेजीफूल दुनू अगरजित्ते भेटल । तोँ लिखैत छह जे पहिने हम चिट्ठी नहि लिखबनि । हम मीसरकेँ कहलियनि जे अंगरेजीफूलकेँ अहीं पहिने चिट्ठी लिखियौक, मौगीकेँ पुरुखक हाथक चिट्ठी पढ़बाक बड़ सेहन्ता रहैत छैक । ताहि पर ओ उत्तर देलनि जे अहाँक अंगरेजीफूल केँ हमरा हाथक अच्छर अधलाह लगैत छनि । हम जँ चिट्ठी लिखबनि तँ ओ आरो तमसा जयतीह । तँ एहन काज कयने कोन फल ? हँ, ओ जँ चिट्ठी लीखथि तँ हम उतारा अवश्य देबनि।

हम कहलियनि जे-अहाँ बड़ खेलाड़ छी औ मीसर ! अहाँ चाहैत छी जे पहिने

हमर अंगरेजीयेफूल लबि जाय आ उपकरि कऽ चिट्ठी लिखय, से नहि होयत । अहींकें पहिने चिट्ठी लिखऽ पड़त ।

एहिपर ओ कहलनि जे-अहाँक अंगरेजीफूलकें हमर बात नहि सोहाइत छनि से अहाँ किएक ने बुझैत छी ! जकरा मोनमे चिट्ठी पयबाक कंछा भऽ जयतैक से हाथ पंकड़ि कऽ हमरासँ लिखबा लेत ।

हाय रे हमर अंगरेजीफूल ! आ हाय रे हमर मीसर ! केओ कोम्हरो एक्को रत्ती टसकऽबला नहि, तखन चकबा-चकबीक मिलान कोना होयत ?

हय, तोँही बात मानह, गनि कऽ चारि पाँती लीखि दहुन । एहिमे तोरा की लगतह ? सहे-सहे पैघ चिट्ठी लिखियहुन ।

हय, तोँ जे लिखलह जे मीसर कतेक रास अदखोइ-बदखोइ कयने होयथुन आ तेँ तोँ हमरा अधलाहि बूझि लेने होयबह, से तोँ हमर अंगरेजीफूल छह, आ ओ हमर मीसर छथि । दुनू तँ एक्के हाथक आङुर छह । कोन छोट कोन पैघ, से के कहय ? हम तँ खूब बुझैत छिऐक जे मीसर अंगरेजीफूलक थिकथिन आ अंगरेजीफूल मीसरक आ दुनू मिलि कऽ हमर छथि ।

अंगरेजीफूल हय, ओना तँ परदेशमे सभ वस्तुक तकलीफे होइत छैक । मुदा जे मेसमे खाइत अछि तकरा लेल तँ मौगतिये बूझह । बजारक जे सड़ल तरकारी रहैत छैक, तीन-चारि पाइये से उठा अनैत छैक ठिकेदार सभ आ बिना तेले-मसल्लाक उसीनि-पुसीनि कऽ राखि दैत छैक । दालि बूझह पानिओंकेँ जितने रहैत छैक । बेर पड़लापर माँड़ो मिला दैत छैक । लोककें की खायल जाइत छैक ! बूझह तँ सोझे गीड़ि लैत अछि । हय, मेस आ होटलबला सभ बड़ घेँटकट्ट होइत अछि ।

मीसर जकरा ओहि ठाम रहैत छलाह सेहो मेसेमे खाइत छलैक । पहिने तँ हम से नहि ने बुझने छलिऐक । एक दिन तोहर ओझा आबि कऽ कहलनि जे साढ़ू जे मेसमे खाइत छथि से नीक बात नहि । चारिये दिनमे हुनकर देह हलि जयतनि । हमरो बूझि पड़ल जे मीसर बड़ लटि गेलाह अछि । से ओहि दिन बलजोरी तोहर ओझाकें पठा कऽ हुनकर वस्तुजात अपना डेरापर मङबा लेलहुँ । आब हमरे डेरापर छथुन । यद्यपि हमरा ओहि ठाम हुनका तकलीफे-तकलीफ होइत छनि, तैयो नजरिक सोझाँमे रहैत छथि तँ बड़ नीक लगैत अछि ।

मीसरक इमतिहान भऽ गेलनि । खूब बढ़ियाँ भेलनि । थोड़ेक बाँकियो छनिहें । तकरा बाद इंटरभिउ होयतनि । इंटरभिउमे की सभ होइत छैक से तँ नहि बूझल अछि, खाली तोहर ओझा कहलनि जे ओहिमे बड़का हाकिम इमतिहानी सभकें अपनेसँ भेंट कऽ कऽ हाल-चाल पुछैत छैक आ बहाली कऽ लैत छैक ।

दुनू साढ़ू बतियाइत छलथुन जे दस, की पन्द्रह टा सीट छैक आ दस-पन्द्रह

सय लोक दरखास देने छैक । तोँही कहह जे कोना कऽ ककरा रखतैक ? सुनैत छिऐक, जकर जेहन पैरवी होयतैक ताही हिसाबेँ नोकरी भेटतैक । एक दिन तोरा ओझाकेँ मीसर कहैत छलथिन जे एहि ठाम जँ बहाली नहि होयतनि तँ असाम दिसक कोनो काजमे दरखास देने छथिन ताही ठाम चल जयताह। ओहि ठामसँ बहालीक कागत आबि गेल छनि । बेसी बात फड़िछा कऽ हम नहि बुझलिऐक ।

हय अंगरेजीफूल, तोहर ओझा सदिखन तोरे नामक रटना रटैत रहैत छथुन, तखन हम की मोन पाड़बनि ? हमरा मीसर लग तोहर ततेक प्रशंसा करैत रहैत छथुन जे पूछह जुनि । कखनो-कखनो हमरा दिस देखा कऽ हुनका कहि दैत छथिन-हिनका बदलामे जँ हमर ओ होइतथि तँ हमर भाग्ये छल ।' ताहि पर मीसर कहैत छथिन जे जेहन अहाँक छथि तेहन हमर ओ कहाँ सँ औतीह ?' एहिपर हम मिट्ठ तामसमे एक दिन कहबो कयलियनि जे एहन अछि तँ अदला-बदली किएक ने कऽ लैत छी ?' पाछाँ संकोचो भऽ गेल । यैह सभ बात अछि । तोँ अपन हाल लिखिहह । तोहर– **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **29 (गामसँ)**

तोरा हाथक अच्छर देखैत छी तँ हक दऽ कतहुसँ परान आबि जाइत अछि। से पछिला चिट्ठी बड़ मोनसँ पढ़लहुँ, ओहिना जेना कोनो बच्चा हाथमे लागल गूड़केँ सिनेहसँ जीह लऽ कऽ चटैत अछि। तोहर चिट्ठी पढ़लासँ एहन बूझि पड़ल जे जँ तोरा मीसरकेँ हम चिट्ठी नहि लिखबनि तँ तोँ नराज भऽ जयबह । तोहर बात हम नहि मानबह से सपनहुँमे नहि सोचिहह । तोँ कहैत छह तँ तोरा मीसरकेँ हम चिट्ठी लिखबनि । सत्त पूछह तँ हमरो मोन करैत अछि जे हुनका कुशल-छेम दऽ लिखियनि। ओहो हमरा लिखथि से सेहन्ता होइत अछि । मुदा एखन नहि लिखबनि। किछु दिन आरो थम्हि जाह तखन ।

हय, तोहर मीसर की जानऽ गेलथुन जे हुनक हाथक पाँती देखबा लेल हमरा कतेक मोन लागल अछि ! तखन अपना मोनमे लोक जे किछु मानि लेअय !

हय अंगरेजीफूल, तोहर मीसर बड़ लटि गेलथुन अछि ? हमरा बड़ चिन्ता भऽ गेल अछि । अँय हे, मेस आ होटलबला सभ एतेक अन्याय किए करैत छैक जे टाका लैयो कऽ नीक खयनाइ नहि दैत छैक ? ओकरा सभकेँ केओ किछु कहैत छैक नहि ? लोक कहैत छैक जे अन्याय कयनिहारक लेल सरकार एना-एना कानून बनबैत छैक, एना ताजन दैत छैक आ एहि मेस-होटलबला सभक लेल किछु नहि ! हय, ई तँ अन्हेर थिक ने !

हय, सन्तोख एतबे अछि जे हुनका तोँ अपना लग रखने छहुन । हमरा आ तोरामे तँ कोनो अन्तर नहि, तेँ बुझैत छी जे ओ हमरे सोझाँमे छथि ।

अंगरेजीफूल हय, तोहर मीसरक इमतिहान बड़ नीक भैलनि अछि से सूनि जे खुसी भेल से पूछह जुनि । हय, भगवती जँ हुनका पटनेमे नोकरी दिया दितऽथिन तँ कतेक नीक होइतैक, दुनू बहिना एके ठाम रहितहुँ आ खूब पटना बुलितहुँ ।

हय, मुदा आगाँ जे तोँ लिखलह जे नोकरी पैरवी पर होइत छैक आ तोहर मीसरकेँ ओ नोकरी नहियो भेटतनि । तखन ओ असामक कोनो नोकरीमे चल जयताह से पढ़ि कऽ तँ मोन एकदमसँ झूर-झूमान भेल अछि । खाली हबोढकार कनैत नहि छी सैह बूझह । तोहर मीसर नोकरीक पाछाँ एना बताह किएक भेल छथुन ? ओतेक टाका लऽ कऽ की करताह ? हय, हम तँ कहियो कोनो वस्तुक फरमाइस नहि कयलियनि । घरमे खर्चो-बर्च कोनो बेसी नहि छनि; तखन टाकाक एतेक चिन्ता कथी लेल ? पटनामे नोकरी भेटि जाइत तँ एकटा बातो भेल । मुदा टाकाक हेतु असाम जयताह नोकरी करऽ, से कतेक छोटाह गप्प भेलैक । लोक की कहतनि ? असाम-बङाला तँ नितान्त लोक ने जाइत छलैक । हय, लोक खिस्सा करतनि । हमरा बड़ लाज होयत । अपनो गाममे लोक कहत जे फल्लीँक वर पूब गेलैक कमाइ लेल।

हय अंगरेजीफूल, हम नेहोरा करैत छियह, हुनका कहुन जे गाम चल आबथि। नोकरी-चाकरी करबाक कोनो काज नहि छैक । गामपर हुनका कथीक कमी छनि ? गुजर जोग जमीन-जथा छनिहे । ओही धरतीकेँ कोड़ताह तँ सोना उपजतनि । अनमानाक लेल इसकुलमे नोकरी करिते छथि । आरो बेसी लऽ कऽ की करताह ? हुनका गाम चल अयबाक लेल तोँ कहुन । ओ तोहर बात अवस्से मानथुन ।

हय, हुनकर मुँहो देखला कतेक दिन भऽ गेल ? मायोकेँ बड़ मोन लागल छनि । माय एम्हर बड़ लबेजान भऽ गेल छलीह । अपन बेटे-पुतोहुक भाग्येँ फेर जीबि सकलीह सैह बूझह । ओहि दिन ओ कोठीसँ चाउर बहार कऽ कऽ फटकैत रहथिन । हमर मोन सुस्त छल तेँ पड़लि रही । आन गामक पाहुन आयल छलैक दूटा । से ओकरे भानस लेल अदहन चढ़ल छलैक । ओ चाउर फटकैत फटकैत अचेत भऽ गेलीह, चन्नर लागि गेलनि । बड़ी काल धरि अदहन ओहिना जरैत रहलैक। आँचमे पसाही धऽ लेलकैक । हमरा बड़ अजगुत लागल । हम कोनहुना उठि कऽ गेलहुँ तँ हुनका देखलहुँ धरतीपर ओंघरायलि, पड़लि । आँखि एकदम पथरायल । नाड़ी देखलियनि तँ एकदम डूबल । हाथ-पयर सर्द भेल । आब की करू से नहि फुरायल । सोचलहुँ जे एखन जँ हैया-दैया करऽ लागब तँ आरो बताहि भऽ जायब। हुनका कोनहुना कऽ अछड़ि-पछड़ि कऽ अनलहुँ आ अपना ओछाओनपर पाड़ि देलियनि । हय, संजोग बूझह जे तखने पड़ोसिया दुखन बच्चा आबि गेलाह । देयोर होयताह, बड़ नीक सुभाव छनि । कौलेजमे पढ़ैत छथि । दू दिन खातिर आयल छलाह। दू पन्ना कागतक खगता छलनि । हुनका देखिते भेल जे भगवान कतहुसँ अपने चल अयलाह अछि ।

ओ हमरा अहलादिलीमे देखि पुछलनि जे-की भेल अछि भौजी ?

हम सभ बात कहलियनि तँ ओ कहलनि जे घबड़ाउ जुनि । हुनका कमजोरीसँ एना भेलनि अछि ।

अंगरेजीफूल हय, ओ नीक लोक ततेक जे पाहुनक भोजनक व्यवस्था ओ अपनहि आङनमे करौलनि आ दौड़ि कऽ एकटा मास्टरसाहेबकेँ बजा अनलथिन । मास्टरसाहेब तोरे मीसरक इसकुलमे पढ़बैत छथिन आ हेमोपत्तीक दबाइ सेहो करैत छथिन । हुनको बेस जऽस छनि । मास्टरसाहेब आबि कऽ मायकेँ देखलथिन । बिनु किछु बजनहि घरसँ बाहर भऽ गेलथिन । दुखन बच्चा हमरा कहलनि जे भौजी अहाँ धैरज धयने चुपचाप रहू। हमरा बूझि पड़ैत अछि जे काकी आब छथि नहि । मास्टर साहेब बिनु किछु बजनहि चल गेलाह तकर की माने ?

हम तँ मायक सिरमामे बैसि कऽ हिचुकि-हिचुकि कऽ कानऽ लगलहुँ । मुदा दुखन बच्चा मायक पयर रगड़ऽ लगलथिन । एतबेमे मास्टर साहेब फेर अयलथिन। ओ मायक मुँह खोलि कऽ एक पुड़िया दवाइ धऽ देलथिन । ओ दुखन बच्चाकेँ कहलथिन जे कोन दुख छनि से नहि कहि । चौबीस घंटामे की होयतनि से कहब असंभव । जीबियो सकैत छथि आ नहियोँ.....। अहाँकेँ तैयार रहबाक चाही ।

दुखन बच्चा तँ ई सभ बात बादमे हमरा कहलनि । ओ मायकेँ ओगरने रहलाह, बेरुक पहरमे आबि कऽ माय पऽल फ़ोललनि ।

हय, आब माय निकेँ छथि । ई बात सभ तोँ अपना मीसरकेँ नहि कहियहुन। हुनका बड़ चिन्ता भऽ जयतनि । तोँ लिखने छलीह अपन हाल लिखबाक लेल से हाल लिखलियह अछि । चिट्ठीक उतारा तुरन्त लिखिहह । अपन मीसर आ हमर ओझाक कुशल लिखिहह । तोँ अपना सम्बन्धमे फड़िछा कऽ गप्प सब लिखिहह । सभ कथुक लेल हमर मोन लागल अछि । तोहर– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **30 (पटनासँ)**

एहि बेर बड़ फुर्तीसँ उतारा देलह । हय, हमर मीसर एहि ठाम छथि तेँ संभवतः तोँ एतेक जल्दी-जल्दी उतारा दैत छह । तोरा मोनमे मीसरक लेल सदिखन चिन्ता रहैत होयतह से हम खूब बुझैत छियह । कहाँ हुनकासँ तोरा सदिखन झगड़े रहैत छह, तोँ कहैत छह जे ओ मानिते ने छथुन आ कहाँ हुनका देखबा लेल सेहन्तो लागल छह ! हय, एहन झगड़ो बेस ! एहन हमर अंगरेजीफूल आ मीसरो बेस !!

एक दिन हमरा मीसर की कहलनि से बुझलह हय ? ओ कहलनि जे अहाँक अंगरेजीफूल केहन बालसंगी छथि जे अहाँकेँ चिट्ठियो ने लिखैत छथि ।

हम तँ मोने-मोन बुझलहुँ जे हमरा किएक ने लिखत, अहाँकेँ नहि लिखैत अछि। हम ओकर बालसंगी छिऐक तँ लिखैत अछि मुदा अहाँ तँ ओकर वऽर छिऐक, तखन उपकरि कऽ किएक लिखत ? मुदा ई बात सभ मोनेमे राखि कहलियनि जे- कहि नहि, किएक अंगरेजीफूल गाल फुला कऽ हाप्फु भेलि अछि।' ओ कहलनि- से नहि बुझैत छिऐक ? हम एहि ठाम जे छी। हमरासँ बिगाड़ि छनिहे आ अहाँक ओहिठाम हम छी तेँ अहूँसँ बिगाड़ि भऽ गेलनि।

हम की बजितहुँ। हम कहलियनि- हमर अंगरेजीफूलक सोभाव तेहन नहि छैक जे अनेरो बिगाड़ि कयने फिरत। तखन अहाँ सभ मौगीकेँ मौगी कऽ कऽ नहि बुझैत छिऐक तँ की होउक ?

मीसर हमर बात सुनि कऽ कहलनि जे-तँ की पुरुख कऽ कऽ बुझैत छिऐक ? नहि, हम तँ कमसँ कम पुरुख नहि, मौगिए बुझैत छिऐक।

हम कहलियनि-हमर मतलब से नहि अछि। ओकरा नौड़ी कऽ कऽ बुझैत छिऐक। मौगीक मनक बात बुझबे ने करैत छिऐक, खाली अपन हुकुम जनबैत रहैत छिएक। चाहैत छी जे मौगी सदिखन जी-हुजूर भेल ठाढ़ि रहय।

एतबेमे तोहर ओझा आबि गेलथुन। हुनका तँ जनिते छहुन जे बातकेँ चीरऽ लगैत छथुन। ओ पुछलथिन-आइ फेर कोन महजरो शुरू भऽ गेल ?

मीसर हुनका सभ बात कहि देलथिन। तोहर ओझा बजलथुन जे- हम सभ तँ मौगीकेँ अपन बॉस; मने हुकुम चलौनिहारि मलिकाइन बुझैत छिऐक।' हमरा दिस इशारा कऽ कऽ कहलनि- जेना सामनेमे हिनका देखि लियऽ, हमरा लोकनि बजैत-बजैत अपस्याँत छी आ ई ता धरि चाह नहि देतीह जा धरि हमरा लोकनिकेँ पूरा सजाय नहि भेटि जायत।

दूनू गोटा ठहाका मारि देलनि। तोहर पच्छ लैत-लैत अपने छकि गेलहुँ।

मुदा एकटा बात, ई हँसी-खेल आब नहि भेटत। जतेक दिनसँ मीसर एहि ठाम छलाह, तोहर ओझोक मोन सदिखन हरियरे रहैत छलनि। साँझमे दूनू साढ़ू एकट्ठा होइत छलाह आ लगैत छलाह हमरा बनाबऽ। तावत धरि नहि छोड़ैत छलाह जाबत हम गोंहछि कऽ नहि कहि दैत छलियनि जे आबसँ हम बाजबे छोड़ि देब।

हय, हम की कोनो मोनसँ गोंहछैत छलियनि ! ओहो सभ ई बात बुझैत छलाह आ हमरो हँसीसँ रहले ने जाइत छल।

तँ आब अपन मीसरक हँसीसँ भरल मुँह नहि देखि पायब। आइ साँझमे मीसर चल जयताह से बूझि कऽ तोहर ओझाक मोन बड़ उदास छनि। तेँ मीसरकेँ कखनो एसगर छोड़बे ने करैत छथिन जे किछु एकान्ती गप्प करब तोरा संबंधमे।

कालि्ह जखन मीसर तोरा लगमे पहुँचि जयथुन तँ तोँ कते खुसी होयबह ! हय, तोँ जे असाम दऽ ओतेक अभिरोख लिखलह से घुमा-फिरा कऽ मीसरकेँ कहलियनि । ओ कहलनि जे- ओहिना हम बजलिऐक । घर छोड़ि कऽ असाममे रहब हमरा पार लागत ? अहाँक अंगरेजीफूल अपना मोनमे हमरा जे बूझथि, मुदा हमरा की हुनका बिना रहि होयत ? ओ झगड़ो कयने रहैत छथि तँ हुनकर मुँह देखऽमे नीके लगैत अछि, संतोष रहैत अछि ।

एहि ठाम हुनकर इन्टरभिउ केहन भेलनि से बात नहि बुझलिऐक, मुदा कोनो नीक लच्छन नहि बूझि पड़ल । मारि कहूँ मिनिस्टर सभक लगुआ-भगुआ सभ छैक।

एतेक काल धरि तोँ ई बात नहि बुझने होयबह जे हम कतऽसँ चिट्ठी लिखैत छियह । हम कालि्हसँ अस्पतालमे भरती छी । मीसरे आनि कऽ भरती करा देलनि। आब जानि नहि एहि ठाम कते दिन रहऽ पड़त । अपना सभक ओहि ठाम तँ लोक जँ मरऽ लगैत छैक तँ अस्पतालमे भरती होइत छैक आ एहि ठाम नीको बातमे अस्पताले । अढ़ाय टका रोजीपर एकटा 'दाइ' राखलि गेलैक अछि ।

हय, एकटा बात सेहो टीपि दैत छियह । कालि्ह खन जखन अस्पतालक फारम भरऽ पड़लैक तँ मीसरकेँ एकटा डाक्टर पुछलकनि जे ई अहाँक वाइफ छथि?

'वाइफ' माने बऽहु होइत छैक हय । हमरा सूनि कऽ मोनमे किदन भऽ गेल। भेल जे मीसर आब की उतारा देथिन ? 'हँ' कहि देथिन की 'नहि' कहथिन । छाती धुक-धुक करऽ लागल । मीसर कहलथिन जे-नहि सारि थिकीह ।

एहिपर देहजरुआ डाक्टर की कहलकनि से बुझबह ? जे-ओह, कोनो बात ने, सारि आ वाइफमे कोनो अंतर नहि ।

हमरा मोनमे तँ भेल, सरधुआकेँ खूब गारि पढ़ी आ पड़ा जाइ । मुदा मीसर कहलथिन-हँ, खाली घरबलाक अधिकारमे अन्तर होइत छैक ।

पाछाँ मीसर कहलनि जे-ओ डाक्टर हमर दोस्त अछि । अपने दिसुक थिक । संग-संग बच्चामे पढ़ने रही । यैह सब हाल । तोँ अपन सासुक हाल लिखिहह। आ मीसर एहि ठामसँ जा कऽ कतेक मानैत छथुन, की नहि मानैत छथुन, से सभ लिखिहह । भेंट भेलापर मधुर खुअयबह की नहि ? तोरे- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **31 (गामसँ)**

बड़ विलम्बसँ तोहर चिट्ठीक उतारा दऽ रहल छियह । की करितहुँ हय, एतेक दिन विधना तेना कऽ ने झमारने रहलाह जे चिट्ठी-पत्रीक पलखतियो ने भेटैत छल । तोँ एतबा दिन हमरापर खूब खौंझाइत रहलि होयबह जे- हम अपन मीसरकेँ नीक जकाँ सिखा-पढ़ा कऽ पठौलियनि । ओ दूनू बेकती आब खूब जिनगीक रस लैत होयत । मुदा तोँ ओहि ठामसँ की बुझबह जे हम केहन विपत्तिमे पड़ि गेल रही।

कतेक नेहोरा-मिनती कयलापर भगवती हमर गोहारि सुनलनि आ आब एहि जोगर भेलहुँ जे तोहर चिट्ठीक उतारा दियह ।

हय अंगरेजीफूल, कहाँदन ओ तोरा डेरापरसँ जहाजघाट चल अबैत रहथि कि बाटेमे लूह लागि गेलनि । लूह केहन होइत छैक से हमरा लोकनि की जानऽ गेलिऐक। खाली लोकक मुँहें सुनने रहिऐक जे गरमीमे पटनामे बड़ लूह लगैत छैक। से जखन तोहर मीसर गामपर अयलथुन तँ मुँह ताम-सन लाल रहनि आ आँखि ओड़हुल सन लालटेस । देह तँ जेना धह-धह जरैत रहनि । देहरिपर पयर दिते खसि पड़लाह । आँखिसँ बसोधार नोर जाय लगलनि । माय कतबो टोकथिन-चाललथिन, कथी लेल कोनो बातक उत्तर देथिन । हम तँ एतबा दिन अभिरोखे अन्हरायल रही, मुदा हुनकर एहन हालति देखि हमरा रहल नहि गेल । दुनू सासु-पुतहु उठा कऽ घरमे खाटपर पाड़ि देलियनि आ सभ लाज-धाख बिसरि हम दौगलहुँ बच्चाक आङन । ओ दौड़ल-दौड़ल गेलाह डाकटरक ओतऽ । डाक्टर आबि कऽ देखलकनि-सुनलकनि। ओ कहलक जे- घबड़ायबला बात नहि, हिनका हलुकाहा लूह लागल छनि । जँ बड़का लागल रहितनि तँ पटनासँ की एतऽ धरि जिबिते आबऽ दितनि !

कतेक अमझोड़ा पिआओल गेलनि, कतेक की कहाँ उपचार भेलनि, तखन जा कऽ कने होसगर भेलाह । बीचमे कयबेर मोन होअय जे खानगीमे किछु पुछियनि-आछियनि, मुदा माय कथी लेल एको रत्ती औंघयबो करतीह । ओ तेना कऽ ने हुनकर खाट गहि लेलथिन जेना हुनका हटने कहीं किछु भऽ ने जाइनि । ओहि घड़ी हम अपना मोनकें कोना कऽ मारलहुँ से की लिखियह ?

हय, हम मायकें की दोख दितियनि, हुनकर प्राणक पलइ तँ जे छथिन से एकेटा वैहटा छथिन । जखन परक बेटी भऽ कऽ हमर कोंढ़ ओना दलकैत छल, तखन एहनामे मायक की हाल होइत होयतैक से तँ माये जानि सकैत अछि ।

हय अंगरेजीफूल, तीन दिन आ तीन राति कोना बीतल से हमहीं जनैत छी। ओ ततेक बेहोस नहि रहथि जे आदंके हमरा लोकनि पथरा जैतहुँ । मुदा हुनकर नोरक धार जेना सुखयबे नहि करनि । जखन किछु नीक भेलाह तँ खानगी पाबि पुछलियनि-पुरुख भऽ कऽ अहाँ एतेक कनैत किएक छलहुँ ? कानऽ लेल तँ भगवान हमरा लोकनिक जिनगी बनौने छथि ।

ताहिपर ओ की बजलाह से जनैत छह ? बजलाह जे -जखन अहाँ हमरा आन बूझि लेलहुँ तँ ककर हाथ पकड़ि सुखसँ मरितहुँ ?' तखन तँ अभक्ख बात नहि सूनी तें मुँहपर हाथ धऽ देलियनि, मुदा जखन मोन पड़ल जे हुनका अबैत देखि हम टरि कऽ आन दिस विदा भऽ गेल रहिऐक तँ तेहन कचोट भेल जे होअय, अपने मुँहपर हजार थापड़ मारी । कहलियनि-हम तँ कहियो अहाँकें आन नहि बुझलहुँ । अहीं हमरा आन बूझऽ लगलहुँ आ तें हम बुझलहुँ जे हमर फराके रहब नीक ।

कनेक काल ओ हमर मुँह निहारैत रहलाह आ तकर बाद बजलाह-हम कोना आन बुझलहुँ ?' हय अंगरेजीफूल, जे बात हम कतेक जमानासँ गोड़ने रही से ओहि दिन पपियाहा मुँह उगलि देलक । हमरा मुँहसँ बहार भऽ गेल-दूनू माय-बेटा तँ कतेक दिनसँ नेयारिये रहल छलहुँ जे हमरा करेजपर कोना आन मौगीकेँ आनि कऽ बैसा दी। जँ अहाँ यैह चाहब तँ हम रोकनिहारिये के ?

एतबा सूनि ओ जोरसँ ठहक्का लगौलनि । बजलाह-तँ ने अहाँ एतबा दिन पड़ायलि फिरैत रही ?' हम कहलियनि-अवश्ये किने ! पुरुखक इच्छाक आगाँ मौगी किएक किछु बाजओ ?

ओ बड़ी काल धरि मुस्कियाइत रहलाह आ तकर बाद हमरा आँखिमे जेना किछु हेरा गेल होइनि तहिना तकैत बजलाह-अहाँकेँ ई कथा कहलक के ?

हम चट दऽ कहलियनि-कहत के, हम अपना कानसँ सुनलहुँ । अहाँ दूनू माय-बेटा बियाहमे कतेक की खर्च लगतैक से जोड़ैत नहि रही ?

ओ जोरसँ मायकेँ सुना कऽ बजलाह-माय गय ! दौड़-दौड़, तोहर पुतोहु केहन उटकरी छथुन से आबि कऽ सुनि जो ।' हम जा हुनका मुँहपर हाथ धरियनि ता माय औंघाइत दौड़लीह । ओ अकचकाइत पुछलथिन-की भेलह, निकेँ छह ने ?'

ओ कहलथिन- माय, हम जे पटना जयबामे कतेक खर्च लगतैक, से जोड़ैत रही, तकरा ई बूझि लेलथुन जे हम अपन बियाहेक खर्च जोड़ि रहल छी ।' की कहियह अंगरेजीफूल, तखन हमरा ततेक लाज भेल जे होअय, कतऽ जा कऽ नुका जाइ ।

अंगरेजीफूल हय, आब ओ निकेँ छथुन । आ हमरा ओहिना मानऽ लगलथुन अछि । हमर ओझा ने जानि, हुनका कानमे कोन मंत्र दऽ देलथिन अछि जे आङनसँ बहरयबो करताह तँ हमरा कहि जयताह ।

हमहूँ कतेक स्वार्थी छी हय ? सभटा अपने गीत गबैत रहलियह । तोँ ई लिखलह जे अस्पतालमे भर्ती भेल छी मुदा एतबा दिन तँ अस्पतालमे होयबह नहि। की भेलह से एखन धरि किएक ने लिखलह हय ? तोहर मीसर हमरा कहलनि जे- अहाँक अंगरेजीफूल हमरा गाम पहुँचैत-पहुँचैत माय बनि गेलि होयतीह । हम विपत्तिमे छलहुँ तेँ देरीसँ चिट्ठी लिखलियह । तोँ किएक ने लिखलह ? आ कि होइत छह जे सभटा सुख हमहीं दूनू प्राणी लूटी । तोरा हमरे सप्पत छह, चिट्ठी पबैत देरी हमरा तार दैह । तोरा हमरे सप्पत, तोरा हमरे सप्पत ! तोहर- **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **32 (पटनासँ)**

तोँ जे चिट्ठी लिखलह जे हमर मीसर बड़ जोर दुखित पड़ि गेलाह से जानि बड़ दुख भेल । हय, हम दुनू बेकती मोने मोन कतेक गूड़-चाउर फकैत रही जे मीसर जखन गाम पहुँचताह तँ तोरासँ एना बतिअयताह ओना बतिअयताह । तोहर ओझा हमर

मीसरसँ सप्पत खोआ लेने रहथिन जे गाम गेलापर जेना जे हो से अवश्ये लिखब; स्त्रीगण सभ अपनामे चिट्ठी-पत्री कऽ कऽ जखन बतियाइये लैत अछि तँ हमरा लोकनि किएक मोनक बात मोनेमे गोड़ने रही ? मुदा हय अंगरेजीफूल, हमरा लोकनि की जानऽ गेलिऐक जे विधि-विधाता पहिनहिसँ दुख देबऽ लेल अजबारले बैसल रहैत छथि । हमरा मीसरकें लूह लागि गेलनि आ हमरा लोकनिक सभ सेहन्ता राखले रहि गेल । हय, ई पटना नगरी छैहे तेहन अलच्छ जे जकरा जे नहि होइक सैह आश्चर्य! मुदा की करबहक, हमरा मीसरकें जतबा कष्ट लिखल रहनि से तँ कोनहुना भोगहि पड़ितनि । से बेचारे भोगि लेलनि । एक तँ पटनामे रहबा-सहबामे कष्ट, ताहिपरसँ खाय-पीबऽमे तकलीफ आ ऊपरसँ ई लूह ! हय, हमरा तँ होइत अछि, मीसरक माय मोनसँ खरजितिया कयने रहथिन तें ओ बाँचि गेलाह, ने तँ पटनिया लूह राकस होइत छैक जे जनिका धरैत छनि, कथी लेल उनमुनाइयो देतनि ।

हय अंगरेजीफूल, हमरा तँ होइत अछि जे हमर मीसर जँ कने दुखितो पड़लाह तँ एक तरहें तकरा नीके बुझह । तों कहबह अंगरेजीफूल, जे हमर बहिना केहन अलच्छि अछि जे अधलाह हिछैत अछि ! हय, हम कोनो अधलाह मोने नहि कहैत छियह, अपन हीया फाड़ि कऽ कहैत छियह, जे जें मीसर दुखित पड़लथुन तें तों अपन सभ अभिरोख बिसरि कऽ हुनका लग गेलीह आ शुद्ध मोनसँ हुनकर सेवा कयलहुन । आ हमर मिसरोक जे एतेक दिन चितफाट जकाँ भऽ गेल रहनि से अनेरे दूर भऽ गेलनि। हय, दुख कखनो-कखनो तेहन हित भऽ कऽ अबैत छैक जे पछिलुका सभ मनरोगकें पछबा हवा जकाँ उड़िया कऽ लऽ जाइत छैक । तोरो संग एक लेखें सैह भेलह अछि । आब मीसर पहिनहि जकाँ तोरा मानऽ लगलथुन अछि से बूझि हम दुनू बेकती हरियर भऽ गेल छी । हय, अपन लोकक सुख ककरा अधलाह लगतैक ? तोरे सुखसँ हमरो लोकनि सुखी ।

हय अंगरेजीफूल, तों जे ई लिखलह जे हमही दुनू बेकती सभ सुख लुटने जाइत छी आ तोरा कोनो खबरि नहि दैत छियह से केहन बताहि छह तों । हय, तों एतेक टा भऽ गेलीह आ एखन धरि एको रत्ती ज्ञान नहि भेल छह । हम जा नीक मोनमे रही ता सभ बात खोँइचा छोड़ा कऽ लिखिते रहियह । अस्पतालोसँ एकटा चिट्ठी लिखबे कयलियह । तकरा बाद जे-जे भेलैक से हम की ताहि जोगर रहि गेल रही जे तोरा चट दऽ चिट्ठी लीखि दितियह । तोरा ओझाकें कहबो कयलियनि जे हमर अंगरेजीफूलकें दू अच्छर टीपि दियौक, ओकर मोन लटकल होयतैक । मुदा तोरा लिखबाक कोन कथा, अपन माइयोकें दू आखर लिखऽलेल तैयार नहि भेलाह । हय, हमही जखन दस दिनमे होसगर भेलहुँ तँ निर्लज्जि भऽ कऽ आनेमानेसँ मायकें लिखलियनि । ओ तँ जेना एहि दऽ भरकछे लाधि लेलनि । तोंही कहह अंगरेजीफूल, पुरुख कतहु एहन होअय ?

हय, भरल अस्पतालमे एकसरिये जे-जे भोगऽ पड़ल से ककरा कहितिऐक? के छल चिन्हार जे नोलो-भरोस दैत ? पुरुखक चेहरा मोन पड़ैत देरी होअय जे जकरा पाबी तकर मुँह नोचि ली । ओहि समयमे से-से बात फुरय जे आब मोन पाड़ैत छी तँ अपने लाज भऽ जाइत अछि । हय अंगरेजीफूल, मौगी बड़ कठजीव होइत अछि। पुरुखकेँ जँ एकसरमे ओहन कष्ट होउक तँ अवश्ये मुँह बाबि देत । जाय दैह ई सभ, जे भेलैक से भेलैक । तोरा बहिनौत भेलह अछि, एन-मेन तोरे सन । हम जखन पहिले बेर बच्चाक मुँह देखलिऐक तँ भेल जे ई कोना भेलैक ? हमरा गामक कहबी मोन पड़ि आयल-'माय सन ने बाप सन, सतनुआ कुम्हार सन ।' तोहर ओझो हमरा यैह फकड़ा पढ़ि कऽ खौंझबैत रहैत छथुन । आब तोँही कहह अंगरेजीफूल, एहिमे हमर कोन दोष अछि ?

अंगरेजीफूल हय, आब जे तोँ चाहबह जे तोहर चिट्ठीक उतारा चट दऽ दियह से हमरा बुतेँ पार नहि लगतह । ईहो चिट्ठी जे लीखि रहल छियह से एक दिने नहि। आब हमर ओ समय चल गेल, जे, जखन जे फुरय से करी । आब तँ तेहन खेलौना भेटि गेल अछि जे भरि दिन भरि राति ओहीमे लागल रहऽ पड़ैत अछि । तोहर ओझा तँ चेँ-भोँसँ अगुता कऽ पड़ा जाइत छथुन, मुदा हमरा पड़यने कोना बनत ? हय अंगरेजीफूल, आब हम बूझऽ लगलिऐक अछि जे मौगी की होइत अछि, ओकर करेज केहन होइत छैक । हरदम बच्चा लेल चेहायले रहैत छी ।

हय, बात तँ बड़ फुरैत अछि, मुदा फेर ओ चिचिया रहल छैक । आब आर बात सभ दोसर चिट्ठीमे लिखबह । तोँ धरि अपन कुशल-मंगल लिखैत रहिहह । तोरा हमरे सप्पत, चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । तोहर- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **33 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी काल्हिये भेटल अछि आ आइये उतारा दऽ रहलि छियह । अँय हय, तोँ केहन बैमान भेलीह जे तोरा बेटा भेलह आ तकरा तोँ एतेक दिन धरि नुकौने रहि गेलीह ? तोँ जे लिखलह अछि जे चिट्ठी लिखऽ जोगर नहि रहह तेँ लिखबामे देरी भेलह, से हम एहि बातकेँ नहि मानबह । हँ हय, जँ तोहर भितरिया इच्छा रहितह जे ई खुशखबरी हम अपन अंगरेजीफूलकेँ चटसँ जना दिऐक तँ तकर कोनो-ने-कोनो उपाय अवश्ये करितह । आ कि भेलह जे हमर अंगरेजीफूलक सासुकेँ हमर ई सभ गप्प नहि नीक लगैत छनि तेँ दम साधि लेलह ? मुदा से बात नहि छैक हय । चिट्ठी पबैत देरी हम हुलसल-फुलसल माय लग गेलि रही आ कहने रहियनि जे- माय, माय, सुनथु खुशखबरी; हमर अंगरेजीफूलकेँ बेटा भेलैक अछि ।' ई बात दोसर जे कनेक काल ओ हमरा दिस बकर-बकर तकैत रहलीह आ पैघ निसास छोड़लनि, मुदा लगले हुलसि कऽ बजलीह- भगवती एहिना सभक आँचर भरथुन ।'

अप्पन सप्पत कहैत छियह अंगरेजीफूल, हुनका एको रत्ती जरनि नहि भेलनि। क़ोन बात लऽ कऽ हुनकर मोन छोट भऽ जाइत छनि से तँ तोरा बुझले छह। ई तँ अप्पन-अप्पन लिखलाहा होइत छैक ने ? हुनको भाग्यमे जँ लिखल होयतनि जे पोताक मुँह देखी, तँ देखबे करतीह। ताहि लेल मोन छोट कयने कोन फल ? सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, हमर मोन तँ एकोरत्ती नहि हदिआइत अछि। किएक हदिआओ ? एखन भेबे की कयलैक अछि हमरा वयसकेँ ?

रातिखन हम तोहर चिट्ठी 'हुनका' हाथमे धऽ देलियनि आ कहलियनि जे हमरा अंगरेजीफूलक खुसनामाक बात अपनेसँ पढ़ि लियऽ।' ओ लालटेम लग कऽ लेलनि आ लगलाह पढ़ऽ। हम चोट्टहि हाथसँ चिट्ठी उचङि लेलियनि आ कहलियनि-बड़ लोभी छी अहाँ, जखन हम खुसनामा दऽ कहिये देलहुँ तँ अहाँ हमरासँ किएक ने पुछलहुँ जे मौगियाही चिट्ठी पढ़ऽ लगलहुँ ? ताहिपर ओ बजलाह-अहाँ जखन हमर छी आ अंगरेजीफूल जखन अहाँक छथि तँ एकर माने भेल जे ओ हमरो अपने छथि आ जखन ओ हमरे छथि तँ हुनकर चिट्ठी पढ़ने कोन दोख ?

हम कहलियनि-बड़ चलाक छी अहाँ, हमरा दुनू गोटेक पेटक बात चिट्ठी-पत्रीमे लिखल रहैत अछि, अहाँ पढ़ि लेब आ सौंसे डंका पिटने फिरब। पुरुखकेँ की कोनो बात अरघैत छैक ?' ओ मुस्किआइत रहलाह आ हमरा पर जेना किछु तकैत रहलाह, फेर कहलनि-से तँ ठीके, पुरुख बड़ उत्थर होइत अछि, सभ बात अपन कनियाँ लग उगिलि दैत अछि। मौगी सन गहीँर पुरुख कतऽसँ आओत ?

बात तँ बड़ ठेका कऽ कहलनि, मुदा हम तकरा मोनमे एको रत्ती नहि अनलहुँ। कहलियनि-मौगी जँ गहीँर होइत तँ पुरुखसँ ठकले जाइत ? देखा तँ दियऽ एकोटा एहन मौगीकेँ, जे पुरुखसँ ठकलि नहि गेलि हो।

ओ ठहक्का लगौलनि-तँ एकर माने ई भेल जे पुरुख ठक होइत अछि, बेस। अच्छा, ई कहू तँ जखन सभ मौगी ई जनिते अछि जे पुरुख ठक होइत अछि तँ फेर ओकरासँ ठकाय लेल तैयार किएक रहैत अछि ?' हमरा तत्काल नहि फुरल जे की कहियनि। हमरा चुप देखि ओ अपने बजलाह-हम कहू, किएक ओ ठकाय लेल तैयार रहैत अछि ?'

हम सोचलहुँ जे ने जानि, ई कोन कथा बाजि देथि तेँ हम पट दऽ कहलियनि-बिना पुरुख मौगीक निमहता नहि होइत छैक तेँ, आर किएक ?

ताहिपर ओ फेर ठहक्का लगौलनि आ बजलाह-नहि, ई एकदम फूसि थिक। जँ अहाँ से बुझितहुँ तँ एतेक दिन जे फराके-फराके पड़ायलि फिरैत रही से पड़ैतहुँ?

हमहूँ उनटबैत कहलियनि-हम पड़ाइत रही कि अहाँ पड़ाइत रही ?

ओ कनेक काल चुप रहलाह, तकर बाद कहलनि-जँ सत्त पूछी तँ ने अहाँ

पड़ाइत रही ने हम; हमरा दूनू गोटाक बीच जे भ्रम आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल रहय से दूनू गोटेकेँ दू कात कयने रहय ।

हम चट दऽ पूछि देलियनि–आबहु भ्रम ठाढ़े अछि कि गेल ? ओ बजलाह–आब जँ रहैत तँ एना जकाँ गप्प होइत ?

हम कहलियनि–तखन अहाँ हमरा गहींर किएक कहलहुँ ?

ओ आवेश देखबैत बजलाह–एहि दुआरे जे अहाँ अपन अंगरेजीफूलक चिट्ठी हमरा हाथमे दऽ कऽ फेर नहि पढ़ऽ देलहुँ ।' की कहियह अंगरेजीफूल, हमरा दुनू गोटेमे एखन एहिना होइत रहैत अछि । तोहर मीसर नहि मानलथुन आ तोहर चिट्ठी फेर हमरा हुनका हाथमे देबऽ पड़ल । मुदा ओ पढ़लथुन नहि । हमरा कहलनि जे सभ काजक मर्यादा होइत छैक । जँ हम अपन मर्यादा छोड़ब तँ अहीं हमरा की बूझब ?

सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, हम हुनका नीक जकाँ कहियो ने चिन्हलियनि। जँ चिन्हितियनि तँ एतेक दिन हुनकासँ फराके किएक भेलि रहितहुँ ?

हमहूँ कतेक स्वार्थी छी हय, खाली अपने गप्प झोंकैत रहलियह । तोँ जे लिखलह जे बच्चा एन–मेन हमरे सन छह से हम तोरा मीसरकेँ कहलियनि । ओ कहलनि जे एहन होइत छै.. । जकर चेहरा बरोबरि मोनमे रहैत छैक तकरा सन सन्तान होयब कोनो आश्चर्यक गप्प नहि । हुनकर एहि गप्पसँ विश्वास भऽ गेल जे तोँ हमरा सुच्चा मोनसँ सिनेह करैत छह । हय अंगरेजीफूल, हमरो मोनमे तोरा प्रति केहन सिनेह अछि से कोना कऽ देखबियह । हय, बच्चाकेँ देखऽ लेल ही लटकि गेल अछि । भगवान से दिन कहिया करताह जे बच्चाकेँ देखबैक । को नाम रखलहक अछि ? नाम रखबाकाल कने हमरोसँ पूछि लिहह । हमरा होइत अछि जे हमहीं ओकर नाम रखिऐक । एतबा अधिकार देबह दुनू बेकती ? चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । हम बहाना नहि सुनबह । तोरा हमरे सप्पत । तोहर–- **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **34 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी समय पर भेटि गेल छल । दू दिन विलम्बसँ उतारा दऽ रहल छियह । हय अंगरेजीफूल, तोँहूँ बड़ खेयाली छह । की सभ तोरा फुरैत रहैत छह से नहि जानि । अँय हय, तोँ जे ई लिखलह अछि जे तोरा सासुक डरेँ हम एहन खुसखबरीकेँ नुकौने रहि गेलियह आ तोरा देरीसँ लिखलियह, से केहन बताहि जकाँ लिखलह अछि तोँ ? जँ हमरा से रहैत तँ तोरा चिट्ठिये किएक लिखितियह जे तोरा बहिनौत भेलह अछि ? हय, हमरा तोँ खोम्हाहि किएक बूझि लेलह ? की खोम्हे दुआरे हम चट दऽ तोरा चिट्ठी नहि लिखलियह ? हम ओतेक खोँइचा छोड़ा कऽ लिखि देने रहियह जे चिट्ठी लिखबा जोगर हम नहि रही आ तोहर ओझा लाजे ककरो किछु नहि लिखलथिन, मुदा तोरा हमरा बातपर विश्वास नहि भेलह । हृदयक बात

लिखलापर जँ तोँ विश्वास नहि करह तँ हमर सक्के कोन ! भगवती जनैत छथि जे हमरा मोनमे तोरा प्रति केहन भाव रहैत अछि । हय दाइ, एकटा बात धरि हम साफ-साफ कहि दैत छियह जे गामक स्त्रीगण जकाँ ने हम खोम्हाहि छी आ ने खोम्ह-तोमकेँ मानैत छी । हय, अपना देश-कोसमे जँ लोक खोम्ह मानैत अछि आ जोग-टोनपर विश्वास करैत अछि तेँ सात घर सत्तरि मुँह रहैत छैक । अपना ओहि ठामक स्त्रीगणकेँ और अबिते की छैक ? जहाँ कोनो माउगिकेँ देखलक कि अपन चिलकाकेँ सात कोन नुकौलक । नान्हियेटासँ ततेक, ई बुइ, ई बुइ, होमऽ लगैत छैक जे नेनेसँ बुइया धरबैत-धरबैत धीया-पुता कमजोर भऽ जाइत अछि आ डेरबुक, हिबघट्टू बनल जिनगी खेपैत अछि ।

हँ हय, तोँ ई जुनि बुझह जे हम खाली एकटा चिलकाक माय बनि गेलि छी। चिलकाकेँ कोना राखी, कोना पोसी - से सभ हम दिन-रातिमे जखन पलखति भेटैत अछि, पढ़ैत रहैत छी । तोहर ओझा हमरा एकटा तेहन पोथी आनि देलनि अछि, जाहिमे ई सभ बात एकदम साफ-साफ लिखल छैक ।

हय अंगरेजीफूल, तोँ जे अपन सासु दऽ बेसीकाल लिखैत रहलह अछि ताहिसँ हम हुनका देवी बुझैत छियनि । कयटा एहन सासु भेटतह आइ-काल्हि, जे अपन पुतोहुकेँ एना मानैत हो, एना पुतोहुकेँ पुड़ियामे कऽ रखैत हो । सत्त कहैत छियह अंगरेजीफूल, कय बेर हमरा मोनमे उठल अछि जे कने ओ हमरा भेटितथि आ हम आँचर पसारि हुनक पयरक धूरि समेटि लितहुँ । हँ हय, हमरा मोनमे हुनका प्रति केहन श्रद्धा भऽ गेल अछि से बोली-बानीमे कहबाक वस्तु नहि छैक । हय, जनिका हम एहन बुझैत छियनि तनिकासँ जँ हम खोम्ह करब तँ हमरा नरकोमे जगह भेटत ? मुदा तोँ जे हुनका दऽ एहन बात लीखि देलह अछि ताहिसँ सत्ते हमर मोन दुखी भऽ गेल।

हय अंगरेजीफूल, हम जहिया अस्पतालसँ डेरापर आयल छलहुँ, बच्चाकेँ देखऽ लेल अड़ोस-पड़ोसक माउगि सभ थहाथही लागल छल । के-कहाँ छलैक, सभकेँ की नीक जकाँ थोड़बे चिन्हैत छिऐक ? बाट चलबाक काल टोका-टोकी, ततबे टाक परिचय । आ से सभ अयलैक आ छुबि-छुबि बच्चाकेँ दुलार-मलार कयलकैक । हम कहाँ रोकलिऐक ककरो । रोकबे किएक करितिऐक ? भगवानक देल खेलौनाकेँ हम हिफाजतिसँ रखिऐक-सैह भेल हमर काज । ताहिसँ नहि चुकबाक चाही । लोकक छूने-छपने आ देखने-सुनने की होयतैक ? से, अनका लेल तँ हमरा एकोरत्ती खोम्हे नहि भेल आ तोरा सासुसँ किएक खोम्ह होयत ? हय, ओ जँ बुझतीह जे हमर पुतोहुक अंगरेजीफूल एहन अधलाह मोनवाली छथिन तँ की बुझतीह हमरा ?

हय अंगरेजीफूल, सदच्छन मोनमे होइत रहैत अछि जे एखन जे तोँ हमरा लग रहितह तँ केहन नींक होइतैक ! दुनू गोटे एकटा अनमानामे लागल रहितहुँ । मुदा मोनक बँटलाहा कहियो पूर होइत छैक थोड़बे !

हँ, एकटा बात एखने मोन पड़ल अछि, तोरो लिखिये दैत छियह । हय, जहियासँ हमरा कोरमे अनमाना आबि गेल अछि, तहियासँ जेना हमर मोन बदलल जा रहल अछि । हम नीक जकाँ बुझैत छिऐक से । तोरा ओझाकेँ जेना हम पहिने सिनेह दैत छलियनि कि सिनेह करैत छलियनि, से जेना ई नान्हिटा जीव छिनने जा रहल अछि । हमरा नीक जकाँ बुझाइ पड़ैत अछि जे क्यो तऽरे-तऽर सिनेहक बाँट-बखरा कऽ रहल अछि । पहिने जतेक चिन्ता हमरा तोरा ओझा लेल रहैत छल, ताहिसँ बेसी जेना एहि पिहुआ लेल भऽ रहल अछि । ई सभ कोना भेलैक से टा नहि बुझैत छिऐक, मुदा एतबा धरि बुझैत छिऐक जे एकरा आगाँ जेना तोहर ओझा तऽर पड़ि गेलथुन अछि । एक दिन हँसिये-हँसीमे ओ हमरा कहबो कयलनि-आब अहाँकेँ हमर कोन चिन्ता अछि ? आब तँ अहाँकँ तेहन वस्तु भेटि गेल अछि जे ओहिमे अहाँक सौंसे मोन ओझरायल रहैत अछि ।

बात तँ ओ ठीके कहलनि, मुदा हमहूँ हँसियेमे कहलियनि-से उचिते कि ने। हम तँ एकरा अहाँक दोसर रूप बुझैत छिऐक आ तेँ एकरा लेल बेसी फिकिर रहैत अछि । अहाँ, जे एकरा अपन पटीदार बुझैत होइऐक । कहू तँ एकरा मायकेँ दऽ अबियनि । हम तँ अपना मोने हँसिये कयलियनि, मुदा बात तँ मुँहसँ बड़ विखाह बहरा गेल छल । हमरा एहन बात नहि बजबाक चाही । हम बातकेँ तऽर देबालेल मुँह कोचियाबऽ लगलहुँ ।

ओ हँसैत कहलनि-पटीदार तँ अछिए । पहिने निचैन भऽ कऽ जतऽ मोन होइत छल, अहाँकेँ पकड़ि कऽ लऽ जाइत छलहुँ-जे जखन फुराइत छल से कहैत-करैत छलहुँ, मुदा आब तँ ई अहाँकेँ जेना नचौताह तेना अहाँ नाचब । आब हमर इच्छाकेँ के पुछैत अछि ? मायकेँ दऽ अयबाक बात, से ई जुनि बुझैत होइ जे एकरापर अहींटाक अधिकार अछि । हमरो केओ अछि ई ।

हम चोट्टहि पूछि देलियनि-गूँह-मूत गीजैत रहू हम आ अहाँक केओ अछि ?

ओ बच्चाक गाल आ ठोर छुबैत बजलाह- से गिजने ककरो पैघ हिस्सा नहि भेटैत छैक । हमरो मोनमे किछु ने किछु एकरा लेल होइते रहैत अछि।'

हय अंगरेजीफूल, ओहि दिन हम बुझलिऐक जे पुरुखोकेँ अपन सन्तानक प्रति कम मात्सर्य नहि होइत छैक । जहिना हमर सिनेह बच्चापर आबि कऽ अँटकि गेल अछि, हुनको तँ तहिना होइत होयतनि ने ?

बच्चाक नाम तोँही रखबहक ताहि लेल तोहर ओझा राजी भऽ गेलथुन अछि। हमर आग्रह एतबे जे ओहिमे तोहर नाममेसँ थोड़बो आबि जाइक । बच्चाकेँ कने बढ़ऽ दहक तँ तोरा आबि कऽ अवश्ये देखा देबह अपना गाममे । आर सभ कुशले छैक । चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । तोहर- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल,

35 (गामसँ)

तोरासँ हम हारि मानि लेलहुँ । हम जे देरीसँ चिट्ठी लिखबाक विषयमे तोरा लिखलियह, से तोरा रोख लगलह । हय. के एहन मौगी होयत जकरा अपन सखी-बहिनपाक धांयापुता-लेल जल्दीसँ जनबाक सेहन्ता नहि होइत होयतैक ? ओ तँ अभागलिये होयत जकरा एहन खुसनामा सुनबा लेल मोन नहि लागल रहैत होयतैक। हमरा मोन बेकल छल आ तोँ समादमे देरी कऽ देलह तेँ लिखलियह । जँ तोरा हमर बातसँ दुःख भेल होअह तँ ताहि लेल तोँ हमरा माफ कऽ दैह । हय, जेँ तोरा हम अपन बुझैत छियह, सहोदरो बहीनसँ बेसी, तेँ अपन मोनक सभ नीक-बेजाय तोरा आगाँ उगिलि दैत छियह । जँ तोरा हमरा बातसँ रोख लागह तँ एहन काज हम करबे किएक करी ? हमरा मोनमे ई कखनो नहि होइत अछि जे हम कोनो एहन काज करी, जाहिसँ हमर अंगरेजीफूलकेँ दुख होइक । मुदा की करी, तोहर सिनेहे हमरासँ एहन करा दैत अछि । हय, अपन मोनक अभिरोख की लोक अनकापर देखबैत छैक ? जे अपन होइत छैक तकरेपर मान-अभिरोख छजैत छैक । हय अंगरेजीफूल, हमरासँ अपराध भऽ गेल छह, तोरा हमरे सप्पत, तोँ हमर अपराध बिसरि जाह । सब पित्त-तामस थुकड़ि दैह । आब हम कहियो एहन काज नहि करब जाहिसँ तोरा दुःख होअह ।

हय, हमरा सासु दऽ जे तोँ लिखलह जे ओ देवी छथि आ तोरा मोनमे होइत रहैत छह जे हुनकर पयरक धूरि अपना आँचरमे ली, से वास्तवमे ओ तेहने छथि । हय, जेना-जेना समय बीतल जाइत छैक, तेना-तेना हमरा देखबामे अबैत अछि जे हमरा प्रति हुनकर सिनेह बढ़ले जाइत छनि । हमर कोन गप्प, हम तँ अपन पुतोहु छियनि, अनको ओ कहियो अवाच कथा नहि कहैत छथिन । दिनक फेर जे भगवान हुनका आ हुनका बेटाकेँ गरीब बनौने छथिन । नहि तँ आयल-गेल लोकक मदति करबामे हुनकर मोन बेस उछतगर रहैत छनि । धन्न एहन सासु जे हम तोहर मीसरक एखन धरि अपन बनल छियनि । आन सासु रहैत तँ अवश्ये एखन धरि हम दूधक माछी बना कऽ नैहरमे फेकि देल गेल रहितहुँ ।

अंगरेजीफूल हय, ई गप्प ओहिना नहि लिखलियह अछि । एमहर फेर गामक मौगीसभ मायकेँ सनंकयबाक चेष्टा कयने रहनि । एक दिन दुपहरियामे हुनकर ऊनी कुरता आ रेफर रौदमे सुखाय लेल देने रहिऐक । हम ओहि दिन, दिनमे सुतलहुँ नहि जे के जानय, मायक आँखि लागि जाइन आ केओ आबि कऽ टपा देअय । से, हम कुरुस-काँटा लऽ कऽ बैसि गेल रही ओसारेपर । एतबेमे अपन बेटी आ आन दू-तीन गोटेक सङ पहुँचलीह जगतारनिक माय । तोँ हिनका नहि चिन्हबहुन तेँ एतबे बूझि लैह जे बेस दिदगरि छथि । घर पैसि आनक कुचेष्टा हुनकेसँ होअय । से जगतारनि-माय कतेक तरहक आहे-माहे कयलाक बाद उनटलीह हमरेपर । मायकेँ

कहलथिन-अय फल्लाँक माय, फल्लाँ बूढ़ भेल जाइत अछि आ अहाँकेँ एकोरत्ती चिन्ता नहि होइत अछि ? कनेयाँ जँ बाँझे छथि तँ तेँ वंशकेँ ओहिना बूड़ऽ देब ? कतहु देखि-सुनि कऽ वियाह करा दियौक जे वंश चलय ।

हम दूरसँ देखलियनि, मायक मोन जेना भितरे-भीतर लोहछि उठलनि । तैयो मुस्किआइते कहलथिन— की करबैक बाँझे छैक तँ ? अनकर कोखि काटि कऽ तँ हम नहिएँ दऽ देबैक । रहल बौआक दोसर बियाहक गप्प, से आब ओ जमाना थोड़बे छैक जे ककरो माय-बाप जबर्दस्ती बियाह करा देतैक । जानथि बौआ, जाननि हुनकर काज। हम तँ अपना दिससँ भगवतियेकेँ कहैत रहैत छियनि ।

ताहिपर अपना मायक बात कटैत जगतारानियें बजलीह-से की कहैत छिऐक काकी, आब की लोक धीया-पुता लेल भगवान-भगवतीकेँ थोड़बे कहैत छनि ? आब तँ लोक टिकटिक करैत पहुँचि जाइत अछि दरिभंगा आ असपतालमे पता लागि जाइत छैक जे ककरा दोखेँ संतान नहि भऽ रहल छैक । जँ मौगीक दोख रहलैक तँ चीरि-फाड़ि कऽ सभ ठीक कऽ दैत छैक । हमरो ननदिकेँ एहिना धीया-पुता नहि होइत छलनि । अस्पतालमे की-कहाँ करौलनि कि लियऽ ने एक छोड़ि चारि-चारि टा बेटा भेलनि । एहिलय पुरुख एक छाड़ि दोसर बियाह की करत ? अनेरे एकटा घेघ लटका लेत गरदनिमे ।

मुदा जगतारानिमाय अपना बेटीकेँ दबाड़ि लेलनि-हय, चुप रहऽ । अलग-अलग नहि करऽ ।' फेर मायकेँ कहलथिन— अय, इज्जतिबला लोक कतहु अस्पताल जाय ? राम-राम ! पुरुख भऽ कऽ मौगीक अंग विधुनैत छैक अस्पतालमे । अहाँ गलतियोसँ कनेयाँकेँ अस्पताल नहि पठयबनि । संतानक लेल दोसर बियाहे करा देब नीक ।

जगतारनिदाइ सकदम भऽ गेलीह । हय अंगरेजीफूल, तकरा बाद की भेलैक से बुझलह ? हुनका लोकनिकेँ जाइते माय हमरा टोकारा देलनि-कनियाँ, कने सुनब ।' हम जखन लगमे गेलियनि तँ कतेक काल धरि हमरा मुँह दिस तकैत रहलीह आ तकरा बाद बजलीह-एहन सोन सन बेटीकेँ हम दुःख देब ?' आ टप-टप आँखिसँ नोर खसि पड़लनि । हमरा किछु सुझबे ने करय जे की कहि हम हुनका भरोस दियनि ।

हय, रातिमे हुनको हम ई गप्प कहलियनि । ओ मुस्किआइत बजलाह-अहीँ मायकेँ कनबैत रहैत छिऐक । एहन किरपिन्नी अहाँ छीहे किएक ?' हम तँ लाजे मूड़ी गाड़ि लेलहुँ । पुरुखकेँ एहन बातक की उतारा देल जाय ? मुदा अंगरेजीफूल हय, तोँ जे दस-एगारह मास पहिने अपना विषयमे लिखने छलीह, किछु तेहन सन लच्छन हमरो बूझि पड़ैत अछि । जानथि भगवती, जे की बात थिकैक ।

हय अंगरेजीफूल, एहि चिट्ठीक संग-संग एकटा पार्सल पहुँचल होयतह । ओहिमे बच्चा लेल एकटा गंजी बूनि कऽ पठा देलियह अछि । हय, पटनामे तँ तोरा

रंग-विरंगक वस्तु भेटैत होयतहँ । ओकरा आगाँ एहि गंजीक कोन मोल ?- मुदा ई बच्चाक मौसीक हाथक बुनल छैक । एकर एक-एक तागमे मौसीक सिनेह बोरल छैक । एही भावेँ तोँ एहि गंजीकेँ छनो भरिक लेल अवश्ये पहिरा दिहक । तोँ जनैत छह अंगरेजीफूल, जे तोहर अंगरेजीफूल कतेक गरीब छह । मुदा सिनेह बँटबामे कोनो रानीसँ अपनाकेँ पैघ बुझैत छह । एकर सिनेहकेँ तोँ तोड़िहह नहि, तोरा हमरे सप्पत! चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । तोहर- **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **36 (पटनासँ)**

तोहर चिट्ठी हमरा समयेपर भेटि गेल छल, मुदा विलम्बसँ उतारा दऽ रहल छियह । हय, तोँ फेर पकपकाइत होयबह जे हमरा अंगरेजीफूल जानि-बूझि कऽ चिट्ठीक उतारा देबामे देरी कऽ दैत अछि मुदा सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, हम बड़ कुगऽरमे पड़ि गेल रही । बच्चाकेँ तेना ने चुरकी लागि गेल रहैक जे कथी लेल एक्को रत्ती दम लेबऽ देत । चारि दिन आ चारि राति ततेक ने डिरिआइत रहैक छलैक जे मोन एकदमसँ माहुर भेल रहैत छल । सुतबा आ बैसबाक कोन कथा, भरि दिन आ भरि राति ठाढ़ि भेलि कोरमे टङने रहैत छलिऐक, मुदा तैयो ओ कनेको काल लेल चैन नहि रहैक । तोहर ओझा तँ यैह बूझि लैह जे बताह भऽ गेल रहथुन । हँ हय, मुदा एहि दुआरे नहि जे हुनका बच्चाक प्रति बड़ सिनेह जागि गेल रहनि आ ओकर दु:खसँ बड़ दुखी भऽ गेल रहथि । असलमे हुनकर बतहपनी हमरे लेल रहनि। ओ हमरापर खौंझाथि, पकपकाथि जे हम किछु अनट-बिनट खा लेने होयबैक तेँ बच्चाक एहन दुर्गति भऽ रहल छैक । हय अंगरेजीफूल, हम तँ बुझियनि जे दिनमे आफिसमे खटऽ पड़ैत छनि आ रातिमे ई सूतऽ नहि दैत छनि, तेँ ई एना करैत छथि। हमरा हुनक ई रङताल देखि कऽ हँसियो लागि जाय । मुदा हमर हँसी देखिते ओ जेना आर सनकि जाथि आ लागथि हमर खोद-बेद करऽ, हमर पेटक उखाही करऽ।

अंगरेजीफूल हय, हम तोरेसँ पुछैत छियह, बच्चाकेँ जे ओना भऽ गेलैक आ ताहि लेल जे ओ असमर्द कयने रहैक ताहिमे हमर कोन दोष ? तोँ तँ शुरूएसँ जनैत छह अंगरेजीफूल, जे हमर जीह पातर नहि अछि । हमरा एम्हर-ओम्हरक वस्तु खयबाक कहियोक हिस्सक नहि अछि । तखन चिलकाउरि भऽ कऽ कोना अगर-बगर वस्तु खा लेबैक ? की हमरा हीयामे बच्चाक लेल सिनेह नहि अछि जे जानि-बूझि कऽ ओकरा दु:ख देबैक ? से, हुनका कतबो कहियनि, कतबो बुझबियनि जे हमरा खयबा-पीबामे कोनो कुपथ नहि भेलैक अछि, मुदा कथी लेल एको रत्ती कान पटपटौताह । उनटे हमरेपर अपन रोख-झाड़लनि जे– मौगी अदौक जिहलाहि होइत अछि । गंगामे पैसि कऽ कहत जे हम ई नहि खयलहुँ अछि तँ हम किन्नहु नहि

मानबैक । हय, शुरूमे तँ ओ तेहन जिद्द ठनलनि जे–रोग बेसाहलिऐक अछि अहाँ आ दबाइ–वीरोक चिन्ता करियौक हम ? मरऽ दियौक मरैत छैक तँ ।

हय, एक तँ बच्चाकेँ लटुआयल देखि कऽ हमर अपने जी–जान हेरा गेल रहय आ ताहिपरसँ हुनकर अङोर सन बोल और मोनकेँ लोहछा दिअय । मुदा हम करितिऐक तँ की ? हम तँ बच्चाक माय छलिऐक, ओकरा जन्म देबामे जे दु:ख भेल रहय से हमरे । से, जहरक घोंट पीबि कऽ हम कतेक हुनकर नेहोरा कयलियनि, तखन जा कऽ ओ होमोपेथी दबाइ आनि देलथिन । दवाइ की छलैक अमृते बूझह । खोअयलाक दुइये घंटाक बादसँ चुरकी कम होबऽ लगलैक आ बच्चा अलसाय लगलैक । की कहियह अंगरेजीफूल, सोन सन नेना, मासे–दू मासक आ लोक कहैक जे छौ मासक लगैत अछि, से गलि कऽ राङ भऽ गेलैक अछि । हरदम ओकरे सुमार लागल रहैत अछि । बूझि लैह जे अन्न–पानि नहि सोहाइत अछि ।

हय अंगरेजीफूल, आर जे से, मुदा पुरुखकेँ चीन्हब बड़ कठिन काज छैक । ओना, पुरुख सभ 'त्रिया चरित्रम्' कहि–कहि स्त्रीगणक जे ठट्ठा करौ, मुदा असलमे पुरुख तेहन भठमाह होइत अछि जे कखन कोन रूप धरत, से बूझब कठिन । मौगी दिन–राति गोँहरि करौक, अपन देह दौक, अपन सभ इच्छा–आकांक्षाकेँ थूड़ि–थकुचि ओकरेमे लगा दौक, मुदा तैयो पुरुखकेँ मौगीपर विश्वास नहि ।

तोँही कहह अंगरेजीफूल, बच्चा जे दु:खित पड़ि गेलैक, से की हम जानि बूझि कऽ पाड़ि देलिऐक ? जे कष्ट भेल से तँ हमरे भेल । तखन ओ जे हमरा एतेक विधंछन कयलनि से किएक ? जेँ ओ हमरा अपन बहिकिरनी मात्र बुझैत छथि तेँ ने ? कहाँ कखनो फुरलनि जे कैक रतुका जागलि अछि तँ घड़ियो भरिक लेल बच्चाकेँ कोरा लऽ लिऐक ! हय, हम जे बच्चामे ओझरायल रहिऐक आ हुनका जे भानस करऽ पड़नि, तेँ ओ ओना करथि । हय, तिनियेँ–चारि दिन चूल्हि लग जाय पड़लनि, ताहीमे अपन रूप देखा देलनि आ जे मौगी जिनगी भरि चुल्हिये अगोरने रहैत अछि से ककरा लग जा कऽ की कहतैक ?

अंगरेजीफूल हय, सभटा गप्प तँ अपने कहि गेलियह । तोरा दऽ तँ किछु पुछबे ने कयलियह । हय, तोँ जे एक कोनमे टीपि देलह अछि जे तोरो किछु लच्छन बुझाइत छह से कोना, की ? की तोरो जीह–तीह फड़िआइत छह ? तोरो खयबाक वस्तु सभपर मोन बौआइत छह ? हय, एखन तँ अपना सभक ओहि ठाम खूब पटुआक साग भेंटैत होयतैक । हमरा तँ पटुआक सागपर बड़ मोन दौड़य । तोरा कथीक तिसना होइत छह ? हय, तोँ अपना सासुकेँ एहि दऽ किछु कहलहुन अछि की नहि ? आ कि एखन धरि अपने मोनमे गोड़ने छह ? जँ लच्छन ठीके होइक आ तोहर सासुकेँ जँ बूझल भेल होयतनि तँ ओहि बेचारोकेँ प्राणमे प्राण आयल होयतनि । भगवती

जल्दीसँ तोरो कोरमे एकटा चिलका देथुन जे एहूमे दुनू अंगरेजीफूल समतूले बनलि रही । तोरा हमरे सप्पत । अंगरेजीफूल, सभ बात फड़िछा कऽ लिखिहह । चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । हय, हमरा दुनू प्राणीकेँ जखन सलाह भेल छल तखन तोँ भगवतीकेँ पातड़ि देने रहुन, मुदा हम तोहर तेहन अंगरेजीफूल छियह जे किछु नहि कयलियह । बेस, भगवाने तोहर दुनू गोटेक सलाह होयबाक साफल दऽ रहल छथुन। हुनकासँ पैघ संसारमे आन के अछि ? तोहर- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **37 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी भेटल । तोँ जे अपन बच्चा दऽ लिखलह अछि, से जानि बड़ दुःख भेल । हम तँ एखन ओकर मुँहों नहि देखलिऐक अछि, मुदा तैयो ओकरा प्रति मोनमे तेहन सिनेह उपजैत रहैत अछि से भगवानेटा जनैत होयताह । हय, हम बच्चा लेल केहन सिनेहसँ गंजी बुनने छलहुँ आ से पठाइयो देलियह । मुदा ओ जखन अपने दुखित पड़ि गेल तँ ने जानि, तोँ ओहि गंजीकेँ पहिरौने होयबहक कि नहि । हय, बच्चा दऽ जखन मायकेँ कहलियनि तँ ओ की बजलीह से जनैत छह तोँ ? ओ बजलीह जे– कोन लगने अहाँ गंजी पठौलिऐक जे बेचारा दुखित पड़ि गेल । ओ तँ अहींक अंगरेजीफूल छथि आ दूनू गोटेमे बेस सिनेह-बात अछि तेँ, ने तँ आन मौगी रहैत तँ कतेक खोम्ह मानैत आ मोने-मोन अहाँकेँ दस हजार गारि पढ़ैत । सय खण्ड कऽ कटैत ।

मुदा हम तँ सुच्चा मोनसँ कहैत छियह अंगरेजीफूल, हमरा ई अखण्ड विश्वास अछि जे तोँ हमर गंजी पठौनाइकेँ अधलाह नहि मानने होयबह । हय, हमरा लोकनि अपने बेसी नहि पढ़ने-लिखले होइ से दोसर बात, मुदा संग तँ अछि पढ़ले-लिखल लोकक । पढ़ल-लिखल लोक नजरि–गुजरि लगबाक बातकेँ कि डाइन–जोगिनबला गप्पकेँ मानितहि नहि छैक । तोहर मीसरोक मुँहसँ कैक बेर सुनने छी । हुनका एहि बातक विश्वास नहि छनि । जँ सत्त पूछह तँ हुनका संग रहि हमरो मोनक सैह हाल अछि । आशा करैत छी जे तोँहू ई सभ नहि मानैत होयबह । तोँ तँ एक बेर चिट्ठीमे लिखनहुँ छलीह जे तोँ खोम्हाहि नहि छह । यैह सभ जानि संतोख होइत अछि जे हमर अंगरेजीफूलकेँ हमर गंजी पठौनाइ अधलाह नहि लागल होयतैक । तोँ अपन मोनक एहि दऽ असलकी गप्प लिखिहह । तोरा हमरे सप्पत छह ।

हय अंगरेजीफूल, तोँ पुरुखक स्वभाव दऽ लिखलह अछि से तोहर बातकेँ हम मानैत छियह । संसारमे बहुत कम्मे एहन पुरुख होयत जे अपन घरबालीकेँ अपने जकाँ बुझैत हो । पुरुख अपनाकेँ कमौआ आ मालिक बुझैत अछि, अपन घरबालीकेँ नौड़िन । जँ सत्य पुछह तँ एहिमे खाली पुरुखे दोखी नहि, मौगियोक दोख छैक ।

स्त्रीगण अपनाकें ततेक असहाय बूझि लैत अछि आ पुरुखक इसारापर अगत्त तँ अगत्त करऽ लगैत अंछि जे पुरुख स्त्रीगणकें गमि लैत छैक आ अनेरे हुकुम चलबैत रहैत छैक । हय, पुरुख जँ घरमे काज करैत अछि कि खटैत अछि तँ स्त्रीगणे कोन पलंगपर सूतलि रहैत अछि ? स्त्रीगण जेना दिन-राति आश्रमक काज-धंधाक पाछाँ बेहाल रहैत अछि आ कि अपस्याँत रहैत अछि तेना जँ पुरुखकें करऽ पड़ौक तँ दुइये दिनमे सभ दशा भऽ जयतैक । जँ सत्त पूछह अंगरेजीफूल, तँ अपना देस-कोसमे जे स्त्रीगणक एहन हाल छैक तकर कारण यैह जे हमरा लोकनिक पुरुख बेस सोखमे जकाँ पढ़ि-लिखि बुधियार भऽ जाइत अछि आ हमरा लोकनि पढ़ि-लीखि नहि पबैत छी। तें बकलेल बनलि जिनगी भरि चूल्हि फूकैत रहैत छी आ डेग-डेग पर पुरुख द्वारा ठकलि-परतारलि जाइत छी ।

हय, तों जे ओझा दऽ लिखलह अछि जे बच्चाक दुखितमे ओ बताह जकाँ करैत छलाह ताहिमे भितरिया बात यैह छैक । जँ ओझा तोहर दुःख बुझितथुन तँ तोहर मोन एना किएक हुनकासँ फटितह ? मुदा जाय दहक, स्त्रीगण स्त्रीगणे होइत अछि। एकटा बिख महादेव पीलनि, दोसर सभ किछु धो-धा कऽ स्त्रीगणे पीबऽ जनैत अछि। पुरुख जे करैत अछि, करऽ दहक, हमरा लोकनि अपन डेग पाछाँ किएक करी !

हय अंगरेजीफूल, तों जे लच्छन सभ लिखऽ कहलह, से ठीके बात छैक । कोना-ने-कोना माय सेहो बुझि गेलथिन । हम तँ हुनका अपना मुँहें किछु नहि कहलियनि; आनो ककरो कहियो किछु नहि कहलिऐक; मुदा बूढ़-पुरैनियाँक नजरिसँ कतहु ई सभ बात झाँपल रहलैक अछि ! एक दिन हम असकतायलि ओसारापर नीचेमे पड़ि रहलि छलिऐक । माय देखलनि तँ टोकारा देलनि-अय कनियाँ, किछु होइत अछि जे एना भूआँमे पड़लि छी ?

हम किछु नहि उत्तर देलियनि । खाली, मुस्किया कऽ उठि बैसलिऐक । तकरा बाद ओ ततेक खोद-बेद शुरू कयलनि जे भण्डा फूटि गेलैक । ततेक चेताबऽ लगलीह जे तोहर मीसर सेहो बूझि गेलथुन । जाहि दिन हुनका बूझल भेलनि तकरे रातिमे भेट होइते सभसँ पहिने हमरा यैह कहलनि-आब हमरा-अहाँक कट्टिस ।'

हम अनठा कऽ कहलियनि-से हम कोन अपराध कयलहुँ अछि जे हमरासँ कट्टिस करैत छी ।' ताहिपर ओ बजलाह-अहाँ तेहन पैघ अपराध कयलहुँ अछि जकर माफी कहियो ने भेटि सकैत अछि ।'

हम चोट्टहि कहलियनि -अपराधक नामो कहब कि ?

ओ बजलाह-एतेक दिन धरि अहाँ किरपिन्नी बनलि छलहुँ आ आब ओहि सोभावकें त्यागि रहल छी । एहिसँ बढ़ि कऽ पैघ अपराध भैये की सकैत अछि ?

हमरा मुँहसँ बहरायल-अहाँकें तँ एहिना रहैत अछि ! सदच्छन हँसिये सुझैत

अछि ।' ताहिपर ओ हँसऽ लगलाह आ फेर कनेक कालक बाद कहलनि-आब तँ माय अहाँक बेस मानदान करैत होयत ?

हम कहलियनि- माय कहिया हमर मानदान नहि करैत छलीह ?' ओ फेर हँसऽ लगलाह आ बड़ी काल धरि हँसिते रहि गेलाह । हय अंगरेजीफूल, हमरा बूझि पड़ल जे एहि बातसँ ओहो प्रसन्न भेलाह आ ओहो हमरा कहऽ लगलाह जे एहन कोनो भारी काज नहि करी जे अपकार करय । हय, तकरा बादसँ इसकुलसँ मारते पोथी उठा कऽ लेने अबैत छथि आ हमरा कहैत छथि जे-बैसलि-बैसलि पढ़ैत रहू । पढ़ने ज्ञान बढ़त आ संसारकेँ नीक जकाँ चिन्हबैक ।' हय अंगरेजीफूल, तकरा बादसँ बेसी काल हम यैह कऽ रहलि छियह । कखनो पढ़लहुँ आ कखनो किछु बुनलहुँ ।

हय, तोँ बच्चाक हाल-समाचार फेर जल्दी लिखिहह । आब ओ कोना छह ? हय अंगरेजीफूल, बच्चाक नाम दऽ जे लिखलह, से नाम तँ रखैत छैक बच्चाक माय-बाप, बाबा-बाबी आ नाना-नानी । हम ओकर नाम रखियह से तँ भेल मुँहक अछैत नाकसँ पानि पीब ने ! तैयो तोँ हमरा ई मान देलह, से हमर भाग्य । ओकर नाम 'ताराकान्त' तोरा पसिन्न पड़तह ? अपन 'उग्रतारा' नाममेसँ तारा दऽ कऽ मीसरक नामक कान्त जोड़ि देलियह अछि । चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह, तोरा हमरे सप्पत !

तोहर- **अंगरेजीफूल**

38 (पटनासँ)

अंगरेजीफूल हय,

तोहर चिट्ठी भेटल । तोँ जे पुरुख दऽ गप्प सभ लिखलह अछि से पढ़ि संतोख भेल । हय, तोँ ई की लिखलह अछि जे बच्चाक लेल जे तोँ गंजी पठौलहक तकरा हम अधलाह मानब । सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, बच्चाक लेल तोहर हाथक बीनल गंजी देखि कऽ हमर करेज सूप सनक भऽ गेल छल । ओना, तँ गंजीक दाम लगाओल जाय तँ एक ने डेढ़ टाकाक होयतैक । एक-डेढ़ टाकामे बजारोमे एकसँ एक आ बढ़ियाँसँ बढ़ियाँ गंजी भेटि सकैत छैक । मुदा अपन लोकक पठाओल सनेसक परतर की करतैक बजारक वस्तु ? बजारक वस्तु कतबो नीक किएक ने होउक आ कि कतबो दामक किएक ने होउक-ओहिमे तँ सिनेहक भाव नहि रहैत छैक । एहि दुनियाँमे सभ वस्तुक दाम भऽ सकैत छैक, मुदा ककर बापक दिन थिकैक जे सिनेहक दाम लगाओत ! गंजीक बहन्ने हमरा तोहर सिनेह भेटल छल आ हम ओहि सिनेहक निरादर करितहुँ ? की एहन पपिआहि हमहीं छी हय ?

हय अंगरेजीफूल, तोहर ओझा जखने आफिससँ आयल छलथुन आ पार्सल हमरा हाथमे देने रहथुन, तखने हम ओकरा खोलि कऽ देखलिऐक । पहिने तँ हमरा भेल जे कथीक पार्सल छैक आ के ई हमरा पठौलक अछि, मुदा खोलैत देरी जहाँ

गंजीपर नजरि पड़ल कि चटसँ बूझि गेलहुँ जे ई काज तोरे होयतह । हम उनटि-पुनटि कऽ गंजी देखऽ लगलिऐक कि भट् दऽ तोहर हाथक लिखल चिट्ठी खसलैक । चिट्ठी उठा हम पढ़ऽ लगलहुँ आ तोहर ओझा कतेक काल धरि गंजीक बुनाइ देखैत रहलथुन । हम चिट्ठी पढ़ऽ लागि गेल रही आ ओ बीच-बीचमे कहथि-की चिट्ठी पढ़ैत छी, चिट्ठी तँ फेर कखनो पढ़ि लेब; एखन कने एहि गंजीक बुनाइ देखियौक।' मुदा हम एक आँखिसँ गंजीक दिस ताकि लिऐक आ फेर चिट्ठी पढ़ऽ लागी ।

'ओ' कैक बेर जखन टोकारा देलनि तँ हम जल्दीसँ चिट्ठीपर नजरि दौड़ा कऽ, मोड़ि कऽ राखि लेलहुँ आ लगलहुँ गंजी देखऽ । ओ बजलाह-अहाँक अंगरेजीफूल बेस लुरिगर छथि, केहन सुन्दर-सुन्दर फूल बीनऽ जनैत छथि ! मुदा एकटा बात हम कहबे करब, देहातक संस्कार खूब चढ़ल छनि मोनपर । लाल-पीयर जे सूत देलथिन अछि, तकरा जगहपर जँ कोनो हल्लुक रङ रहितैक आ कि उज्जर-कारी सूतसँ जँ बीनल रहितैक तँ गंजी आर बढ़ियाँ लगितैक ।

हम कहलियनि-रङक पसिन्न तँ अपन-अपन होइत छैक । ककरो कोनो रंग नीक लगैत छैक तँ ककरो कोनो रंग । अहाँ अंगरेजी पढ़ल-लिखल लोक छी, शहरेमे रहैत छी, शहरक फैशन दिन-राति आँखिक सोझाँमे लोटाइत अछि तेँ शहरे सन मोन भऽ गेल अछि; मुदा हमर अंगरेजीफूल जे एहिमे लाल-पीयर सूत देने छैक तकरा पाछाँ की भावना छैक से अहाँ की बुझबैक ? अहाँ खाहे ओकरा कतबो देहाती बुझियौक, मुदा हम ओकर पसिन्न जनैत छिऐक । ओ तेहन-तेहन वस्तु आ तेहन-तेहन रंगक मेल जनैत अछि जे अहाँ देखबैक तँ चकविदोर लागि जायत । असलमे ई गंजी बच्चाक लेल छैक आ पहिले खेप पठौलकैक अछि तेँ शुभक लेल लाल-पीयर रंग देने छैक । एहि शुभक भावनाकेँ जतेक स्त्रीगण बुझैत छैक ततेक पुरुख की जानऽ गेलैक ?' ताहिपर ओ ठहक्का लगौलनि आ कहलनि-जखन शुभेक बात थिकैक तँ देरी किएक, 'शुभस्य शीघ्रम्' करू, चटपट पहिराइये दियौक ।

सत्ते कहैत छियह अंगरेजीफूल, पार्सल भेटला दसो-पन्द्रह मिनट नहि भेल होयतैक कि हम बच्चाकेँ गंजी पहिरा देलिऐक । ई हमरा मोने नहि रहल जे आइ मंगल थिकैक तेँ नव वस्त्र नहि पहिराबी । कहलो छैक-'मंगल मारय जीवसँ, बुध पहिरि घर जाह ।' गंजी पहिरौलाक बाद जखन दिनपर ध्यान गेल तँ मोन खुट-खुट करऽ लागल । हम हुनका कहबो कयलियनि जे केहन पैघ गलती भऽ गेल अछि । ताहिपर ओ फेर ठहक्का लगौलनि । कहलनि जे अहींकेँ शहरमे रहने कोन फल भेल? अहूँक दिमागिपर तँ एखन धरि गमैया संस्कार चढ़ले अछि । कोनो दिन होइक, कपड़ा पहिरने किछु नहि होइत छैक । इहो कहबी तँ छैके जे नङटेँ पहिरी भुखले खाइ, जतऽ मन हो ततऽ जाइ । ई सभ अंधविश्वास थिक ।

तखन तँ हम किछु नहि कहलियनि, मुदा लगले जखन बच्चा दुखित पड़ि गेलैक तँ कहलियनि-देखियौक, अधलाह दिन कपड़ा पहिरने अधलाह फल होइत छैक कि नहि ?' ओ बजलाह-जँ सैह बात थिकैक तँ रहऽ दियौक एहि गंजीकेँ देहमे, हम देखैत छियनि मंगल महराजकेँ जे कोना जानसँ मारैत छथिन ।

हम कहलियनि-एहि सभमे हँसी-ठट्ठा नीक नहि होइत छैक, देवता-पितरसँ जिद्द नहि ठानी ।' मुदा ओ अपन जिद्दपर अड़ले रहलाह । जा बच्चा दुःखित रहलैक, गंजी धरि वैह पहिरने रहलैक ।

हय अंगरेजीफूल, सत्त कहैत छियह, तोहर ओझा ओही गंजीसँ हमर विश्वासकेँ हिला देलनि अछि । हमरा मोनमे होबऽ लागल अछि जे कतेको अंधविश्वासकेँ लोक अनेरे उघने आबि रहल अछि । कतेको अंधविश्वासक कारणेँ लोक अनेरे तबाह होइत रहैत अछि । एहि पर तोहर अपन जे विचार होअह से अवश्य लिखिहह ।

हय अंगरेजीफूल, एहि चिट्ठीमे तँ खाली गंजीयेपर एकटा ढड्ढर लीखि गेलियह। आन बात लिखबे नहि कयलियह । तोँ जे अपन लच्छन सब लिखलह ताहिमे कोनो खुलासा गप्प नहि लिखलह । खाली लिखलह जे तोहर सासु आ हमर मीसर तोरापर बड़ प्रसन्न छथुन । प्रसन्नताक बातो छैक । मुदा हय अंगरेजीफूल, जँ सन्तानसँ एक दिस सिनेह जुड़ाइत छैक तँ दोसर दिस गंजनो बड़ होइत छैक । माय बड़ पैघ पद थिकैक से बननाइ सुसुके नहि होइत छैक । माय बनब बड़ पैघ तपस्या जकाँ छैक । दिन-राति साधनामे पड़लि रहू । हय, नाम रखबामे तोहर दाबी कोनो कम छह? कहै छै, मरय माय, जीअय माउसि । आब बच्चाक नामक लाथेँ तोरा सदिखन मोन पाड़ैत रहबह, से बुझैत छहक ? तेँ तोहर राखल नाम हमरा नापसिन्न किएक होयत? आब बच्चा 'तारा' भऽ गेल। बापो सैह कहऽ लगलथिन अछि । हय अंगरेजीफूल, आइ एहिसँ बेसी नहि लिखबह। हुनका आफिससँ अयबाक बेर भेल जाइत छनि । बच्चा जागि जयतैक तँ बड़ मसकिलमे पड़ि जायब । चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । अपन सभ हाल फड़िछा कऽ लिखिहह । तोरा हमरे सप्पत । तोहर- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **39 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी आइये भेटल । तोँ जे गंजी दऽ गप्प सभ लिखलह से जानि संतोख भेल । हय, तोँ जे लिखलह जे हमर ओझा हमरा देहाती बुझैत छथि, से उचिते। हमर जन्म देहातमे भेल आ देहातेमे हमर जिनगी कटि रहल अछि । शहरक लोक तँ चारिये दिनमे उड़ाँत भऽ जाइत अछि । ओकर पसिन्न-नापसिन्नक स्वभाव सेहो बदलि जाइत छैक । ओना, अपन बात ऊपर राखऽ लेल तोँ अपन अंगरेजीफूलक पच्छ लेलह आ ओझाकेँ मातु करबाक चेष्टा कयलहुन मुदा असल बात जे छैक, सैह

रहतैक ने ! हम छी देहाती, तँ लोक हमरा शहरू किएक बूझत ? तखन रहल गंजीक रंगक गप्प; तँ से हमरा दिससँ तोँ ओझाकेँ उत्तर दैये देलहुन जे शुभक बेरमे अपना लोकनिक ओहि ठाम लाले-पीयर रंगक व्यवहार होइत छैक ।

हय अंगरेजीफूल, एहि दऽ अपन मोनक गप्प कहियो नहि लिखने छलियह, आइ एकदमसँ फड़िछा कऽ लीखि रहल छियह । आन देशमे कोना की होइत छैक से तँ हम नहि जनैत छिऐक, मुदा अपना देशमे जे भऽ रहल छैक, ताहि विषयमे किछु-ने-किछु अवश्ये बुझैत छिऐक । तोँ तँ कतेक दिनसँ बड़का शहरमे रहैत आयलि छह । शहरक भीड़-भड़क्का, कि घोल-फचक्कामे तोरा लोकनिक मोन उधियाइत रहैत होयतह । निचैन भऽ कऽ दुनू बेकती गप्पो कऽ पबैत होयबह कि नहि, ताहिमे हमरा सन्देह अछि । मुदा हमरा लोकनि तँ निचट्ट देहातमे रहैत छी । ने कोनो हूलिमालि, ने कोनो हड़हड़-खटखट । खयलहुँ- पीलहुँ आ बैसल-बैसल गप्प लड़ौलहुँ । से, जहियासँ तोहर मीसर दहिन भेलथुन अछि आ 'ओ' लच्छन सभ देखार भेलैक अछि, तहियासँ खूब गप्प करैत छी । यैह बूझि लैह जे काज ने धन्धा अढ़ाइ रोटी बन्धा । तँ, हुनकासँ गप्प लड़ौलासँ एतबा लाभ तँ जरूर भेल अछि जे हमर आँखि परसँ टोपर हटल जा रहल अछि । यैह बूझि लैह जे तोहर मीसर हमरा नव आँखि-पाँखि देने जा रहल छथुन ।

हय अंगरेजीफूल, आब हम ई मानऽ लागल छी जे साँय-बहुक सम्बन्ध खाली शरीरेक सम्बन्ध नहि होइत छैक । ई नहि जे स्त्रीगणक काज खाली एतबे होइत छैक जे दिन आ रातिमे भानस-भात करय आ सन्तान जनमौने चल जाय । साँय-बहु मिलि कऽ नीक-नीक विचार-सिचार कऽ सकैत अछि । अपन परिवारक सम्बन्धमे, समाजक सम्बन्धमे, देश-कोसक सम्बन्धमे सेहो राय-विचार कऽ सकैत अछि आ जँ पार लगैक तँ दस लोकक उपकारो कऽ सकैत अछि । तँ एहिना गप्पे-गप्पमे एक दिन हमरा ओ कहलनि जे-अहाँकेँ पटना देखऽ लेल मोन लागल छल, मुदा एक बेर जँ अहाँ पटनाक भितरिया वस्तु देखि लेबैक तँ पटनासँ घिरना भऽ जायत ।

हम -से किएक ? पटनामे कोन एहन वस्तु छैक जे हमरा घिरना होयत ।

ओ कहलनि-पटनेक कोन गप्प, कोनो पैघ शहर होउक, सभक एके रंग हाल छैक । पैघ शहरमे अहाँकेँ ने कतहु चरित्र भेटत, ने कतहु संस्कृति भेटत, ने कतहु हृदय भेटत । ओहि सभ ठाम अहाँ सुख आ सिङारक तऽरमे नीक चालि-चलनकेँ ठोहि पाड़ि कऽ कनैत देखबैक, नीक घरक बहु-बेटीकेँ संस्कृतिक नामपर रंडी-पतुरिया जकाँ नचैत देखबैक, आ हृदय तँ तेहन भेटत जे अहाँ एक घोंट पानिक लेल काटल छागर जकाँ छटपटाइत रहब, मुदा केओ एको चुड़ू आनि कऽ नहि देत।

हय अंगरेजीफूल, हम गमि रहल छी जे हुनका जेना शहरसँ विकट घिरना भऽ

गेल छनि । ओ हमरा सदिखन कहैत रहैत छथि जे लोक पैघ शहरमे जा कऽ अपस्वार्थी भऽ जाइत अछि । अपन परिवार, सऽर-कुटुम्बकेँ बिसरि जाइत अछि । अपन कुल-परिवारक आचार-विचारकेँ नष्ट कऽ लैत अछि, आ एहन आचार-विचारकेँ अपना लैत अछि जे अपना देशक वस्तु तँ कखनो नहि भऽ सकैत छैक । तेँ ओ हमरा सदिखन बुझबैत रहैत छथि जे हमरा लोकनि मैथिल छी । हमरा लोकनिक अपन खास आचार-विचार अछि । संसारमे रहबाक आ सोचबाक खास ढंग अछि । हमरा लोकनि तखने जीवित रहि सकैत छी, जे अपन विवेकक टेमीकेँ लेसने रहब आ अपन आचार-विचारक रक्षाक लेल जी जानसँ जुटल रहब ।

आब तोँही कहह अंगरेजीफूल, जखन हमरा मोनमे एहन बात सभ घुरियाइत रहैत अछि तँ बूझि सकैत छह जे अपन कुल-परिवारक वस्तुसँ कतेक सिनेह भऽ गेल होयत । हमर ओझाकेँ तँ खाली गंजीक रंगे अधलाह लगलनि, जँ कहियो ओ हमरा ओहि ठाम औताह तँ हमर सभ बात अधलाहे-अधलाह लगतनि ।

हय अंगरेजीफूल, आइ झोँकमे आबि कऽ मारतेरास की कहाँ लिखि गेलियह। ने जानि तोरा नीक लगतह कि नहि । तखन तोँ जे लिखैत छह जे समाजमे पसरल अन्धविश्वासक विषयमे अपन विचार लिखिहह, से संक्षेपमे हम यैह कहबह जे आन्हर विश्वासेकेँ ने अंधविश्वास कहैत छैक ! से कोनो काजमे आन्हर भऽ कऽ जे केओ किछु करत तकरा लाभे की होयतैक ? भगवान मनुक्खकेँ बुद्धि एही दुआरेँ देने छथिन जे लोक कोनो काज करबासँ पहिने सोचि लेअय आ तकरा बाद काज करय। जाफर रगड़ि कऽ नेनाकेँ चटौने जँ सर्दी छुटैत छैक तँ तकरा जाफरक गुण कहल जयतैक । मुदा पाथर रगड़ि कऽ जँ केओ एक बेर कोनो नेनाकेँ चटा देने होइक आ संयोगसँ ओहि नेनाक सर्दी छुटि गेल होइक तँ तकर ई माने नहि जे सभ नेनाकेँ पाथर घसि कऽ चटाओल जाय । बिनु बुझने-सुझने पाथर घसब-सैह अन्धविश्वास थिकैक। हमरा लोकनिकेँ चाही जे एहन व्यर्थक पाथर घसऽसँ फराके रही ।

हय अंगरेजीफूल, तोँ लिखैत छह जे हम लच्छन सभ तोरा फड़िछा कऽ लिखियह । हय, एहिमे फड़िछा कऽ लिखबाक गप्पे कोन छैक । जे बात सभ स्त्रीगणकेँ होइत छैक सैह हमरो होइत अछि । दिन भरि खाटपर पड़लि रहैत छी आ किछु पढ़ैत रहैत छी । दू-चारि दिन जी फड़ियायल, मुदा आब से नहि होइत अछि। तखन, की खाइ, की नहि खाइ-से हजार वस्तुपर मोन दौड़ैत रहैत अछि । एक दिन मोन भेल जे मुनिगा खैतहुँ, मुदा जेठ-अषाढ़मे मुनिगा कतऽसँ आबय ? मायकेँ कहलियनि मुनिगाक पातमे सरिसो दऽ कऽ झोर करऽ लेल, मुदा जखन झोर भेलैक तँ नीके नहि लागल । माय कखन ने कखन ई गप्प तोहर मीसरकेँ कहि देलथिन। तोहर मीसर हमरा खौंझाबऽ लगलाह-मनो भेल तँ मुनिगे पर, एखन तँ पटुआ साग अछिनरे भेंटैत छैक, ओहिपर मोन नहि जाइत अछि ? हम मूड़ी गोँति पड़यलहुँ ओहि

ठामसँ । साँझखन इसकुलसँ अबैत काल पाँच-सात टा बरहमसिया मुनिगा लेने अयलाह । ओकर झोर सत्ते बड़ दीब लागल । हय अंगरेजीफूल, हमर नेना ताराक हाल-चाल अवश्य लिखिहह । आब तँ बोलारय बुझैत होयतह । और की लिखियह? तोँ धरि अपन आरो गप्प जल्दी लिखिहह, तोरा हमरे सप्पत । तोहर- **अंगरेजीफूल**

40 (पटनासँ)

अंगरेजीफूल हय,

तोहर चिट्ठी भेटल । एहि बेरुका चिट्ठीमे तोँ तेहन बात सभ लिखलह अछि जे तकर उतारा की दियह से किछु फुरिते नहि अछि । हय, तोँ जे अपन ओझा दऽ जे बात सभ लिखलह अछि से हम अपने तँ पढ़बे कयलियह, संग-संग तोहर ओझाकेँ सेहो पढ़ा देलियनि । ओ एके सुरुक्कामे तोहर सौंसे चिट्ठीकेँ पढ़ि गेलथुन आ तकर बाद मुसकिआइत हमरा कहलनि-अहाँक अंगरेजीफूल देहातोमे रहि कऽ बेस बुधियारि भेलि जाइत छथि । अहाँकेँ चाही जे अहाँ हुनकासँ शिक्षा ली ।' हम चोट्टहि कहि बैसलियनि- तँ से अधलाहे कोन, हमरा लोकनि जे अपनामे चिट्ठी-पत्री करैत छी से खाली अपन दुःखे-सुख नहि बतियाइत छी, अपन विचारो-सिचार करैत छी । स्त्रीगणक बात जतेक स्त्रीगण बुझतैक ततेक पुरुख की बुझतैक ?

ताहिपर कने काल आ चुप रहलाह, फेर बजलाह-से उचिते कि ने, मौगीक बात बुझऽ लेल पुरुख स्त्रीगण तँ नहियेँ बनि जायत । पुरुख होइत अछि बाहरक लोक, ओकर असली जिनगी तँ बाहरे कटैत छैक; गामपर तँ ओ खाली आराम करऽ लेल अबैत अछि, थाकल मोनकेँ सुस्तबैत रहैत अछि ।

हम कहलियनि-तखन अहाँ जे हमरा अंगरेजीफूलसँ शिक्षा लेबऽ कहैत छी से कथी लेल ? एही लेल ने जे ओ मीसरसँ सभ तरहक गप्प बतियाइत अछि, दुनियाँ भरिक बात सोचैत अछि, रंग-विरंगक विचार-सिचार करैत अछि । मुदा अहाँ से अवसर हमरा दैत कहाँ छी ? अंगरेजीफूल तँ ठीके लिखलक अछि कि ने, जे-शहरक भीड़-भड़क्कामे तोरा लोकनिक मोन उधियाइत रहैत होयतह, निचैन भऽ कऽ दुनू बेकती गप्प कऽ पबैत होयबह की नहि । से हमर मोन उधियाइत हो वा नहि, मुदा अहाँक मोन सत्ते उधियायले रहैत अछि । हमर अंगरेजीफूल कतेक सुखी अछि आ हम तँ खाली नौड़िन जकाँ खटैत टा रहैत छी ।

ताहिपर पहिने तँ तोहर ओझा बड़ी जोरक ठहक्का लगौलथुन, फेर फुसियाहीक क्रोध देखबैत बजलथुन-अहाँक अंगरेजीफूल अहाँकेँ कतेक रासे ज्ञानक बात लिखलनि अछि; हमरा भेल जे अहाँकेँ अवश्ये किछुओ ज्ञान बढ़ल होयत, मुदा देखैत छी जे अहाँ फाँड़ बान्हि कऽ हमरेसँ लड़ऽ लेल तैयार छी, हमरासँ लड़ब तँ जीतब नहि, से अहाँकेँ नीक जकाँ बूझल अछि ।

हम ताहिपर पितमरू जकाँ कहलियनि–ई लड़बाक बात नहि, दुःखक बात छैक । अहाँ बाहरक लोक भेल खूब ढहनाइत फिरू आ हम घरमे बैसलि-बैसलि कूही होइत रहू । कनेको ई कहाँ फुरैत अछि जे हमरो संग एकटा मनुक्ख अछि, ओ मनुक्ख आन क्यो नहि, हमर अपने बहु अछि; ओकरो मोनमे किछु सेहन्ता होयतैक । से, उनटे अहाँ हमरा कात कयने रहैत छी आ कहैत छी जे अंगरेजीफूलसँ शिक्षा लियऽ । हम की शिक्षा लियऽ ? शिक्षा तँ अहाँकेँ लेबाक चाही ।

ताहिपर तोहर ओझा कोन ताल कयलथुन से जनैत छह अंगरेजीफूल ? कयलथुन की तँ ठामहि दूनू हाथ जोड़ि लेलथुन आ बाजऽ लगलथुन–बेस गुरुआइन जी, आइ दिनसँ हम अहाँसँ शिक्षा लेब, अहाँक अंगरेजीफूलसँ शिक्षा लेब; पढ़ाओल जाय, चेला पढ़क लेल तैयार अछि ।

हय अंगरेजीफूल, हुनकर ई ताल देखि कऽ हमरा रहल नहि गेल । हम कहलियनि– हमरा जे ई पाप चढ़बैत छी से किएक ? साँय कतहु बहुकेँ कऽल जोड़लकैक अछि ?

तोहर ओझा कने काल मुसुकियाइत हमरा दिस तकैत रहलथुन, तकरा बाद जोरसँ निसास छोड़ैत बाजि उठलथुन–ह–ह–ह– ! भने अहाँ हमरा अपन चेला बनऽसँ मुक्ति दऽ देलहुँ , जँ सरिपहुँ से बनऽ पड़ैत तँ ने जानि, अहाँ हमरा कोन-कोन पाठ पढ़ाबऽ लगितहुँ । बेस, जाय दियऽ, अहाँ हमर मितिने बनल रहू आ हम अहाँक मीतं, तँ आब अहाँ हमरा राय दियऽ जे एहनामे हमरा की करबाक चाही ?

हम चट् दऽ कहलियनि–करबाक की चाही, जाहिसँ हमरो किछु दुनियाँक गप्प बूझल होअय, हमहूँ किछु बुझिऐक, तेहन उपाय करू । दिन-रातिमे जँ बेसी समय अनका दैत छिऐक तँ किछु समय हमरो दियऽ ।

ओ लगले कहि बैसलाह –सरिपहुँ अहाँकेँ से सेहन्ता होइत अछि ? जँ से अछि तँ अहाँ पढ़नाइ छोड़लहुँ किएक ? केहन बढ़ियाँ हम पोथी सभ आनि-आनि दैत रही आ अहाँ पढ़ितो रही । फेर से शुरू कऽ दियऽ ।

हय अंगरेजीफूल, तखन तँ हम पढ़ब गछि लेलियनि, मुदा हमरा समये नहि भेटैत अछि जे पढ़ि सकब । रातिमे काज-धन्धासँ फुरसति भऽ जाइत अछि तँ पोथी हाथमे लैत छी, मुदा तखन हुनकासँ गप्प करबामे हूसि जाइत छी । हय, एहि बेरुका तोहर चिट्ठी और जे किछु कयने होइक, मुदा हमरा लेल तँ बड़का ओखधि बनि गेल । आब ओ हमरासँ गप्प करबामे बेसी मोन दऽ रहल छथि, हमहूँ तोरे जकाँ दुनियाँ भरिक विचार-सिचार पुछैत रहैत छियनि ।

हय अंगरेजीफूल, तोँ जे अंधविश्वासक विषयमे खोँइचा छोड़ा कऽ लिखलह से हमरा बड़ पसिन्न पड़ल । जे वस्तु जिनगीक लेल आवश्यक बूझि पड़य तकरा

रखबाक चाही आ जे निंघेस जकाँ भऽ गेल रहय, तकरा जिनगीसँ कात कऽ देबाक चाही । हमरो यैह विचार अछि । मुदा एकटा बात अवश्ये विचारबाक छैक जे हमर तिरहुतनी जनी लोकनि अनेरे बहुत रास बात उघैत आबि रहलि छथि, जाहिसँ ककरो कोनो लाभ नहि होइत छैक-से अपना समाजमे किएक रहय ? हय, एहि दऽ तोँ अपन विचार अवश्य लिखैत रहिहह जे हमरा लोकनि सदासँ चल अबैत रीति-नीतिमे ककरा अपनाबी आ ककरा तेजि दी । सत्त कहैत छियह अंगरेजीफूल, तिरहुतनी सब एखन एकदमसँ सूतलि अछि । ओकरा सभकेँ जगायब आवश्यक । ककरो तँ ई काज करहि पड़तैक, तोहर की विचार, से फड़िछा कऽ लिखिहह ।

हय, तोँ बरहमसिया मुनिगाक तीमन खयलह से पढ़ि हमरो मुँहमे पानि आबि गेल । तोरा पटुआक साग रुचैत नहि छह आ हमरा पटनामे भेटैत नहि अछि । एखन अरिकोँचक समय छैक । अपना गाममे एखन ओकर पातक हरियरीसँ लोकक आँखि जुड़ाइत होयतैक । आ एहि ठामक हाल यैह जे अरिकोँच कहि कऽ अरुबीक पात बिकाइत छैक । सेहो की, तँ आनामे बेसीसँ बेसी छौटा ने सातटा पात । एहनो कतहु जुलुम भेलैक अछि ! आर सभ कुशल । चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह, तोरा हमरे सप्पत । एखन एतबे । बौआ निन्नसँ जागि गेल अछि । ओकरा दूध पियाबक अछि। कनेको देरी भेला पर लोहछऽ लगैत अछि । बौआक विषयमे विस्तारसँ फेर लिखबह।

-तोहर- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **41 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठी समयपर भेटि गेल । एहि बेरुका तोहर चिट्ठी तेहन रमनगर छलह जे पढ़ैत काल हँसैत-हँसैत पेटमे बगहा लगैत छल । तोहर मीसर हमरा कुरकुट भऽ कऽ हँसैत देखलनि तँ टोकारा देलनि-एहि बेरुका चिट्ठीमे कोन एहन बात छैक जे बताहि जकाँ हँसि रहलि छी ?' हम कहलियनि- लियऽ, अपने पढ़ि लियऽ; अहूँ हमरे जकाँ हँसऽ नहि लागी तँ फेर की ।

ओ बजलाह-नहि हम अनकर चिट्ठी नहि पढ़ैत छी, आ पढ़बो करब तँ मौगियाहिये चिट्ठी ? मौगियाही चिट्ठीमे तँ खाली बुढ़ियाक फूसि रहैत छैक ।' हमरा तोहर मीसरक ई गप्प बड़ अनोन-बिसनोन लागल । कहलियनि-पुरुख हरदम मौगीक विषयमे त्रिया-चरित्रम्-त्रिया चरित्रम्क रटना लगौने रहैत अछि, मुदा असलमे पुरुख अपने की होइत अछि से कोनो स्त्रीगणक बुतेँ चीन्हब-जानब कठिन होइत छैक। अहाँ लोकनि तँ एक दिस कहैत रहैत छिऐक जे स्त्रीगण पढ़ैत-लिखैत नहि अछि तेँ ओकर दिमागमे गोबर-भुस्सा भरल रहैत छैक; आ तेँ ओ पढ़ल-लिखल पुरुखक लेखेँ पोसुआ माल-जालसँ बेसी जोगरक नहि होइत अछि । जेना हरबाहक टिटकारी पर बड़द हऽरमे बहैत रहैत अछि तहिना स्त्रीगण आश्रमक काजटामे जोताय जनैत अछि, मुदा दोसर दिस जँ कोनो स्त्रीगण पढ़बा-लिखबामे मोन दैत अछि,

दुनियाँक आन-आन गप्प बुझबाक चेष्टा करैत अछि तँ तकरो एके दाबियेँ लाड़ि दैत छिऐक। एहन अनटोटल गप्प बजलासँ स्त्रीगणक मोनमे कतेक चोट लगैत छैक से कहियो सोचैत कहाँ छिऐक ?

हमर एहि गप्पपर तोहर मीसर मुसुकियाय लगलथुन । बजलथुन-किएक, हम जे बुढ़ियाक फूसि कहि देलहुँ से बड़ अधलाह लागल ?

हम कहलियनि-अधलाह किएक नहि लागत ? अहाँ बुझलिऐक ने सुझलिऐक आ चट दऽ बुढ़ियाक फूसि कहि देलिऐक । हम दुनू अंगरेजीफूल अपनामे आइ-काल्हि की सोचि रहल छी, कोन तरहक विचार-सिचार कऽ रहल छी, तकर कोनो अनुमानो नहि होयत अहाँकेँ ।

ताहिपर ओ की कयलनि से जनैत छह अंगरेजीफूल ? ओहो हमर ओझे जकाँ कऽल जोड़ि लेलनि आ बजलाह-बस पंडिताइनजी, हम अबोध ई सभ की जानऽ गेलिऐक । उपदेश देल जाओ । हम अपनेक उपदेशक एक-एक अच्छरक पालन करब ।' हम ताहिपर हुनक जोड़ल हाथकेँ पकड़ि लेलियनि आ एक हाथसँ दोसर हाथकेँ फराक करैत कहलियनि-अहाँ हँसी करू वा जे करू, हम पुरुखक चालिकेँ खूब बुझैत छियैक । पुरुख जखन कोनो गलती कऽ जाइत अछि आ ओकर मोन मानि जाइत छैक जे हम गलती कयलहुँ अछि तँ ओ अपन गलतीकेँ नुकयबाक लेल हँसी-ठट्ठाक लाथ करैत अछि ।

ओ मुस्की मारैत कनेक काल हमरा आँखिमे किछु तकैत रहलाह आ तकर बाद फेर हँसियेक सूरमे बजलाह-ई तँ कोनो नव गप्प नहि कहलहुँ । पुरुख कतबो पढ़ल-लिखल रहौ, कतबो बुद्धिक काज करौ, मुदा ओकर घरबाली अपने भलेँ मूर्ख रहौ, अपन साँयकेँ बुड़िबके बुझैत छैक । आ ताहिपरसँ खाली अपने बुझैत रहि जाइत तँ एकटा बातो, सौंसे स्त्रीगण समाजमे डिगडिगिया पिटैत रहैत अछि जे हमर घरबलाकेँ एकोरत्ती ज्ञाने नहि छैक, कतबो बुझबैत रहैत छिऐक जे ई करू ओ करू तँ किछु सुनिते नहि अछि । छैक कि नहि ई बात ?

हम कहलियनि- आन स्त्रीगणक बात नहि जानी, अहाँ दऽ हम जँ करैत होइ तँ से कहू । की हमहूँ लोककेँ कहैत फिरैत छिऐक ? अहाँक प्रति हमरा मोनमे कतेक सरधा अछि, कतेक सिनेह अछि से हमहीं जनैत छी । जे स्त्रीगण अपन साँयकेँ देखौआ सिनेह करैत होयत तकरा मोनमे साँयक प्रति सरधा किएक होयतैक ? एहने स्त्रीगण साँयकेँ बुड़िबक बुझैत होयत, एहने स्त्रीगण साँयक अल्ल-बल्ल ढोलहो पिटैत होयत ।

ताहिपर ओ हमर हाथ पकड़ि लेलनि, सिनेहक आँखिएँ हमरा दिस तकैत रहलाह आ बजलाह-सरिपहुँ अहाँकेँ हमरा बातसँ दुःख भेल ? मुदा सत्त कहैत छी, अहाँकेँ जी दुखाबक मोनसँ हम नहि बाजल रही । असलमे अनकर चिट्ठी पढ़ब हम

अपराध मानैत छी । जे अनकर चिट्ठी पढ़ैत अछि से बहुत पैघ अपराध करैत अछि। एक लेखेँ एहन लोककेँ बड़का पापी बुझबाक चाही ।

हम सिनेहक स्वरमे कहलियनि-तँ यैह गप्प हमरा खुलासा कहि दितहुँ । जनैत छी, आने-मानेक गप्पसँ आ कि हँसी-ठट्ठामे बोरल टेढ़ गप्पसँ साँय-बहुमे अनेरेक रूसा-फुल्ली भऽ जाइत छैक ।

ओ बजलाह-हम अहाँक एहि गप्पकेँ मानैत छी । बेस, आब जाय दियऽ एहि गप्पकेँ । कहू जे अंगरेजीफूलक कोन गप्पसँ अहाँकेँ एतेक हँसी लागल छल ?

हय अंगरेजीफूल, हम अपन ओझाक कऽल जोड़ऽवला गप्प कहैत कहलियनि-जेना अहाँ हमरा पंडिताइन कहि कऽ कऽल जोड़लहुँ तहिना ओझो अंगरेजीफूलकेँ कल जोड़ने छलथिन आ ताहिपरसँ की तँ अहाँसँ शिक्षा लेब, अहाँक अंगरेजीफूलसँ शिक्षा लेब । कहू तँ भला, साँय कतहु बहुसँ शिक्षा लेलकैक अछि ? बहुक सखी -बहिनपासँ शिक्षा लेलकैक अछि ? ओझो बड़ खेयाली लोक छथि । हमरा हुनकर तालपर हँसी लगैत छल । मुदा अहूँ ओझेक पाटि धयलहुँ । अहूँ की हुनकासँ एको रत्ती कम अकट्ठी छी ?' ताहिपर तोहर मीसर ठहक्का लगौलथुन आ बड़ी काल धरि हँसिते रहि गेलथुन ।

हय, हमर दुलारू बहिनौतक कुशल-छेम अवश्य लिखिहह । तोँ तँ ओकरा अपन कोरमे लऽ कऽ आ भरि आँखि देखि-देखि खूब तिरपित होइत होयबह । हमरा बड़ मन लागल अछि ओकर मुँह-ठान, रूप-रंग, केश-कपार, आँखि-नाक, गाल-ठोर देखबा लेल । मन लागल अछि ओकरा कोरमे लऽ कऽ हाथसँ छुइबाक लेल । मुदा से सेहन्ता तँ हमर ओझा चाहताह तखने पूर होयत । हय अंगरेजीफूल, कमसँ कम एकटा फोटोओ तँ पठा दितह जे भरि आँखि देखि मन जुड़बितहुँ । हम खूब बुझैत छी, तोँ आ ओझा मीलि कऽ खूब फोटो घिचौने होयबह बौआकेँ कोरमे लऽ कऽ । तोरा हमरे सप्पत, एकोटा फोटो जल्दीसँ पठा दैह । आसकति नहि करिहह।

हय अंगरेजीफूल, आइ आब एहिसँ बेसी नहि लिखबह । तोहर आर बातक उतारा दोसर चिट्ठीमे देबह । एखन आङनमे इजोतदाइ बूलऽ आबि गेल छथि । की बुझतीह । तोँ धरि चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह । तोरा हमरे सप्पत । तोहर- **अंगरेजीफूल**

42 (पटनासँ)

अंगरेजीफूल हय,

तोहर चिट्ठीक बाट तकैत छलियह । भेटैत देरी हपसि कऽ लेलहुँ आ हाहुत्ती जकाँ पढ़ऽ लगलहुँ । मुदा ओहिमे तोँ खाली भरिगर-भरिगर बात सब लिखने छह । अपना दऽ जे बात लिखबाक चाहियह से तँ किछु लिखबे ने कयलह । एखन तोहर मन केहन रहैत छह से जनबाक लेल हमर जी टाङल रहैत अछि तोरे पर । हमरा मनमे खुटखुट्टी लागि गेल अछि । आब जे उतारा दिहह ताहिमे आन सब बेफजूल बात छोड़ि

कऽ अपन असली बात खूब फड़िछा कऽ लिखिहह । भगवती निकेँना पार लगा देथुन ।

हय, एखन तँ खूब सधोरि अबैत होयताह अङने-अङनेसँ आ मिठ-मधुर खीर-गुलगुल्ला खाइत होयबह । सासुओ तँ विन्याससँ सधोरि देनहि होयथुन । हमरा तँ से सेहन्ता लगले रहि गेल । एहि ठाम पटनामे के अपन लोक अछि जे ई व्यवहार करितय । नैहरमे की सासुरमे रहितहुँ तखन ने पूर होइतय ई सेहन्ता । हमरा तँ आब होइत अछि, पटनासँ गामे नीक । आबो तोहर ओझा हमरा गाम जाय देथुन आकि नहि, से नहि जानि । अपना गाम जाइ लय मोन औनाइत रहैत अछि । हुनका कतेक गोहरबैत छियनि जे आबो तँ एक बेर गाम जाय दियऽ । हमर माय कहैत होयत जे हमर बेटी-जमाय केहन निसोख भऽ गेल जे एक बेर नातिक मुँहो देखा देत सेहो नहि होइत छैक । मुदा तोहर ओझा तँ नाक पर माछियो ने बैसऽ दैत छथुन । कहैत छथुन जे सोझे उठि कऽ चलि देब से नहि ने होयत ! हमरा तँ अहाँक सासुर आ अपना सासुर, दुनू ठाम जाय पड़त । ओहि लय जे सरंजाम ओरियाबऽ पड़त से ओहिना तँ नहि भऽ जयतैक । एखन जे हाल अछि से देखितहि छी ।

अंगरेजीफूल हय, तोहर ओझा मुट्ठीक सक्कत नहि छथुन, छथुन हिलसगर। मुदा एखन सदति हाथ खालिए रहैत छनि । एमहर खर्च-खाप सेहो बढ़ि गेलैक अछि। हमर आ बौआक दवाइ-बीरो लगितहि रहैत छैक । संगहि बौआक लेल दूधक चलानी डिब्बा पनरहिए-पनरहिए आनऽ पड़ैत छनि । हमहूँ हुनका की कहियनु । हुनका देखि कऽ दरेग होइत रहैत अछि ।

हय, बौआक आ बौआसंग अपना सभक फोटो घिचयबाक मोन तँ बड़ छल मुदा ओ बरोबरि कहैत छलाह जे– अच्छा भऽ जयतैक ।' मन तँ हुनको होइत रहैत छनि मुदा किएक अनठबैत छथि से हम नहि बुझैत होइ से नहि । सभ छहर-महर आ इलवाइस टके-पाइसँ होइत छैक ने । फोटो खिचयबामे पाइ लागि जैतनि तँ आन काजमे ओझर भऽ जैतनि, तेँ फोटो लय कान नहि पटपटबैत छलाह । संजोगसँ एमहर एकटा बात भेलैक । हमर सासु गामसँ तोरा ओझाकेँ चिट्ठी लिखने छलथिन जे-एतेक दिन भऽ गेल, तोँ गाम आयबे छोड़ि देलह । कनिञोकेँ आबऽ दितऽहुन, सेहो नहि । भगवती कनियाँकेँ दोसर दिन-दुनियाँ देखौलथिन । पोता भेल । मुदा आन सुख-सेहन्ता तँ नहिएँ पूरल, बच्चोक मुँह देखबा लेल ललाइत छी । हम केहन निठोहर भऽ गेलहुँ से नहि बुझबह ।

हय, ओ चिट्ठी पढ़ि कऽ गुम्म रहि गेलाह आ चिट्ठी हमरा हाथमे दऽ देलनि। ओही दिन साँझमे आफिससँ अयलाह तँ कहलनि जे जल्दीसँ तैयार होउ । बौआक फोटो घिचयबालय चलबाक अछि । मायक एकोटा इच्छा तँ पूर कऽ दिऐक।

फोटोघरमे पहिने बौआक फोटो घीचल गेलैक । फेर तोहर ओझा आ हमरा बीचमे बौआकेँ राखि कऽ फोटो घिचयलैक । हम बौआकेँ कोरमे लऽ कऽ कोठलीसँ

बहराय लगलहुँ तँ तोहर ओझा हमरा रोकैत कहलथिन-थम्हू, जखन एहि ठाम आयले छी तँ हमहूँ-अहाँ संग-संग फोटो घिचाइये ली ।' हमरा कनेक लाजो भेल मुदा ओ बौआकेँ हमरा कोरसँ लऽ कऽ फोटोबलाक कोरमे थम्हा देलथिन आ हमरा घीचि कऽ बेंच पर पाँजरमे सटा कऽ बैसा लेलनि । से ठीक ओहिना बैसा लेलनि जेना चुमाओन कालमे बैसाओल जाइत छल । हय अंगरेजीफूल, फोटो घिचबाकाल आँखि पर बिजलीबत्तीक तेहन तेज इजोत पड़ैत छल जे हमर आँखिये चोन्हरा गेल । ताहिपरसँ फोटो घीचऽबला कहय- जरा और नजदीक खिसक जाइए...हाँ....अब जरा मुस्कुराइए. ....ई कठहँस्सी कोना हँसी से हमरा फुराइते नहि छल । जेना-तेना फोटो घिचायल । तीनू बेरुक तीन-तीन टा फोटो दितनि । हम कहलियनि जे हम एकटा फोटो अंगरेजीफूलकेँ सेहो पठयबैक । तोहर ओझा बजलथुन-हँ, एतबहिसँ तँ काज नहि चलतैक ।' ई कहि ओ तीनूक पाँच-पाँचटा फोटो बनाबऽ कहलथिन ।

कतेक दिनक बाद तोहर ओझा फोटो सब अनलथुन । बौआबला एकटा फोटो ओ अपना गाम पठा देलथिन आ हम एकटा मायकेँ पठा देलिऐक । तोरा मुदा तीनू फोटो पठा रहल छियह । आगूमे अयना राखि कऽ बौआक फोटो देखबह तँ बूझि पड़तह जे अपने मुँह देखैत छह । आ हे, एकटा बात कहि दैत छियह-तोहर ओझाक संगबला हमर फोटो अनका ककरो नहि देखऽ दिहक । मीसरोकेँ नहि । हमरे सप्पत ।

अंगरेजीफूल हय, एकटा बात अतेब कऽ कहि रहल छियह । तोरो पहिलौठ छियह । पहिलौठ नैहरेमे नीक होइत छैक । सासुरमे तँ कनिञा लाजे-कठौत भेल रहैत अछि । अपन नीक बेजाय ककरो भरि मुँह कहियो ने सकैत अछि । तोहर सासुओ तँ एकसरिए छथुन, हुनकासँ सम्हार होयतनि ? हमरा तँ लगमे अस्पताल छल तेँ सम्हरि गेल । तोरा तँ गामघरमे से नहि छह । हय, तोहर सासु बड़ बुझनुक आ विवेकी छथुन । हुनका ओरिया कऽ कहबहुन तँ ओ अपना गाम जाय देब मानि जयथुन । ओ चाहथिन तँ मीसरोकेँ मानऽ पड़तनि । मानथिन किएक ने ? होअह तँ हमही मीसरकेँ चिट्ठी लिखियनि, ने तँ तोहर ओझेसँ लिखबियनि जे तोरा गाम जाय देथुन । तोहर ओझा हमरा गाम नहि जाय देलनि, जे भेल से पटनेमे भेल । मुदा हमर मीसरो अपन साढ़ूक देखाउँसि करताह, से नहि होयतनि । ई कोनो बात भेलै ?

आब एखन एतबे । चिट्ठीक उतारा तुरन्त दिहह । अनठबिहह नहि । तोरा हमरे सप्पत । तोहरे- **अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल, **43 (गामसँ)**

तोहर चिट्ठीक बाट तकिते छलहुँ । भेटल तँ हलसि कऽ लेलहुँ । ओहिमे तोहर नमहर आ रमनगर चिट्ठी आ फोटो देखि कऽ हीया जुड़ा गेल । मोन कतेक पुलकित भऽ गेल से कोना लिखियह ? हम बच्चाक फोटो देखऽ लगलहुँ । भेल जे ओकरा अपना करेजमे सटौने रही । अँय हे, तोँ लिखने छह एन-मेन तोरे सन, से

किएक? कपार मीसर सन, नाक-ठोर, तोहर सन। जँ कने-मने छाँह-छूह ताकब तँ आँखि आ मुँहक गढनि हमरासँ मिलैत बुझाइत छैक। एकरा तोँ एन-मेन कहैत छहक! हय, हमरा तोँ जे ई बात लिखलह तँ हमरा छगुनता लागि गेल। हमर परोँछ बच्चाकेँ कोना लागि गेलैक? आब बुझलहुँ जे तोँ पिहानी बुझबैत छलह जे हम आ तोँ सखी। दू देह, एक प्राण। तखन तोहर मुँह हमर भेल आ हमर मुँह तोहर भेलह। छैक ने यैह बात?

हय अंगरेजीफूल, ई छौंड़ा, मने ओकर फोटो तँ हमरा बेस संकोचमे धऽ देलक। हम फोटोकेँ खूब आवेशसँ देखैत रही। देखैत-देखैत बेसोहमे हम ओकरा चुम्मा लियऽ लगलिऐक। तखने तोहर मीसर आबि गेलथुन। ओ बजलाह-एकसरिएमे ककरा चुम्मा-चाटी लऽ रहल छी?' हम लजा गेलहुँ। बच्चाक फोटो हाथमे दैत कहलियनि-अंगरेजीफूल पठौलक अछि।' ओ फोटोकेँ गँहिकी नजरिसँ देखऽ लगलाह। हम तोहर दुनू बेकतीबला फोटो आँचर तर नुका लेलहुँ। मुदा हुनका नजरिसँ ओ छपल नहि रहल। ओ कहलनि-ओ, ओ की छी? जा हम 'नहि किछु' बाजी ता हमरा हाथसँ ओ दुनू फोटो लऽ लेलनि आ देखि-देखि मुसकिआय लगलाह। फेर ओ हमरा दिस ताकि कऽ हँसि देलनि। कनेक काल हमरा दिस टकटकी लगा कऽ तकैत कहलनि-आबऽ दियौक बेर तँ अहूँक एहने फोटो घिचा देब। हम 'भक्' कहैत घरसँ बहरा कऽ माय लग जा कऽ बैसि रहलहुँ।

हय, मायकेँ सेहो बच्चाक फोटो देखऽ देलियनि-देखथुन, अंगरेजीफूलक बेटाक फोटो थिकैक।' माय फोटो हाथमे लऽ कऽ देखैत पुछलनि-बच्चा ककरा सन छैक, हम कहलियनि-बेसी अंगरेजीफूल सन, एहि पर ओ बजलीह जे- माय-माम सन मुँहबला बच्चा भागमन्त होइत छैक।' माय फोटो लेलनि तँ देखितहि रहि गेलीह। फेर बजलीह-अहाँक बहिनपा बड़ि भागमन्ति छथि। सब दिन साँयेँ-पूतेँ जुड़ाइत रहथु। भगवती सभकेँ एहन दिन देखबथुन। संग-संग हमरो सभ दिस तकिहथि।' ई कहि ओ हमरा माथसँ पैर धरि निंघारैत रहलीह। हम मूड़ी निहुरौने ठाढ़ि रहलहुँ। हुनक मनक मनोरथ हम बुझैत छलियनि।

हय अंगरेजीफूल, अपन हाल-समाचार की लिखितियह? जेहने छल तेहने अछि। ओतबे बातकेँ घोन-फेन की करितियह। तखन देह कने-कने भारी भेल जाइत अछि। पेटमे कखनो कऽ मिठ-मिठ दर्द होअऽ लगैत आ किछु घुरघुराय लगैत अछि। माय हमर बात सबसँ नुकौने रहलथिन मुदा ई बात सब छपित थोड़बे रहैत छैक? काने-कान पसरिए जाइत छैक। से टोल-पड़ोसक लोक तँ जानिये गेलनि।

हँ हय अंगरेजीफूल, किछु नवो बात सब भेलैक अछि। से बात सब तोरा कोना नहि लिखबह। तोरा नहि कहबह तँ ककरा कहबैक? तोँही कहह, तोरा जे पछिला चिट्ठी लिखने छलियह, तकरा बादे ई सब भेलैक तँ पहिने कोना

लिखितियह ? हय, भाग्यें हमरा जे ई सुदिन भेल अछि ताहिसँ बहुत पहिने लिखने रहियह । जगतारनिमाय हमरा मायकेँ कहने रहथिन जे आब अहाँक पुतोहुकेँ बाल-बच्चा नहि होयत तँ बेटाकेँ मने तोरा मीसरकेँ, दोसर बियाह करा दियौक । ओ बात बिसरल नहि होयबह । तखन हमर मनुआँ कतेक कानल रहय से बुझले छह । ओहनमे एहि दुखनीकेँ तोँही बोल-भरोस देने रहह । हुनकर बेटी जगतारनि ओहि दिन हुनका संगहि रहथिन । ओ अपन मायक बात कटैत हमर पच्छ लऽ कऽ बाजलि रहथि । ओ जगतारनिदाइ एक दिन हमरा आङन अयलीह । ओ मायकेँ पुछलथिन-काकी अय, भौजी कतऽ छथि ?' माय कहलथिन-घरेमे किछु लूरू-खूरू करैत छथि ।

हय अंगरेजीफूल, जगतारनिदाइ सोझे हमरा घरमे हूलि गेलीह आ हँसैत कहलनि-अँय अय भौजी ! अहाँ कोना चुपेचाप गरुभार भऽ गेलहुँ आ एते दिन नुकौने रहलहुँ ? काकी ककरो बुझइयो देलथिन ?

हम तँ अनचोकमे कहल गेल हुनकर बोल सुनि कऽ संकोचित भऽ गेलहुँ । हम उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ । हुनकर हाथ पकड़ि कऽ पलंग पर बैसबैत हँसिते कहलियनि-कोना भऽ गेलहुँ से तँ अपना सब किछु बुझले, गमल अछि । हमरा की पुछैत छी ? आ एहि बातक ढोलहो तँ नहियेँ पड़ैत छैक ।

ओ बजलीह-ढोलहो नहि, मुदा खुसनामाक बात सूनि कऽ अनको खुसी होइत छैक किने ! हम कोना कहू जे अहाँ दऽ ई बात सूनि हमरा कतेक अहलाद भेल ? आइ नहि रहल गेल तँ भेट करऽ चल अयलहुँ । भेल जे कनी काकीक सेहो जिगेसा कऽ लियनि ।' ई कहैत कहैत ओ हमर दुनू हाथ जोरसँ पकड़ि लेलनि आ कहऽ लगलीह-अय भौजी, किछु मास पहिलुक गप्प अहाँ बिसरल नहि होयब । बिसरैबला बातो नहि छैक । हमर माय काकीकेँ कहने रहनि जे अहाँक पुतोहु बाँझ अछि, बेटाकेँ दोसर बियाह करा दियऽ- से सूनि कऽ हमरा बड़ दुख भेल । तखन अहाँपर की बीतल होयत से हम बुझैत छी । हमर माय बिसरि गेलि जे ओकरो बेटीकेँ एहने भोग भोगऽ पड़ल छलैक । ओहि दिन हम अपन ननदिक बात कहने छलिऐक से ओहिना मान चढ़ा कऽ । बात हमर अपने छल, ओ कोँढफटटू होइत कहलनि-ओहि बातकेँ आब बिसरि दियऽ । ओकरा अपन माय बूझि कऽ माफ कऽ दियौक । ओहि दिन आङन जा कऽ हम बड़ फज्झति कयलिऐक आ एखनो खोभाटैत रहैत छिऐक । आब जे अहाँक कल्याणक योग्यता दऽ सुनलक अछि तँ लाज-गरानिसँ गड़लि जाइत अछि। संकोचे एमहर आयबे छोड़ि देलक अछि ।' हम की कहितियनि ? कहलियनि-सब, दिनक दोख छिऐक-आ हमर आँखि नोरा गेल ।

हय अंगरेजीफूल, तोरा हम कोन खिस्सा लिखऽ लगलियह ? एहिमे आन बात सब छुटले जा रहल छल । हय, माय तँ हमरा सबसँ नुका कऽ पौतीमे राखऽ चाहैत छथि जे कहूँ हमरा रौद-बसात ने लागि जाय । लोकक नजरिसँ बचौने राखऽ चाहैत

छथि । सब दिन कोनो ने कोनो टोना-टापर करितहि रहैत छथि । अंगरेजीफूल हय, चन्द्रग्रहण जे भेल छलह, ताहि दिन साँझमे माय एकटा नमहर खड़ही अनलनि । ओ खड़हीकेँ हमर नमतीक बराबरि नापि कऽ खलियाहा कोठीमे सोझ कऽ ठाढ़ कऽ देलथिन । हम पुछलियनि जे-ई की कयलथिन माय ?' ताहि पर ओ कहलनि जे गहन कालमे हाथ-पैर मोड़ि कऽ सुतबे करब । गहनकालमे हाथ-पैर मोड़ल रहने बच्चा गहनपेड़ू भऽ कऽ जनमैत छैक । ई कऽ देलासँ दोख कटित भऽ जाइत छैक ।' प्रात भेने, सबेरगरे डोमिनि 'गहनदान-गहनदान' करैत अयलैक तँ माय सीधा साँठि कऽ हमरा हाथेँ ओकरा दियौलथिन ।

हय, एक दिन तोरा मीसरकेँ कहलथिन जे- सुखचन डोमकेँ बँसबिट्टीसँ दूटा बाँस कटबा दहक जे बासन सब बीनि कऽ दऽ जयतैक ।' तोहर मीसर पुछलथिन- माय, की करबही एतेक बासन लऽ कऽ ?' माय कहलथिन जे- कनियाँक हाथसँ वंशदान करयबनि ।' सुखचन तीन-चारि दिनक बाद रङल - ढेउरल ढाकी-छिटटा, धामी-पथिया, सुपती-मौनी, चङेरा-चङेरी, पेटार-बिड़हारा आ मारि किदन कहाँदन सब आनि कऽ आङनमे ढेरी लगा देलकैक । जेना एकादसीक जागमे आबा, माने माँटिक वासनक ढेरी उसरगल जाइत छैक, तहिना ओहि बासनक ढेरीकेँ नव वस्त्रसँ झाँपि देल गेलैक । माय हमरा जलसँ ओकरा उसरगि दियऽ कहलनि । हम उसरगि देलिऐक । गामक लोक सभ, जकरा जे हाथ लगलैक से उठा कऽ लऽ गेल । तोहर मीसर चुपचाप तमासा देखैत रहलथुन । माय कहलथिन-कल्याणक योग्यता भेला पर पूर्वमे वंशदान होइत छलैक, आब तँ उठाबे जकाँ भऽ गेलैक ।' हय अंगरेजीफूल, हमहूँ तँ ई पहिले बेर सुनलिऐक-देखलिऐक अछि । अपना गाममे कहाँ ककरो वंशदान होइत देखलिऐक । पहिने होइत होयतैक ।

अँय हे, सधोरि लय एना तोहर मुँह किएक पनिछायल जाइत छह ? की हय, बात की छैक ? फेर तँ ने........? एखन थोड़ेक दिन दम्म धरह, अगुताह जुनि । हय, एहि ठाम तँ आइ-माइ सब मायसँ पूछऽ अयलथिन सधोरि देबाक संबंधमे तँ माय कहलथिन जे एखन तँ अनगनती मास सुरू भऽ गेलैक । आब एखन ई बेबहार कोना होयतैक ?' गामसँ गेनमा सेहो आयल छल । माय की-कहाँ सब साँठि कऽ पठौने छलैक । ओ मायकेँ हमर माइक समाद कहलकनि जे उग्रतारादाइकेँ विदा करबाक लेल समधिन कहलनि अछि । कहिया जाय देथिन ?' माय कहलथिन जे- आब तँ दू चारि दिनमे अनगनती मास सुरू भऽ जयतैक । आब तँ जे होयत से मास दिनुक बादे । से जँ बौआकेँ सुहकार होयतनि तँ कनियाँकेँ मङबा लिहऽथिन ।

हय अंगरेजीफूल, तोरा मीसरकेँ हम मायक समाद सुना कऽ कहलियनि जे आबो तँ हमरा अपन गाम जाय दियऽ । एतेक निर्मोही किएक भऽ गेलहुँ अछि ?' ओ गम्भीर भऽ कऽ कहलनि जे- ओहि ठाम जयबो करब तँ मायकेँ छोड़ि और के

देखत? अपन भौजीक व्यवहार तँ बिसरल नहि होयत ? तखन तँ हमर माय आ अहाँक मायमे कोन अन्तर ?' ओ कनेक रुकि कऽ कहलनि– हँ, अहाँक अंगरेजीफूल गामे रहितथि तँ जा सकैत छलहुँ मुदा ओ तँ पटनासँ टसकतीह नहि ।' हम कहलियनि जे तखन दुनू साढ़ूए मीलि कऽ विचारि लियऽ ने ।

हय, तोँ जँ कोनहुना एहि मासमे गाम आबि जाह तँ तोहर मीसर अवस्से विदागरी दिन मानि जयथुन । तोरा पर हुनका बड़ विश्वास छनि । हे हमर अंगरेजीफूल ने ! तोँ हमर ओझाकेँ हमरा दिससँ कहियऽहुन जे हमर अंगरेजीफूल बड़ कौलति कऽ कऽ लिखलक अछि । ओ अवश्य मानि जयथुन आ तोरा गाम आबऽ देथुन ।

हय, हमरा बड़ डऽर होइत अछि । तोँ रहबह तँ हमरा बड़का भरसाहा रहत। तोरा हमरे आङ–समाङक सप्पत, ओझाकेँ अवश्य कहियऽहुन । जँ तैयो नहि मानथुन तँ हुनको हमर सप्पत दऽ दियऽहुन ।

हय अंगरेजीफूल, और की लिखियह ? तोहर उताराक बाट तकैत रहबह । तोँ चिट्ठी तुरन्त लिखिहह । अनठबिहह नहि । तोरा हमरे सप्पत । तोहर– **अंगरेजीफूल**

अंगरेजीफूल हय, **44 (पटनासँ)**

हमरा जे खुसीक समाद भेटल से तोरा जनयबा लेल हम तोरा चिट्ठी लिखैए लय छलियह कि तोहर चिट्ठी भेटि गेल । तोँ नीक जकाँ छह, तोहर सासु आ मीसर सदच्छन तोहर तकमीना करैत रहैत छथुन से जानि छाती सूपसन भऽ गेल । हम सदति चिन्तामे रहैत छलहुँ जे हमर अंगरेजीफूल कोना होयत, कोना नहि । से तोहर चिट्ठी पढ़ि कऽ मन हल्लुक भऽ गेल ।

हय, जगतारनि बला खिस्सा जे लिखलह, से हमहूँ कहबह जे ओकरा बिसरि जाह । जे होइत छैक से लिखलाहा होइत छैक । गाम–घरमे एहिना होइते रहैत छैक। जहाँ चारिटा मौगी एकट्ठा भेल कि लोकक अदखोइ–बदखोइ करऽ लागत । अनकर खिधांस आ कौचर्ज करबालय मुँह–ठोर जेना सबसबाइत रहैत छैक ।

हय अंगरेजीफूल, हमर सधोरिक गप्प पर जे सन्देह कयलह अछि से अनर्गल। तखन ओहि लय तँ ठीके हमर मुँह पनिछाइत रहैत अछि । हमर तँ पहिल बेरक कोनो सऽख–सेहन्ता पूर नहि भेल । छठिहारो तँ अस्पतालेमे भेल । अस्पतालक दाइ आबि कऽ देबालमे सिन्नुर टिपबा देलक आ अपन इनाम–मकराम असूलि लेलक । जँ डेरो पर रहितहुँ तँ के करबितय विध–बाध । बहुआसिनो अपने, बहिकिरनीयो अपने । गाम पर रहितहुँ तँ भरि टोलक स्त्रीगण सब अबितय । सोहर–खेलौना गबितय । काजर सेदल जइतय । सोइरी घरमे कागत, कलम ओ मोसि राखल जैतैक । सब तँ अपूरे रहि गेल । हमरा एहि बातक संतोख होइत अछि जे हमर अंगरेजीफूलक सभ सऽख–सेहन्ता पूर होयतैक । हम जँ अपना आँखिसँ देखब तँ हमरो आँखि जुड़ायत।

हम बूझब जे हमर अंगरेजीफूलक विध-बाध भऽ रहल छैक तँ हमरे भऽ रहल अछि, आकि नहि ?

हय, हम तँ किदन-किदन लिखऽ लगलियह । असलका बात तँ लिखबे ने कयलियह जे पहिनहि लिखबाक चाही । अंगरेजीफूल हय, ओहि दिन साँझमे तोहर ओझा बड़े हुलसल अयलथुन । हाथमे एक पतौड़ा मधूर छलनि । ओ हमरा अपना लगमे बजा कऽ एकटा लड्डू बलजोरी मुँहमे धऽ देलनि । हम अकचकाइत पुछलियनि जे आइ एते दिन पर कथीक एतेक हुलास भेल अछि ?' ओ हँसैत कहलनि जे आइ दरमाहाक संगहि बोनस आ एरियरक बहुत रास टाका भेटल । आब हम सब नीक जकाँ गाम जा सकब । खाली छुट्टी भेटि जाय । हम तँ आफिससँ आइ धरि कहियो छुट्टी नहि मङलिऐक अछि । मास दू मासक छुट्टी तँ अवश्ये भेटि जायत। तावत अहाँ सब वस्तु-जात सरिया लियऽ । होयत तँ बौआक सोझे बरखे मूड़नो कराइये देबैक । मायोक बड़ इच्छा छैक ।' हुनकर ई कहब सूनि कऽ हमरा तखन कतेक खुसी भेल से कहि नहि सकैत छियह । अपन गाम- घर, लोक-वेदकेँ आब फेर भरि आँखि देखब, ई कनीटा बात भेलैक ?

तोहर ओझा अपन छुट्टीक मंजूरीमे लागल छथुन आ हम गाम लऽ जयबा लेल कपड़ा-लत्ता, वस्तु-जात सैंतऽ-सम्हारऽमे लागलि छी । ककरा लय की सब सनेस लेबैक से एखन निजगुत नहि भऽ सकल अछि । ओहि लय बजार जाय पड़त। से एक दिनमे होयतैक नहि । तोँही कहह जे एक दिनमे सब किछु कीनल-बेसाहल होयतैक ? हय अंगरेजीफूल, हम एक दिन तोरा ओझाकेँ पुछलियनि जे गाम तँ जायब मुदा पहिने ककरा गाम ? हमरा गाम कि अहाँ अपना गाम ?

तोहर ओझा की कहलथुन से बुझबह ? ओ सोखमे जकाँ बजलाह-अपने गाम ने जायब ?' हम कहितियनि जे-- नहि, पहिने हमरे गाम चलू' तँ एहि पर बेस महजरो होइतय । एहिमे रूसो-फुल्ली भऽ जाइत । तेँ हम चुपेचाप घर गेलहुँ आ तोहरबला चिट्ठी हुनका हाथमे धरा देलियनि-ई देखियौक अंगरेजीफूलक चिट्ठी ।' ओ बजलाह जे अहाँ तँ जनैत छी जे हम अनकर चिट्ठी नहि पढ़ैत छी ।' हम कहलियनि-कोनो सप्पत तँ नहियेँ खयने छी । हम कहैत छी जे पढ़ियौक ।

ओ चिट्ठी पढऽ लगलाह । हम हुनकर मुँहक भाव देखैत रहलियनि । गम्भीर भऽ कऽ कहलनि-अहाँक अंगरेजीफूलक चिट्ठी पढ़ि कऽ तँ होइत अछि जे पहिने अहींक गाम चलबाक चाही । एहन बेरमे जँ संग-साथ नहि दियनि तँ बहिनपा कथीक। अहाँक बेरमे साढ़ू डेरासँ अस्पताल धरि कतेक खटल रहथि से मोन अछि? ओ जँ नहि रहितथि तँ हमरा एकसर सम्हारल पार लगितय ?

हय अंगरेजीफूल, हमरा तँ खुसीसँ मन ऊमडाम भऽ गेल । यैह खुसीक गप्प

लिखबा लेल मन उताहुल भऽ रहल छल आ भऽ रहल अछि। ई हम कोना कऽ लिखियह से ओरिया नहि रहल अछि।

हय, तोहर ओझा गाम जयबाक संबंधमे विचार करैत छलथुन जे संगमे ओतेक मोटा-चोटा रहत, बच्चा रहत। जहाजसँ जायब तँ महेन्द्रूघाटमे ओतेक सिरही उतरऽ पड़त। फेर पहलेजाघाटमे जहाजसँ उतरलापर चढ़ाइ चढ़ि कऽ ट्रेनमे चढऽ पड़त। दरिभंगाबला गाड़ी पंकड़बाक लेल जहाजो तँ खुजैत छैक आठ बजे रातियेमे। बड़ फेदरति भऽ जायत। तेँ नीक होयत जे बड़ीए रेलसँ जाइ। मोकामामे गंगापर पुल बनि गेलैक आ आब रेलगाड़ी खूब चलैत छैक। भिनसरमे पटनामे चढ़ब आ सोझे बरौनी उतरि जायब आ ओहि ठामसँ दरिभंगाबला गाड़ी पकड़ि कऽ बेरुक पहर धरि दरिभंगा उतरि जायब। ओहि ठामसँ जेना जे होयतैक, कोनो सवारी कऽ कऽ अहाँक गाम रातियो धरि पहुँचिये जायब।

हम हँसी करैत कहलयिनि-वैह मोकामा यौ! जकरा दऽ कहैत छैक ऊपरसँ फीट-फाट, नीचाँसँ मोकामाघाट ?' ओ बजलाह-आब से मोकामाघाट नहि रहलैक। आब सोझे मोकामाक फीट-फाट छैक।

हय अंगरेजीफूल, तोहर ओझा एहिना नेयार-भास कऽ रहल छथुन। हमरा आब पूरा मन मानि गेल अछि जे गाम जयबे करब। हुनको आब गामक सुरता आबि गेलनि अछि। गाम जयबाक उचाट तेहन भऽ गेलनि अछि जे हमरासँ बेसी वैह अगुतायल बूझि पड़ैत छथि। कहैत छथिन जे जाहीं दिनसँ छुट्टी मंजूर भऽ जायत, ताही दिन चोट्टहि चलि देब।

अंगरेजीफूल हय, अनगनती मास छह तेँ संजमसँ आ सम्हरि कऽ रहिहह। तोहर सासु जेना-जेना कहथुन तहिना-तहिना करिहह। कोनो भारी वस्तु नहि उठबिहह। कुजोखीमे ले-ऊँच पर पैर नहि पड़ि जाह से ध्यान रखिहह। तोँ ने डेरैहह, ने घबड़ैहह। भगवती सब निकेँना पार लगा देथुन।

हय, हम गाम आबि जायब आ तोँहूँ आबि जयबह तँ दुनू बहिनी संगहि रहब। आ ओ बेर औतैक तँ हम सब सम्हारि लेब। हय, एकटा सन्तान भेने हमरो तँ किछु अनुभव भैए गेल अछि जे परसौतीक की दशा होइत छैक आ ओकरा कोना सम्हारल जाइत छै। तोँ कनेको चिन्ता-फिकिर नहि करिहह। हम सब सम्हार कऽ देबह आ बूढ़-सूढ़मे काकी तँ रहबे करथुन।

हय अंगरेजीफूल, तोहर परसौतीक दुख तँ नहि बँटबह, ओ तँ अपनहि सहऽ पड़तह। मुदा तकरा छोड़ि सधोरिसँ सुठौरा धरि सबमे हिस्सा बाँटि लेबह। बाजह, से सुहकार छह किने ? तोँ हमरा चिट्ठीक उतारा तुरन्त दिहह। तुरन्त उतारा देने हमरा गाम जाइसँ पहिने अवस्से भेटि जायत। तोरा हमरे सप्पत। हमर मन तोरे पर लटकल रहत। तोहर-**अंगरेजीफूल**

हय अंगरेजीफूल,

एतेक जल्दी तोँ हमर चिट्ठीक उतारा दऽ देबह से भरोस नहि छल । तोहर चिट्ठी पबैत देरी आदिसँ अन्त धरि हबर-हबर पढ़ि गेलहुँ । ई चिट्ठी पढ़ि कऽ मन ओहिना हरियर भऽ गेल, जेना बैसाख-जेठक मुरुझल गाछमे अरदाराक पानि पड़लासँ हरियरी आबि जाइत छैक । भेल जेना हमरा अमरितक घैले भेटि गेल । हय, होइत अछि कतेक जल्दी तोँ गाम अयबह आ हमहुँ जा सकब । दुनू गऽरमे गऽर मीलि कऽ खूब कानब । दुनू बहिनी कतहु निरन्तर एकातमे बैसि कऽ खूब गप्प करब, खूब बतियायब । भरि पोख, भरि छाक । हम अपन मनक भीजल बात कहबह आ तोँ अपन मनक भीजल बात कहबह । हमरा तँ होइत अछि जे तोँ जे काल्हि अयबह से आइए आबि जाह । आइ अयबह से ऐखन आबि जाह ।

हय अंगरेजीफूल, हमर ओझाकेँ हमरा पर एतेक सिनेह छनि, हमरा लय एतेक मात्सर्य छनि, से जानि कऽ हमर मन तँ अलदल कऽ रहल अछि । हमरे दुआरेँ तोरा सासुर नहि लऽ जा कऽ अपने सभक गाम आबऽ देथुन, से कतटा पैघ बात भेलैक, से हमही बुझैत छी । हम भरि जनम ई बात बिसरबनि नहि । जिनगी भरि गून मानबनि ।

हय, तोहर चिट्ठी पढ़ि कऽ हमर सब डर बिला गेल । तोहर गाम अयबाक समाद सूनि कऽ तोहर मीसर हमरा अपन गाम जरूर जाय देताह । माय तँ अपन सुहकार दैये देने छथिन । कलेँ-कुसलेँ पहिने तोँ गाम तँ आबि जाह ।

अँय हय, तोँ तँ एहि खेप लगा कऽ तेसर बेर रेलगाड़ीपर चढ़बह ? पहिल बेर गंगाकात सिमरियाघाट जाइ लय चढ़लि छलीह । दोसर खेप पटना जाइक बेरमे रेल आ जहाज दुनू पर चढ़लि छलीह । आब तेसर खेप गाम अयबाक बाटमे बड़की रेलगाड़ी पर चढ़बह । एही संग गंगापर बनल पूलकेँ सेहो अपन आँखिएँ देखबह । हमरा तँ से सेहन्ता लगले रहत । हम तँ रेलगाड़ी पर एके बेर चढ़लि छी, तोरे संग गंगा-स्नान लय सिमरियाघाट जाइ कालमे ।

हय अंगरेजीफूल, मन छह ने ? बच्चेमे दुनू गोटे गंगाकात गेल रही ? कतिकी पूर्णिमामे अपना टोलक लोक सब-बाबी, काकी, दीदी और कतोक गोटे ने गंगाकात जयबा लेल नेयार कयने रहथि । सभक विचार रहनि जे चमथाघाट जाइ । चमथा तँ लोक पहिने पैदले ने जाइत छलैक । हम तोँ दुनू गोटे आपठ खसा देने रहिऐक जे हमहूँ सब जायब । लोक सब हमरा सबकेँ कतेक परबोधने रहथि जे पैदल ओतेक दूर नहि चलि होयतह, नहि जाह । आ हम दुनू बहिनी जिद्द धऽ लेलहुँ जे-जे किछु भऽ जाइक, हम सब अवस्से जायब ।' भरि टोलक लोक बुझबैत-बुझबैत तीनसँ तिरपट्ट भऽ गेल तैयो हम सभ नहिएँ मानलियनि । हय, ताही पर ने बेचनबाबा कहने रहथिन जे दुनू छौंड़ीकेँ एतेक लौलि छैक तँ लेने जैयौक । चमथाघाट पैदल नहि जा

कऽ रेलगाड़ीसँ सिमरियेघाट चल जाइत जाउ । चमथोघाटमे गंगे छथिन आ सिमरियोमे गंगे छथिन । गंगा कोनो दूटा छथिन ? जेहने चमथा तेहने सिमरिया ।

हय, चमथा तँ सब एहि दुआरेँ जाय चाहैत छल जे पैदले गेला पर टाका नहि खर्च होइतैक मुदा सिमरियाघाट जाइमे रेलक मासुल लगितैक । ओ तँ बेचनबाबाक ओतेक हुथकारलाक बादे सब गोटे सिमरिया जाइलय तैयार भेलैक आ हम दुनू बहिनी जिनगीमे पहिल बेर रेलपर चढ़लहुँ ।

हय, तोरा मोन होयतह जे बरौनीमे हम सब रेलगाड़ी बदली कऽ कऽ सिमरिया घाटक घटही रेलगाड़ीमे बैसल रही । सिमरियाघाटमे रेलगाड़ीसँ उतरलापर बाबी एकटा फकड़ा कहने रहथिन-सिमरियाक कमाइ सिमरिए गमाइ । ओही बेर गंगामे पनियाँ जहाज अगिनबोट देखने रहिऐक । घोड़न जकाँ लोक सब जहाज पर लुधकी लागल रहैक । बड़काटा मोटका बम्मासँ धुआँ बहराइत रहैक । एके बेर बड़ी जोरसँ भोम्हा बजलैक आ जहाज धारमे ससरऽ लगलैक । बीच गंगामे जहाज चल गेलैक तखन केहन डेङी नाओ जकाँ देखऽमे लगैक ! पाल तनने बड़का बड़का घरैया आ फरस नाओ सहसह करैत देखने रहिऐक । गंगाक किनारमे ठाढ़ रहिऐक तँ बाबी कहने रहथिन– हे गंगामाता ! अपन सनेस देखा दियऽ ।' तकरा बाद जलमे कारी-कारी चेखान जकाँ उनटैत देखने रहिऐक । लोक सब कहैक जे ई बोच-सोंसि उनटैत छैक । हम सब हँसल रही जे यैह भेलनि गंगाक सनेस ! ताहि पर बाबी कतेक डटने रहथि-गंगामातासँ लोक हँसी करैत छनि !

हय, हम सब स्नान करबालय गंगा दिस बढ़ल रही तँ बाबी कहने रहथि-गय अलगी छौंड़ी सब ! घाटसँ एमहर-ओमहर नहि जैंहें । पाँकमे कुजोखीमे पैर चल जयतौक तँ डूबि जयबेँ ।' एहि पर तोँ कहने रहुन जे– की हेतइ बाबी ? गंगेलाभ भऽ जेतइ ने !' बाबी ई बात सूनि कऽ अनठा देने रहथिन आ अपन बात कहैत रहलथिन-गंगामे हड़हड़ा कऽ पैसि नहि जाइ । किनारमे बैसि गंगाकेँ दू हाथ जाँति दियनि । चुड़ूमे गंगाजल लऽ कऽ माथ पर छीटि ली तखन जलमे पैर दी । गंगा तँ माता छथिन, हुनका लात नहि मारी ।' हम तोरा कानमे फुसफुसा कऽ कहने रहियह जे– लातकेँ माथ पर राखि ली !

हय अंगरेजीफूल, हमरा तँ मोने अछि । तोँहू बिसरलि नहि होयबह । ओही बेर गंगाकातमे हमरा लोकनि अंगरेजीफूल नाम धरा कऽ बहिनपा जोड़ने रही । दुनू गोटेकेँ अंगरेजीफूल लागल रहय । भरि छाती जलमे पैसि कऽ दुनू गोटे गहुआ लगा कऽ अंगरेजीफूल लगौने रही । हम- तोँ दुनू गोटे सत्त कयने रही- एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त, हे गंगामाता ! अहाँ साक्षी रहब । हम दुनू गोटे अंगरेजीफूल बहिनपा लगबैत छी-सातो जनम दुनू गोटेक अंगरेजीफूल नहि छुटय, नहि छुटय, नहि छुटय। से गंगामाता एखनो धरि हमरा दुहू गोटेक अंगरेजीफूल जोड़ने छथि । हय, हमरा तँ

एक मन होइत अछि जे बरु तेसरहि अपन बच्चाक मूड़न गंगाकातेमे करबितह आ हमहूँ.... । हय, कहबी छैक जे नदी–नदीकेँ भेट, बहिन–बहिनकेँ भेट नहि, से ओही गंगामाताक महिमा छनि जे हमरा दुहू गोटेकेँ फेर भेट होयत । हम सब फेर गंगा–कमला जकाँ मिलब । हिया जुड़ायब । बुझैत छिऐक जे निफिकिर भऽ कऽ खेलाइ–धुपाइवला बीतल दिन पलटि कऽ नहि अबैत छैक । तखन जतबे सुजोग भेटि सकत से कहाँक थोड़ ?

हय अंगरेजीफूल, हम तोहर मीसरकेँ तोहर अबैया दऽ कहलियनि तँ ओ बड़ खुसी भेलथुन । ओ बजलाह जे जेना–तेना पटनासँ दरिभंगा आबि जायब तँ सोझ छैक मुदा दरिभंगासँ गाम पहुँचब बड़ दुर्घट । कहिया अहाँक अंगरेजीफूल औतीह, से बूझल भऽ जाइत तँ हमही चल जैतियनि दरिभंगासँ अरियाति अनबाक लेल ।

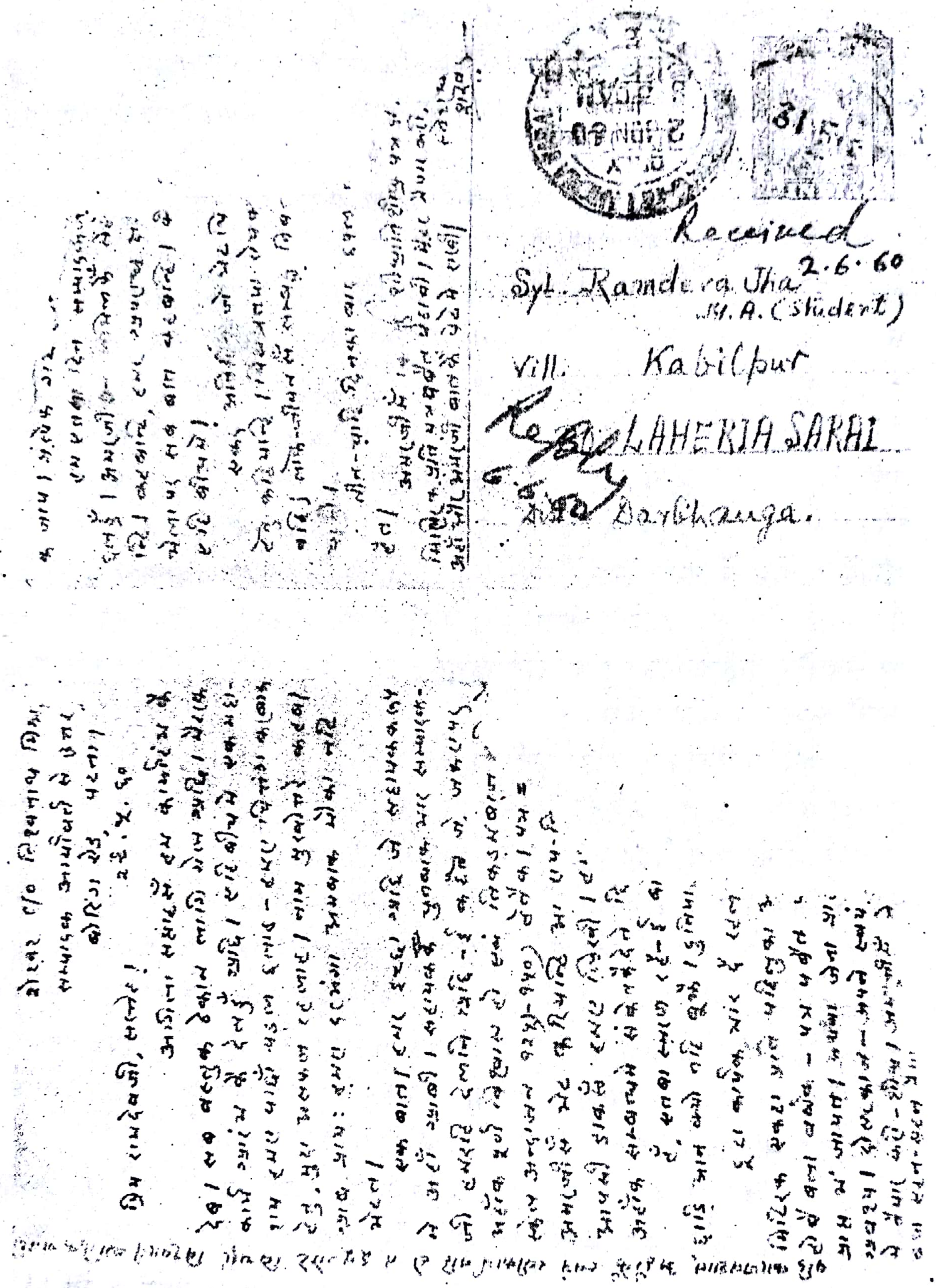
हय, तोँ जहिया अयबह, से ओझाकेँ कहियऽहुन जे पहिनहि तोरा मीसरकेँ तार दऽ देथुन । तोहर अयबाक दिन तोरा मीसरकेँ बूझल रहतनि तँ ओ एक दिन पहिनहि दरिभंगा पहुँचि जयथुन । कौलेजमे पढ़बाक समयमे ओ बहुत दिन धरि दरिभंगामे रहल छलथुन, तेँ हुनका दरिभंगा बूझल–गमल छनि । हम हुनका कहि देलियनि अछि जे हमरा अंगरेजीफूल लय टमटम कि बैलगाड़ीक बदलामे भऽ सकय तँ सम्पनी ठीक कऽ देबैक । कोरमे छोट बच्चा रहतैक ने । तोहर मीसर हड़ाही टीसन पर सवारीक इन्तजाम कऽ कऽ रखने रहथुन । तोरा, हमर ओझा आ हमरा बहिनौतकेँ कोनो कष्ट नहि होमऽ देथुन ।

हय अंगरेजीफूल, तोहर अबैयाक तार नहि भेटत तँ हम कोना बुझबैक जे तोँ कहिया गाम अयलह । अयलह कि नहि अयलह । तखन तोँ अबिते गेनमा दिया हमरा चोट्टहि समाद पठा दिहह । हम अपन वस्तुजात सब सैंति–सम्हारि कऽ रखने रहब । हय, तोँ गाम अयला पर सीरामे गोड़ लागि कऽ तुरन्त हमरा आङन चल जैहह, देरी नहि करिहह । हमरा मायकेँ बुझा कऽ कहिहक जे ककरो विदागरी करयबाक लेल पठा देति । हय, ओना तँ मीसरो अपनेसँ हमरा अपना गाम पहुँचा आबि सकैत छथि । मुदा एहि ठामक लोक की कहतैक जे क्यो लेआओनो कराबऽ नहि अयलैक तैयो अपनहिसँ कनियाँकेँ नैहर कऽ दऽ अयलैक । ई बात हमरा कोना नीक लागत जे हमरा लागि कऽ लोक तोरा मीसरक कौचर्ज करनि ? तोँही कहह जे ई नीक होयतैक ?

हय, हम आतुर भऽ कऽ तोहर अयबाक बाट तकैत रहबह । तोँ धरि जे सब लिखलियह अछि से सब बिसरिहह नहि । तार अवस्से दिहह । तोरा हमरे सप्पत ।

तोहर- **अंगरेजीफूल**

★


Received 2.6.60
Syt. Ramdeva Jha
M.A. (Student)
Vill. Kabilpur
P.O. LAHERIA SARAI
Darbhanga.

29 मइ 1960इ०कें सुधांशुशेखरचौधरी द्वारा लिखित एकगोट पत्रक प्रतिच्छवि ।



श्रीरामदेवझा

समेकित परिचिति : 'लेखक छठम दशकसँ तँ साहित्य-मञ्च पर अवतीर्ण भेल छथि परञ्च उत्तीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे। जेना ई अनवरत साधना करैत रहला, स्कूल-वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि भेला, कॉलेज-क्लासमे कखनहु दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक-जीवनमे कहिओ अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दूनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा-कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला- ताहि सबसँ बहुत पूर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली क्षेत्रमे एक चमत्कारे सिद्ध छथि। रुचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध-अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि।'

('धरतीमाता'क भूमिकासँ)
- आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'

श्रीरामदेवझाक प्रकाशित कृति

प्रथम प्रकाशित कथा :

'मुदा आब की ?' (मिथिला मिहिर, दरभंगा, जुलाइ 1953)।

कथाकृति :

एक खीरा : तीन फाँक 1965 / मनुक सन्तान 1966 / इजोतीरानी 1967 / धरती माता 1985 / अंगरेजीफूलक चिट्ठी 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1960-61) / बहिनाक विरोग 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1961-62)/ रामजोड़ी कागतक पाँखिपर 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1963)।

नाट्यकृति :

पसिझैत पाथर 1989 (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1991, प्राप्त)।

अनुसन्धान-आलोचना :

शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन 1959 / पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन 1960 / मैथिली शैव साहित्य 1979 / उमापति 1980/ मैथिली शैव साहित्यक भूमिका 1982 / जगत्प्रकाशमल्ल 1990 / जगज्ज्योतिर्म्मल्ल 1995 / जनार्दनझा जनसीदन 1998 / मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य 2002।

अनुवाद :

पृथ्वी परिचय (भाग चारि) 1988 / जीव विज्ञान (प्रथम भाग) 1988/ वाणभट्ट (अंग्रेजी मोनोग्राफ) 1989 / सगाइ 1992 (उर्दूक 'इक चादर मैली सी', साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 1994, प्राप्त)।

सम्पादन :

नन्दीपति : गीतिमाला 1965 / रामविजय नाट ओ वरगीत 1967/ हरगौरी विवाह नाटक 1970 / नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत 1972 / कुञ्जविहार नाटक 1976/ मैथिली भाषासरिता (भाग चारि) 1984 / दशावतार नृत्यम् ओ षोडश गीतम् 1988 / मैथिली प्राचीन गीतमञ्जरी 1991 / दुर्गाचरित नाटक 1996 / रमेश्वरचरित मिथिला रामायण 1999।

पत्र-पत्रिका सम्पादन :

वैदेही (मासिक) 1964 सँ 67 धरि / संकल्प (अंक 1 सँ 5 धरि)।

सम-सम्पादन :

मैथिली प्राचीन गीतावली 1977 / कविवर जीवनझा रचनावली 1980/ विद्यापति गीतसंचय 1999।